दैनिक
जयपुर टाइम्स
नई सोच नई रफ्तार
जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष : 10 अंक : 137 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, सोमवार 09 जून, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

सरकार ने भेजा मसौदा, मांगी माने तो बैंसला ने समाप्त कर दी महापंचायत

आरक्षण की फिर सुलगी आग : गुर्जरों ने राजस्थान में रोकी ट्रेन

दो घंटे ट्रेक रहा जाम, समझाइश पर माने युवा

जयपुर टाइम्स

जयपुर/भरतपुर(निसं.)। राजस्थान में आरक्षण की विसंगतियों को लेकर भरतपुर जिले के पीलूपुरा में रेलवे ट्रेक जाम कर दिया। करीब दो घंटे ट्रेक जाम रहा और आंदोलनकारियों के कब्जे में रहा। इस दौरान कोटा मथुरा पैसेंजर ट्रेन ट्रेक पर ही खड़ी रहीं। इससे यात्रियों को भी परेशानी का सामना करना पड़ा। भरतपुर के पीलूपुरा में गुर्जर महापंचायत के बाद नाराज युवाओं ने कोटा-मथुरा पैसेंजर ट्रेन को पटरियों पर रोककर हंगामा किया। रविवार को बयाना के कारवारी शहीद स्मारक में आयोजित महापंचायत में आरक्षण समेत कई मांगों पर सरकार का मसौदा गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष विजय बैंसला ने पढ़ा, जिसके बाद समाज की सहमति से महापंचायत समाप्त हुई। बता दें कि महापंचायत में करीब 30 हजार से अधिक लोगों की भीड़ जुटी। हालांकि, सरकार के फैसले से नाखुश युवाओं ने ट्रेन रोक दी, जबकि गुर्जर समाज के पंच-पटेल उन्हें समझाने की कोशिश की। पुलिस प्रशासन भी मौके पर पहुंचा और युवाओं को समझाइश कर ट्रैक खाली कराया। भरतपुर के पीलूपुरा में रविवार को शहीद स्मारक कारवारी में

आयोजित गुर्जर महापंचायत में सरकार के 7 सूत्रीय ड्राफ्ट पर सहमति के बाद गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष विजय बैंसला ने आंदोलन स्थगित कर महापंचायत समाप्त करने की घोषणा की, जिसमें सरकार 5% आरक्षण का प्रस्ताव केंद्र को भेजेगी। हालांकि, इस फैसले से नाराज युवाओं ने रेलवे ट्रैक पर उतरकर कोटा-मथुरा पैसेंजर ट्रेन रोक दी और नारेबाजी कर विरोध प्रदर्शन किया। युवा सरकार के फैसले से असंतुष्ट दिखे। गुर्जर समाज ने एक बार फिर आरक्षण आंदोलन का आगाज कर दिया है। गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष विजय बैंसला ने कहा कि पूर्व में सरकार के साथ हुए समझौते की पालना अभी तक नहीं की गई है। प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद से वे लगातार सरकार के मंत्रियों और एसीएस स्तर के अफसरों से मिलते रहे और चिट्ठी भी लिखते रहे लेकिन सरकार और प्रशासन का कोई सकारात्मक जवाब नहीं आया। इसी वजह से संघर्ष समिति ने महापंचायत बुलाकर आंदोलन का ऐलान किया।

समझौते के बावजूद नहीं निकाला समाधान

संघर्ष समिति के अध्यक्ष विजय बैंसला ने कहा कि दौसा के सिकंदरा में पिछले करीब तीन महीने से समाज के लोगों का धरना चल रहा है। सरकार के किसी भी नुमाइंदे ने गुर्जर समाज की समस्याओं का हल निकालने का प्रयास नहीं किया। एमबीएस आरक्षण के हिसाब से युवाओं को नौकरियां नहीं दी जा रही है। रीट 2018 के 372 पदों और रीट 2021 के 233 रिजर्व पदों पर अभी तक एमबीएस के नियमानुसार आरक्षण देकर नियुक्तियां नहीं दी गई। आरक्षण आंदोलन के दौरान दर्ज हुए मुकदमों को वापस लेने का समझौता हुआ लेकिन अभी तक मुकदमे वापस नहीं लिए गए। सरकार मूकदर्शक बनी हुई है और गुर्जर समाज की अग्नि परीक्षा लेने पर तुली है तो समाज भी पीछे नहीं हटेगा। बैंसला ने कहा कि हमारी एक ही मांग है कि जो समझौता पूर्व में हुआ है, उसकी पालना हो।

राजस्थान में दो दिन हीटवेव का अलर्टः 11 जिलों में लू चलेगी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान में फिर से गर्मी तेज होने लगी है। मौसम विभाग ने अगले दो दिन (सोमवार और मंगलवार को) श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ में हीटवेव का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इसके साथ ही 9 जून को 9 जिलों में हीटवेव का येलो अलर्ट जारी किया गया है। तापमान में 1 से 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ोतरी हो सकती है। 10 जून तक कुछ शहरों में तापमान 46 डिग्री सेल्सियस या उससे भी ऊपर दर्ज हो सकता है। वहीं, जैसलमेर और बीकानेर में शनिवार को अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार चला गया। बारां, डूंगरपुर, सिरोही और प्रतापगढ़ को छोड़कर सभी शहरों में अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या उससे ऊपर दर्ज हुआ। अजमेर में गर्मी के कारण सड़कों पर सन्नाटा रहा। पिछले 24 घंटे का मौसम देखें तो राज्य में आसमान साफ रहा। तेज धूप के साथ गर्मी रही। श्रीगंगानगर, बीकानेर, फलोदी, जैसलमेर, चूरू, बाड़मेर समेत पश्चिमी राजस्थान के जिलों में जबरदस्त गर्मी रही। शनिवार को सबसे ज्यादा तापमान जैसलमेर में 45.3 और बीकानेर में 45.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। बीकानेर, श्रीगंगानगर में दिन में सतही स्तर पर धूलभरी गर्म हवा चली। बाड़मेर में अधिकतम तापमान 44.6, श्रीगंगानगर में 44.6, फलोदी में 44.2, चूरू में 43.6 और जोधपुर में 42.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।
जयपुर में अधिकतम तापमान बढ़कर 41.8 डिग्री सेल्सियस पर दर्ज हुआ। जयपुर में दिन में लू चली। भीलवाड़ा में अधिकतम तापमान 42.4, पिलानी में 42.2, चित्तौड़गढ़ में 43.3, उदयपुर में 40.3, अलवर में 41, नागौर में 41.6, दौसा में 42.2, पाली में 41.9 और अजमेर में 40.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।
कोटा संभाग में दिनभर तेज गर्मी रही। कोटा में अधिकतम तापमान 44 और बारां में 39.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। शाम को बारां और झालावाड़ में मौसम में बदलाव हुआ। आसमान में बादल छाने के साथ कुछ जगह धूलभरी हवा चली। कोटा के ग्रामीण इलाकों में भी मौसम में बदलाव देखा गया।

मुख्यमंत्री ने सपत्नीक गोविन्द देव जी मंदिर में दर्शन किए

जयपुर टाइम्स

***जयपुर(कासं.)।** मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार सुबह सपत्नीक गोविन्द देव जी मंदिर में मंगला आरती के दर्शन किए। उन्होंने निर्जला एकादशी के बाद विधिवत् पूजा-अर्चना की और प्रदेश की सुख-समृद्धि व खुशहाली की कामना की। शर्मा ने मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का अभिवादन भी किया। इस अवसर पर मंदिर के महंत ने मुख्यमंत्री को गोविन्द देव जी का चित्र व प्रसाद भेंट किया।*

अगले साल तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव में एनडीए बनाएगी सरकार : अमित शाह

जयपुर टाइम्स

मदुरै(एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को मदुरै में कहा कि अगले साल तमिलनाडु के विधानसभा चुनाव में जनता द्रमुक को हराएगी। उन्होंने कहा कि साल 2026 के विधानसभा चुनाव में भाजपा और अन्नाद्रमुक मिलकर एनडीए सरकार बनाएंगे। शाह ने यह भी कहा कि पश्चिम बंगाल में एनडीए की सरकार बनेगी। उन्होंने यह भी कहा कि यह सम्मेलन द्रमुक सरकार को सत्ता से हटाने और बदलाव की शुरुआत का संकेत है। अमित शाह ने कहा कि तमिलनाडु की जनता अब बदलाव चाहती है और भाजपा कार्यकर्ता इसके लिए पूरी तरह तैयार हैं। अमित शाह ने कहा, यहां 2026 में बीजेपी-एआईएडीएमके गठबंधन की एनडीए सरकार बनेगी। एम.के. स्टालिन कहते हैं कि अमित शाह द्रमुक को हरा नहीं सकते। वह सही कह रहे हैं, मैं नहीं, बल्कि तमिलनाडु की जनता आपको हराएगी। शाह ने आगामी तमिलनाडु विधानसभा चुनावों की तैयारी की समीक्षा भी की और राज्य के नेताओं के साथ रणनीति पर चर्चा की। शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा, तमिलनाडु की जनता द्रमुक सरकार के भ्रष्टाचार से तंग आ चुकी है। भाजपा के कार्यकर्ता हर गली, मोहल्ले और घर तक पहुंचेंगे और (प्रधानमंत्री नरेंद्र) मोदी के नेतृत्व वाले एनडीए का विकसित और समृद्ध तमिलनाडु का दृष्टिकोण लोगों तक पहुंचाएंगे। शाह ने कहा कि भाजपा सरकार ने पिछले 10 साल में तमिलनाडु को 6.80 लाख करोड़ रुपये दिए हैं। फिर भी मुख्यमंत्री स्टालिन पूछते हैं कि केंद्र ने राज्य के लिए क्या किया है। उन्होंने मुख्यमंत्री स्टालिन को चुनौती दी कि वह बताएं

क्या उन्होंने 2021 के चुनाव में द्रमुक की ओर से किए गए सभी वादों को पूरा किया है। अमित शाह ने आरोप लगाया कि तमिलनाडु में शराब बिक्री घोटाले के बराबर पैसे से हर स्कूल में कम से कम दो कक्षाएं बनाई जा सकती थीं। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा, मैं तमिलनाडु सरकार से एक बार फिर अपील करता हूं कि मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई जल्द ही तमिल भाषा में शुरू की जाए। प्रधानमंत्री मोदी ने संसद में सेंगोल स्थापित कर तमिलनाडु का सम्मान किया है, और मैं उम्मीद करता हूं कि मुख्यमंत्री स्टालिन उन्हें इसके लिए धन्यवाद देने के लिए पत्र लिखेंगे। गृह मंत्री शाह ने दिन की शुरुआत प्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर के दर्शन से की, जहां उन्होंने पूजा की और मंदिर के पुजारियों ने उन्हें पारंपरिक तरीके से स्वागत किया। भाजपा कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए शाह ने तमिल भाषा में न बोल पाने पर खेद जताया। उन्होंने कहा, मैं तमिलनाडु के पार्टी कार्यकर्ताओं से माफी चाहता हूं क्योंकि मैं भारत की सबसे महान भाषाओं में से एक तमिल में बात नहीं कर सकता। अप्रैल में तमिलनाडु दौरे के दौरान शाह ने अन्नाद्रमुक के साथ फिर से गठबंधन की घोषणा की थी। अपने संबोधन में भाजपा के राज्य अध्यक्ष नैनार नागेंद्रन ने द्रमुक सरकार पर कानून-व्यवस्था को लेकर निशाना साधा। उन्होंने पश्चिमी कोगु क्षेत्र के गांवों में बुजुर्गों की लक्षित हत्या को लेकर पुलिस की भूमिका पर सवाल उठाए। उन्होंने कार्यकर्ताओं से पूरी लगन के साथ काम करने की अपील की। नागेंद्रन ने कहा कि उनका लक्ष्य होगा कि विधानसभा में ज्यादा से ज्यादा विधायक पहुंचें। उन्होंने अमित शाह की तुलना भारत के 'लौह पुरुष' सरदार वल्लभभाई पटेल से की और उन्हें 'भारत का नया लौह पुरुष' करार दिया। भाजपा नेता के. अन्नामलाई ने कहा कि पार्टी का एकमात्र लक्ष्य तमिलनाडु से द्रमुक को सत्ता से हटाना है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से इस 'संकल्प' के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया।

मणिपुर में मैतेई नेता की गिरफ्तारी से बवाल, 10 दिन के बंद का ऐलान

जयपुर टाइम्स

इंफाल। प्रदर्शनकारियों ने इंफाल पश्चिम जिले के उरिपोक और कोइरेंगई और इम्फाल पूर्व जिले के खुराई में सड़कों पर जलते टायरों को फेंककर निषेधाज्ञा का उल्लंघन किया। कोइरेंगई में प्रदर्शनकारियों ने सड़क खोदकर उस पर मिट्टी के ढेर लगा दिए, ताकि सुरक्षा बलों की आवाजाही को रोका जा सके। इसी तरह के विरोध प्रदर्शन असम के पड़ोसी जिले जिरिबाम में भी हुए।
इम्फाल पश्चिम, इम्फाल पूर्व, थौबाल, बिष्णुपुर और काकचिंग जिलों में निषेधाज्ञा लागू की गई है, जबकि इन घाटी क्षेत्रों में शनिवार रात से इंटरनेट और मोबाइल डाटा सेवाएं, जिसमें वीएसएटी और वीपीएन सुविधाएं भी शामिल हैं, निलंबित कर दी गई हैं। ये कदम मेतेई संगठन अरमबाई टेंगोल के नेताओं की गिरफ्तारी के खिलाफ हिंसक प्रदर्शनों के बाद उठाए गए हैं।
मणिपुर के राज्यपाल अजय कुमार भल्ला ने रविवार को राज्य में हो रहे प्रदर्शनों के बीच वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सुरक्षा समीक्षा बैठक की। राजभवन के एक बयान में कहा गया कि राज्यपाल से विधायकों का एक प्रतिनिधिमंडल भी मिला, जिन्होंने राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति के बारे में राज्यपाल को जानकारी दी और शांति स्थापित करने के लिए उनसे दखल देने की अपील की। राजभवन के बयान में कहा कि मणिपुर के राज्यपाल अजय कुमार भल्ला से विधायकों का एक प्रतिनिधिमंडल राजभवन में मिला, जिसमें विधायकों ने राज्य में मौजूदा कानून और व्यवस्था की स्थिति के बारे में जानकारी दी और शांति बहाली के लिए हस्तक्षेप करने की अपील की।

खाद्य सुरक्षा योजना के तहत 1 लाख 81 हजार 485 नए पात्र लाभार्थियों को मिला हक

जयपुर जिला कलेक्टर के प्रयास लाए रंग: गिव अप में जयपुर जिला राजस्थान में अव्वल

सर्वाधिक 1 लाख 88 हजार 255 अपात्र लाभार्थियों ने किया गिव अप

अपात्रों पर जिला प्रशासन की सख्ती, 986 को स्वेच्छा से 'गिव अप' के लिए किया प्रेरित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों की अनुपालना में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना के अंतर्गत लाभ प्राप्त करने वाले अपात्र व्यक्ति को स्वेच्छा से नाम हटवाने के लिए प्रेरित करने के लिए जयपुर जिले में 'गिव अप' अभियान का सफल संचालन किया जा रहा है। योजना के तहत जयपुर जिले में सर्वाधिक 1

लाख 88 हजार 255 अपात्र व्यक्तियों ने गिव अप किया है। वहीं, जयपुर जिले में 1 लाख 81 हजार 485 नए पात्र व्यक्तियों का नाम खाद्य सुरक्षा सूची में शामिल किया गया है। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी स्वयं जिले में गिव अप अभियान के क्रियान्वयन व प्रगति की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। गिव अप अभियान के तहत अपात्र लाभार्थियों की ओर से गिव अप किए जाने मामलों में राज्य के 41 जिलों में जयपुर ने प्रथम स्थान पर है। जिला रसद अधिकारी त्रिलोकचंद मीणा ने बताया कि जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देश पर जयपुर में जिला मुख्यालय से ग्राम पंचायत स्तर तक मुहिम के तहत गिव अभियान का संचालन किया जा रहा है। रात्रि चौपाल, जन सुनवाई, ग्राम सभा सहित समस्त सार्वजनिक कार्यक्रमों में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, कर्मचारियों सहित समाज मौजिज लोगों की ओर से सर्व साधारण को गिव अप के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यही कारण है कि गिव अप अभियान को जयपुर जिले में आमजन का भी भरपूर समर्थन मिल रहा है। उन्होंने बताया कि जिले में आयोजित हो रही नियमित रात्रि चौपाल व जनसुनवाई कार्यक्रमों में जिला प्रशासन द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर आमजन गिव अप के लिए आगे आ रहे है। कालवाड़ तहसील के बेगस गांव में आयोजित रात्रि चौपाल कार्यक्रम में भी जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के आह्वान पर मौके पर ही 128 ग्रामीणों ने गिव अप के लिए अपनी सहमति प्रदान की। जिला रसद अधिकारी त्रिलोकचंद मीणा ने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना के अपात्र लाभार्थियों के खिलाफ कार्यालय की ओर से सख्ती बरती जा रही है। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशानुसार जयपुर में योजना के 986 अपात्र व्यक्तियों को स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा सूची से अपना नाम हटवाने के लिए नोटिस जारी किया गया है। विभाग ने गिव अप अभियान को आगामी 30 जून, 2025 तक संचालित करने का फैसला किया गया है। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशन व जिला रसद अधिकारी त्रिलोकचंद मीणा के नेतृत्व में जिला रसद कार्यालय, जयपुर शहर व जयपुर ग्रामीण ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। मीणा ने बताया कि 30 जून 2025 तक स्वेच्छा से अपना नाम खाद्य सुरक्षा सूची से हटवाने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही नहीं की जाएगी। शास्ति की गणना 27 रुपये प्रति किलोग्राम के अनुसार खाद्य सुरक्षा सूची में नाम अंकित होने की तिथि से नाम हटाने की तिथि तक उस व्यक्ति की ओर से जितना खाद्यान्न प्राप्त किया गया है, अनुसार की जाकर मय ब्याज वसूली की जाएगी। जिला कलक्टर के निर्देशानुसार ऐसे कार्मिकों की सूचियां तैयार की जा रही हैं एवं ऐसे कार्मिकों के संबंधित विभागों को वसूली की राशि कार्मिक के मासिक वेतन से कटौती करने के लिए लिखा जाएगा। गिव अप अभियान के अन्तर्गत खाद्य सुरक्षा सूची की निष्कासन श्रेणी में सम्मिलित परिवार यथा ऐसे परिवार जिनमें कोई भी एक सदस्य सरकारी, अर्द्ध सरकारी, स्वायत्तशासी संस्थाओं में नियमित कर्मचारी या अधिकारी हो अथवा 1 लाख रुपये वार्षिक से अधिक पेंशन प्राप्त करता हो अथवा जिसके सभी सदस्यों की कुल आय 1 लाख रुपये वार्षिक से अधिक हो या निजी चौपहिया वाहन धारक या आयकरदाता हो सम्मिलित है, को प्रेरित कर खाद्य सुरक्षा सूची से अपना नाम स्वेच्छा से पृथक करवाए जाने हेतु आवेदन करवाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि जयपुर शहर में अब तक हजारों परिवारों द्वारा गिव अप अभियान के अन्तर्गत आवेदन कर अपना नाम खाद्य सुरक्षा सूची से हटवाया गया है।

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
9 जून, 2025

वन राज्यमंत्री ने श्री भागीरथ महाराज प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम में शिरकत कर बालिका शिक्षा पर दिया बल

श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर को बताया समाज के लिए एक नजीर

जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुना

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने रविवार को अलवर के बुध विहार में ओड समाज सभा समिति द्वारा आयोजित श्री भागीरथ जी महाराज की जयन्ती पर प्रतिमा अनावरण एवं शिव परिवार की स्थापना कार्यक्रम में तथा स्कीम नं. 10 स्थित श्री जैन मंदिर में श्री दिगम्बर जैन पूजन संघ अलवर द्वारा आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर के समापन समारोह शिरकत की। वन राज्यमंत्री शर्मा ने ओड समाज समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा उन्नति का मूल मंत्र है को बताते हुए बालिका शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि बेटियों को अवसर मिलने पर परचम लहराती है तथा एक साथ दो परिवारों को सुसंस्कृत करने का दायित्व निभाती है। उन्होंने श्री भागीरथ महाराज जी के जीवन संदेशों को आत्मसात करने का आह्वान किया। उन्होंनेएक पेड मां के नाम अभियान से जुडकर पर्यावरण संरक्षण में अपना दायित्व निभाने का आह्वान भी किया। उन्होंने समाज के द्वारा बोर्ड गठित करने की मांग पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के समक्ष पैरवी करने का विश्वास दिलाया। इस दौरान जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, रामगढ विधायक सुखवंत सिंह व जय आहूजा ने अपने संबोधन में समाज में शिक्षा पर बल देने एवं श्री भागीरथ महाराज के संदेशों को आत्मसात कर समाज व देश की उन्नति में सहयोग करने का आह्वान किया। इस दौरान गुजराज के ओड बोर्ड के चेयरमैन शिशुपाल, कश्मीर, सुरेश खामरा, धर्मराज, प्रेम, सतपाल, देवेन्द्र सैनी, रवि यादव सहित अनेक प्रबुद्ध व्यक्ति एवं समाज के पदाधिकारी तथा बडी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

जनसुनवाई कर सुनी आमजन की परिवेदनाएं, विभिन्न कार्यक्रमों में की शिरकत

वन राज्यमंत्री संजय शर्मा ने अपने निवास 201 रघुमार्ग पर जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को परिवेदनाओं के गुणवत्ता के साथ त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिये। उन्होंने निर्देश दिये कि परिवेदनाओं का निस्तारण होने पर संबंधित अधिकारी फरियादी को सूचित करें। इसके पश्चात मंत्री शर्मा ने तिजारा में पहुंचकर विगत दिनों जम्म-कश्मीर में तैनाती के दौरान वीरगति प्राप्त हुए अग्निवीर सैनिक संजीव सैनी के निवास पर जाकर श्रृद्धांजलि अपित कर शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त कर उनका ढाढस बंधाया। उन्होंने अपनाघर शालीमार में सुखमनी साहब पाठ एवं लंगर कार्यक्रम में शिरकत की तथा वहीं अपने नियमित पौधा लगाने के संकल्प के तहत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर के समापन समारोह की शिरकत

वन राज्यमंत्री शर्मा ने अलवर शहर के स्कीम नं. 10 स्थित श्री जैन मंदिर में श्री दिगम्बर जैन पूजन संघ अलवर द्वारा आयोजित श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर के समापन समारोह शिरकत कर अपने संबोधन में कहा कि ग्रीष्म अवकाश के समय दिगम्बर जैन पूजन संघ द्वारा विद्यार्थियों को संस्कारवान व देश के श्रेष्ठ नागरिक बनने की दिशा में श्रमण संस्कृति शिविर का आयोजन कर समाज के सामने एक नजीर पेश की है। इस शिविर के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय संस्कृति व संस्कार से न केवल जुडेंगे बल्कि देश के श्रेष्ठ नागरिक बनकर भविष्य में देश की उन्नति एवं विकास में अपनी महती भूमिका निभाएंगे। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जैन समाज ने प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण में विशेष योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि बच्चों को पर्यावरण व प्रकृति को नजदीक से देखने व समझने के लिए वन विभाग की ओर से राजस्थान के अभयारण्यों में निःशुल्क भ्रमण कराया जाएगा। साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के एक पेड मां के नाम अभियान से जुडकर सबको कम से कम एक पौधा लगाने का आह्वान किया। इस दौरान राजेन्द्र जैन, नरेन्द्र जैन, प्रवीण गोधा, अशोक जैन, विजय जैन, नीरज जैन, पी.के जैन, शम्भूदयाल जैन, सुश्री रितु जैन सहित बडी संख्या में समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में बालक-बालिकाएं मौजूद रहे।

धार्मिक कार्यक्रम में शामिल होकर पूर्व केन्द्रीय मंत्री सिंह व नेता प्रतिपक्ष जूली ने की जिले में खुशहाली की कामना

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली एवं कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा रविवार को एक धार्मिक कार्यक्रम में शामिल हुए। जिला प्रवक्ता रिपु दमन गुप्ता ने बताया की पूर्व केन्द्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह, टीकाराम जूली एवं योगेश मिश्रा रविवार को ग्राम हरसोली स्थित श्री श्री 1008 श्री संतदास जी महाराज के मंदिर के उद्घाटन समारोह शामिल हुए। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने संत की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया और देश, प्रदेश एवं जिले में अमन, चैन एवं खुशहाली की कामना की। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, विधायक दीपचंद खैरिया, ललित यादव, संजय यादव, प्रभारी गफ्फूर खान, गिरीश डाटा, पूर्व प्रधान रोहिताश चौधरी, बिजेंद्र महलावत, रिपु दमन गुप्ता, अखिलेश कौशिक, अंकित गोयल,जमशेद खान, वीर नारायण यादव, इकबाल खान, विक्की चौधरी, संदीप पाटिल, रामप्रसाद गुर्जर, अशोक पटेल आदि मौजूद रहे।

डांसर क्रिकेट लीग का फाइनल मे कपिल किलर्स टीम रही विजेता

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। डांसर क्रिकेट लीग 4 जून से 7 जून तक खेली गयी जिसमें राजू रॉयल्स, राहुल रेंजर्स, कपिल किलर्स, चिराग वेरियर ,सोनी सोल्जर, राजन राउडी ,टीम ने हिस्सा लिया फाइनल मैच कपिल कलर्स बनाम चिराग वॉरियर्स के बीच हुआ जिसमें कपिल किलर्स की टीम विजेता रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुष्पराज शर्मा जिला अध्यक्ष राजस्थान राज्य कर्मचारी महासंघ (भा म स) अलवर व ब्लू बेल्स एंड फर्स्ट स्टेप स्कूल की फाउंड पूनम शर्मा रहे। क्रिकेट लीग का आयोजन सोनी डांस एकेडमी एवं मोंटी राज अकादमी द्वारा किया गया।

वंदे गंगा अभियान के तहत संतदास मंदिर जलाशय की सफाई, जल शपथ लेकर दिया जल संरक्षण का संदेश

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)।। जल संरक्षण को लेकर चलाए जा रहे वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत संतदास जी मंदिर स्थित जलाशय में विशेष सफाई अभियान एवं जल शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत पीपल पूजन के साथ हुई। कार्यक्रम में स्थानीय ग्रामीणों एवं अधिकारियों ने सहभागिता निभाई। अभियान का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण, प्लास्टिक से मुक्ति और जल के महत्व को जन-जन तक पहुंचाना है। इस अवसर पर जलाशय के तट पर एकत्रित आमजन ने जल संरक्षण की शपथ ली और संकल्प लिया कि "जल है तो कल है" - इसी भावना से वे जल बचाने के हर प्रयास में भाग लेंगे। शपथ ग्रहण के उपरांत ग्रामीणों ने श्रमदान करते हुए जलाशय की सफाई की। इस सामूहिक प्रयास से स्वच्छता और जन-भागीदारी का प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत हुआ। इस मौके पर जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, बीडीओ श्याम सुंदर शर्मा, अधिशासी अभियंता छत्रपाल सिंह, सरपंच उमेश चौधरी, तहसीलदार, पूरण झाबुला सहित अन्य जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

अपनाघर शालीमार में "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के अंतर्गत भव्य वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

300 पौधे लगाने का लक्ष्य, छायादार और फलदार वृक्षों से महकेगी सोसाइटी

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। अपनाघर शालीमार सोसाइटी में "एक पेड़ मां के नाम" वृक्षारोपण अभियान की विधिवत शुरुआत हुई। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण पहल रही, जिसमें सोसाइटी के नागरिकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ राज्य सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने बीच पार्क में पौधारोपण कर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा – "वृक्ष जीवन का आधार हैं, हमें हर अवसर पर अधिकाधिक पौधे लगाने चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा और हरा-भरा वातावरण मिल सके।" समिति के अध्यक्ष राहुल अग्रवाल ने बताया कि अभियान के अंतर्गत 300 पौधे लगाए जा रहे हैं। ये पौधे सोसाइटी के विभिन्न पार्कों और ग्रीन बेल्ट क्षेत्रों में लगाए जाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि अभियान का उद्देश्य न केवल हरियाली बढ़ाना है, बल्कि नागरिकों में पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता भी उत्पन्न करना है। इस कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाते हुए रजनीश बांगा ने जानकारी दी कि लगाए जा रहे पौधों में मुख्यतः छायादार और फलदार वृक्ष शामिल हैं, जिनमें जामुन, अमरूद, शीशम, सेमल, आवला, नीम आदि शामिल हैं। इससे सोसाइटी का वातावरण और भी स्वच्छ और सुंदर बनेगा। कार्यक्रम में उपवन संरक्षक राजेंद्र हुड्डा, तिजारा के पूर्व विधायक मामन यादव, पूर्व ग्रामीण विधायक जय राम जाटव तथा पूज्य श्री श्री 108 गंगादास वेदांती जी महाराज की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी ने पौधारोपण कर पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। कार्यक्रम में समिति की सचिव हर्षा मेहता, किरण बांगा, पूनम अग्रवाल, मुस्कान अग्रवाल, बीना यादव, आशिमा माथुर, महेंद्र गोयल, जतिन गांधी, विनोद बांगा, संजय मोदी, सुधीर माथुर, बृजमोहन गुप्ता, कुलवंत सिंह, गौरीशंकर गुप्ता, पवन अग्रवाल, रिंकू अरोड़ा, मुकेश विजय, दिनेश गुप्ता, हरमीत सिंह मेहंदीरत्ता समेत बड़ी संख्या में सोसाइटीवासियों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। इस वृक्षारोपण अभियान से अपनाघर शालीमार सोसाइटी में हरियाली का नया अध्याय शुरू हुआ है। सोसाइटी के निवासियों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक सोच और सामूहिक जिम्मेदारी का भाव भी जागृत हुआ।

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत प्रभात फेरी व स्वच्छता कार्यक्रम हुआ आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका ने बताया कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अन्तर्गत आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में नगर निगम अलवर, खेल विभाग, नेहरू युवा केंद्र, स्वयं सेवी संस्थाओं और स्थानीय नागरिकों के सहयोग से गौरी देवी कन्या महाविद्यालय से लाल डिग्गी जलाशय तक वंदे गंगा प्रभात फेरी और जन जागरूकता रैली आयोजित की गई। रैली में प्लास्टिक का इस्तेमाल न करने, वृक्षारोपण, पर्यावरण और जल संरक्षण के पोस्टर, बैनर और तख्तियों के माध्यम से जन जागरूकता का संदेश दिया। इसके पश्चात् लाल डिग्गी जलाशय में स्वच्छता के लिए श्रमदान कार्यक्रम आयोजित कर साफ-सफाई कार्य किया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को जल संरक्षण का संकल्प दिलवाया गया। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अगुवाई में गंगा

दशहरा व पर्यावरण दिवस के सुअवसर पर प्रदेश में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान प्रारम्भ किया गया है जिसके तहत जिलेभर में विभिन्न विभागों द्वारा जल संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण से जुडी हुई गतिविधियां आयोजित कराई जा रही है जिसमें आमजन बढचढकर भाग ले रहे हैं। यह अभियान 20 जून तक संचालित किया जाएगा।

बेजुबान जानवरों को भीषण गर्मी में पानी की व्यवस्था करनी चाहिए - हिमांशु शर्मा

अलवर(निसं.)। किशन कुंड विकास समिति की ओर से लगातार सामाजिक कार्य आयोजित की जा रहे हैं। किशन कुंड विकास समिति के अध्यक्ष हिमांशु शर्मा ने कहा कि समिति के पदाधिकारी गत कई वर्षों से वन्य जीव, पशु, पक्षियों को दाना, पानी निरंतर उपलब्ध कराती आ रही है। जिससे कोई भी पशु पक्षी बिना पानी और दाना और चुग्गे के अभाव में दम ना तोड़े। रविवार को समिति के द्वारा फॉरेस्ट चौकी से लेकर बाला किला तक पानी के टैंकर के माध्यम से वहां टंकी और छोटे तालाबों की सफाई कर पशु पक्षियों के लिए पानी भरा गया। समिति समय-समय पर लगातार भीषण गर्मी को देखते हुए वन्य जीवन एवं पक्षियों के लिए निरंतर पानी उपलब्ध कराती रहेगी। अलवर शहर वासियों को भी इस पुनीत कार्य में आगे आना चाहिए इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष हिमांशु शर्मा, संरक्षक के जी गुप्ता, श्याम सुंदर शर्मा उपस्थित रहे।

ग्राम भैंसडावत व फाहरी में सांसद संपर्क एवं कृषि कार्यक्रम हुआ आयोजित

केंद्रीय वन मंत्री ने उप स्वास्थ्य केंद्र भैंसडावत का किया लोकार्पण

अंतिम छोर के व्यक्ति तक विकास पहुंचाना केंद्र व राज्य सरकार का लक्ष्य - केंद्रीय मंत्री यादव

__जयपुर टाइम्स/अलवर(निसं.)।__ केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव ने रविवार को रामगढ क्षेत्र के गांव भैंसडावत के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भैंसडावत में ग्राम रामबास, भैसडावत, दोंगडी व सेमला खुर्द तथा ग्राम फाहरी के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फाहरी में ग्राम नसवारी, फाहरी, खरसनकी व तालडा के लिए आयोजित सांसद संपर्क एवं कृषि कार्यक्रम में ग्रामीणों से संवाद कर उनकी परिवेदनाओं को सुनकर मौके पर ही उनका निस्तारण किया। साथ ही केंद्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी देकर उन योजनाओं का लाभ प्राप्त करने हेतु जागरूक किया। केंद्रीय वन मंत्री एवं अलवर सांसद यादव ने अपने सम्बोधन में कहा कि उनका लक्ष्य है कि सरकार की योजनाओं का लाभ अंतिम छोर तक के व्यक्ति तक पहुंचे इसके लिए सांसद संवाद यात्रा एवं कृषि कार्यक्रम निरन्तर जिले में चलेगा। इस कार्यक्रम के तहत क्षेत्र के समग्र विकास के लिए एक खाका तैयार कर उस पर कार्य करना है।

आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर त्वरित निराकरण के दिए निर्देश, सरकारी योजनाओं की दी गई जानकारी

यादव ने दोनों कार्यक्रम स्थलों पर आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को त्वरित निराकरण के निर्देश दिये। कार्यक्रम में केंद्र व राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में विभागीय अधिकारियों ने आमजन को जानकारी प्रदान की। यादव ने ग्रामीणों को अपने क्षेत्र को टीबी मुक्त बनाने का संकल्प दिलाया तथा राष्ट्रीय टीबी मुक्त कार्यक्रम के तहत प्रदान किए जा रहे लाभ आदि के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर लगाई गई स्टॉल का निरीक्षण भी किया। इस दौरान जिलाध्यक्ष अशोक गुप्ता, प्रधान रसनम गोपाल चौधरी, संजय नरूका, इन्द्रजीत सिंह पाटा, रामवतार चौधरी, सरिता राज, योगेन्द्र शर्मा, गोपाल सिंह, रामहेत जाट, छोटी देवी, गोपाल चौधरी सहित अनेक प्रबुद्ध व्यक्ति, संबंधित अधिकारीगण एवं बडी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

सांसद निधि से बनने वाले पुस्तकालय का किया शिलान्यास

केंद्रीय वन मंत्री यादव ने ग्राम भैंसडावत में उप स्वास्थ्य केंद्र के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन एवं ग्राम खरसनकी में सांसद निधि कोष से पुस्तकालय कक्ष मय बरामदा निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि इस उप स्वास्थ्य केंद्र से आसपास के लोगों को स्थानीय स्तर पर ही अच्छी चिकित्सा सुविधा मुहैया होगी। उन्होंने केंद्र व राज्य सरकार द्वारा चिकित्सा क्षेत्र को मजबूत करने व आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के संबंध में सरकारी योजनाओं कार्यक्रमों एवं नीतियों के बारे में आमजन को बताया। इस दौरान रामगढ विधायक सुखवंत सिंह ने केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव का रामगढ क्षेत्र के लिए लगातार दिलाई जा रही सौगातों के लिए आभार जताया।

डेयरी कॉपरेटिव व राजीविका से आएगी ग्रामीण क्षेत्र में समृध्दि

उन्होंने कहा कि जिला अपने दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। जिले में डेयरी कॉपरेटिव को मजबूत कर किसान व पशुपालकों को आर्थिक मजबूती प्रदान करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अलवर में 300 करोड रूपये की लागत से 5 लाख लीटर दूध प्रोसेसिंग का नया डेयरी संयंत्र स्वीकृत कराया है इससे पशुपालकों को अधिक पशु रखकर अतिरिक्त आय का अवसर मिलेगा। साथ ही राष्ट्रीय गोपालन मिशन के तहत नस्ल सुधार का कार्य भी जिले में चलेगा। उन्होंने कहा कि राजीविका के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को स्वरोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में भी काम हो रहा है ताकि जिले में बडी संख्या में लखपति दीदी बन सकें। भैंसडावत में किया उप स्वास्थ्य केंद्र का लोकार्पण, स्थानीय स्तर पर मिलेगी चिकित्सा सुविधाएं।

एक दर्जन से अधिक विकास कार्यों का किया लोकार्पण व शिलान्यास

केंद्रीय मंत्री यादव ने गांव बिदूका में सांसद निधि कोष से निर्मित सीसी ईंट खरंजा निर्माण कार्य, मेवात क्षेत्रीय विकास योजनान्तर्गत ग्राम बास दौंगदी व नसवारी में इन्टर लॉकिंग सडक मय नाला निर्माण कार्य व ग्राम खरसनकी में कब्रिस्तान की चार दीवारी निर्माण कार्य एवं ग्राम भैंसडावत के राजकीय स्कूल में स्टेज निर्माण कार्य, विधायक कोष से ग्राम दौंगडी में इंटरलॉकिंग टाइल्स खरंजा निर्माण कार्य व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोविन्दगढ में पिंक टॉयलेट निर्माण कार्य, ग्राम रामबास में सैनी श्मशान विकास कार्य, ग्राम बिदूका में सीसी ईंट खरंजा निर्माण कार्य, ग्राम बुलाहेडी में जिला परिषद मद से स्वीकृत दो नाली निर्माण कार्यों का लोकार्पण किया तथा सांसद निधि कोष से ग्राम खरसनकी में पुस्तकालय कक्ष मय बरामदा निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इसी प्रकार ग्राम फाहरी में विधायक कोष से इंटरलॉकिंग टाइल्स खरंजा निर्माण कार्य व गांव फाहरी में ही मेवात विकास योजना के तहत एक अन्य इंटरलॉकिंग सडक निर्माण कार्य का शिलान्यास किया।

पाली में कोरोना से दूसरी मौत, नर्सिंगकर्मी भी संक्रमितः प्रशासन अलर्ट मोड पर

जयपुर टाइम्स

पाली(निसं.) राजस्थान में कोरोना से एक और मौत की पुष्टि हुई है। पाली जिले में 52 वर्षीय व्यक्ति की इलाज के दौरान मौत हो गई, जिसके बाद आई रिपोर्ट में वह कोरोना पॉजिटिव निकले। यह राज्य में कोरोना से दूसरी मौत है। साथ ही, बांगड़ अस्पताल का एक नर्सिंगकर्मी भी कोविड पॉजिटिव पाया गया है, जिससे स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन में हड़कंप मच गया है। बांगड़ हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. एचएम चौधरी ने बताया कि 19 मई को उक्त व्यक्ति को तबीयत बिगड़ने पर अस्पताल में भर्ती किया गया था। करीब एक सप्ताह इलाज के बाद उन्हें जोधपुर रेफर किया गया, लेकिन परिजनों ने बाद में उन्हें फिर से पाली लाकर बांगड़ अस्पताल में भर्ती करवाया। यहां 4 जून को उनका कोरोना सैंपल लिया गया और 5 जून को उन्होंने दम तोड़ दिया। अगले दिन 6 जून को आई रिपोर्ट में संक्रमण की पुष्टि हुई। मृतक के संपर्क में आए लोगों की पहचान कर क्वारंटाइन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। नर्सिंगकर्मी के संक्रमित मिलने के बाद अस्पताल के संबंधित वार्ड को सेनिटाइज किया गया है और बाकी स्टाफ की भी जांच की जा रही है। जिला प्रशासन ने लोगों से सतर्क रहने और कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने की अपील की है।

श्रीगंगानगर बना देश का सबसे गर्म शहर, पारा 47.4 डिग्री पहुंचा; 11 जिलों में हीटवेव अलर्ट

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान में गर्मी ने एक बार फिर विकराल रूप धारण कर लिया है। रविवार को श्रीगंगानगर देश का सबसे गर्म स्थान रहा, जहां तापमान 47.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। इस भीषण गर्मी के कारण प्रदेश के 11 जिलों में हीटवेव का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के अनुसार, श्रीगंगानगर में शनिवार की तुलना में रविवार को तापमान 2.8 डिग्री अधिक रहा। सुबह से ही लू चलने लगी थी जो देर रात तक जारी रही। गर्म हवाओं के कारण लोगों को घरों में ही रहने को मजबूर होना पड़ा। खासकर सरहदी इलाकों में भीषण गर्मी का असर अधिक देखने को मिला। इसके अलावा बीकानेर में तापमान 46 डिग्री सेल्सियस, चूरू, जैसलमेर, कोटा और अन्य शहरों में भी पारा 45 डिग्री सेल्सियस या उससे ऊपर दर्ज किया गया। कुल मिलाकर 8 से ज्यादा शहर लू की चपेट में रहे। मौसम केंद्र जयपुर ने बीकानेर और श्रीगंगानगर में सोमवार के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है, वहीं 9 जिलों में येलो अलर्ट जारी किया गया है। अगले दो दिनों तक गर्मी से राहत की कोई संभावना नहीं है। प्रशासन ने लोगों से दोपहर के समय धूप में बाहर न निकलने, हल्के कपड़े पहनने और अधिक पानी पीने की अपील की है।

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) राज्य सरकार द्वारा 05 से 20 जून तक चलाये जा रहे "वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" के अंतर्गत रविवार को राजमार्ग स्थित राजकीय बी.डी.एम. जिला चिकित्सालय में नगर परिषद कोटपूतली, सिविल डिफेंस तथा चिकित्सा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में विशेष स्वच्छता अभियान एवं जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। इस दौरान अस्पताल परिसर में श्रमदान कर साफ-सफाई की गई तथा उपस्थित कर्मियों और आमजन को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं पारम्परिक जल स्रोतों के महत्व की जानकारी दी गई। इस मौके पर नगर परिषद कार्मिकों और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी रही। इस दौरान एक्सईएन नगर परिषद दीपक मीणा सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

निखिल जाट का भारतीय टीम में चयन

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर के छात्र खिलाड़ी निखिल जाट का चयन भारतीय वॉलीबॉल टीम में हुआ है। वॉलीबॉल प्रशिक्षक विजय कुमार ठोलीया ने बताया कि निखिल जाट कावा, उज़्बेकिस्तान मे 10 जून से शुरू होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। निखिल के भारतीय वॉलीबॉल टीम में चयन होने से विधालय के प्रधानाचार्य अजयपाल सिंह शेखावत, छात्रावास अधीक्षक मोहनलाल जीनगर, संस्थापन अधिकारी रवि व्यास, खेल प्रभारी मोहम्मद रफीक चौहान, माया कुमारी जाट, वीरेन्द्र सिंह, कैलाश दान, शशिशेखर जोशी, शम्भूकुमार रंगा, प्रकाश सारस्वत, सुरेन्द्र कुमार पुरोहित, प्रशान्त आचार्य, रवि कुमार छंगाणी, मोहम्मद अरशद, भवानी शंकर, राकेश पुरोहित, देवेन्द्र कुमार पुरोहित, गोविंद पुरोहित, जुगल किशोर, महेंद्र आचार्य विधालय के शैक्षणिक स्टाफ ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रशिक्षक एवं निखिल जाट को बधाई प्रेषित की।

मंदिर भूमि पर अवैध अतिक्रमण हटाने तथा मंदिर व गौशाला हेतु भूमि सुरक्षित कराने की मांग

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) निकटवर्ती ग्राम खड़ब की मंदिर भूमि पर अवैध अतिक्रमण हटाने तथा मंदिर व गौशाला हेतु भूमि सुरक्षित कराने की मांग को लेकर ग्रामीणों व साधु संतों ने महंत महावीर दास त्यागी, महामंडलेश्वर संत बालेश्वर दास एवं सामाजिक कार्यकर्ता राधेश्याम शुक्लावास के नेतृत्व में जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में लिखा है कि खड़ब स्थित खसरा नंबर 517 एवं 1044 पर पुरातन बड़ामंदिर की धार्मिक भूमि स्थित है। जिस पर खनन कारोबारी द्वारा बाहुबल एवं अपने साथियों की गुंडागर्दी के बल पर अवैध अतिक्रमण कर लिया गया है। उक्त भूमि पर पहले से ही मंदिर एवं गौशाला की उपयोगिता हेतु कार्य होते रहे हैं। विगत 13 मई को तहसीलदार कोटपूतली द्वारा पुलिस जाप्ते के साथ मौके पर जाकर अतिक्रमण हटवाया गया था।

"सतीश पूनिया की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ सम्पूर्णा शिविर का 16 वां सत्र : माँ और प्रकृति के सान्निध्य में संस्कारों की यात्रा"

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) समाज में महिलाओं और बच्चों के नैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के लिए समर्पित संस्था सम्पूर्णा द्वारा आयोजित 40 दिवसीय बाल एवं महिला संस्कार शिविर के 16वें सत्र का आयोजन रविवार को जयपुर स्थित सोहम फार्म में किया गया। इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय प्रभारी (हरियाणा) सतीश पूनिया की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही कार्यक्रम में स्वामी श्री बालमुकुंदाचार्य (विधायक), राष्ट्रीय महिला मोर्चा उपाध्यक्ष पूजा कपिल मिश्रा और सम्पूर्णा की संस्थापिका डॉ. शोभा विजेन्द्र सहित अनेक गणमान्य अतिथि सम्मिलित हुए। इस वर्ष शिविर की थीम "माँ और प्रकृति" रही, जिसके माध्यम से प्रतिभागियों को संस्कार, शिष्टाचार, प्रार्थना, वैदिक श्लोकों और सामाजिक सहभागिता के मूल्यों से जोड़ा गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, जिसके बाद संस्था की कार्यकारी अध्यक्ष आशा जैन ने अतिथियों का स्वागत प्रतीक चिन्ह और पारंपरिक पटका पहनाकर किया। कार्यक्रम में सतीश पूनिया ने कहा, "आज जिस तरह बेटियों को सशक्त किया जा रहा है, वह राष्ट्र निर्माण में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक है। कभी जिन्हें जन्म लेने से पहले रोका जाता था, आज वही बेटियाँ देश की शक्ति, सम्मान और पहचान बन रही हैं।" उन्होंने केंद्र सरकार की महिला कल्याण योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि ये शिविर भी उसी दिशा में एक मजबूत कड़ी हैं। डॉ. शोभा विजेन्द्र ने अपने उद्बोधन में सनातन और पाश्चात्य संस्कृतियों के मूल अंतर पर प्रकाश डाला और कहा कि भारतीय संस्कृति सामूहिक चेतना और प्रकृति से जुड़ाव की बात करती है। उन्होंने माँ के तीन रूपों–संरक्षिका, शिक्षिका और सृजनकर्ता–को नारीत्व का सार बताया। विधायक स्वामी बालमुकुंदाचार्य ने अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण में कहा, "गृहिणी के बिना कोई घर पूर्ण नहीं होता।" उन्होंने महिलाओं को राष्ट्र निर्माण की आत्मा बताया और युवाओं को संयम और संस्कृति का मार्ग अपनाने की सलाह दी। राष्ट्रीय महिला मोर्चा की उपाध्यक्ष पूजा कपिल मिश्रा ने माँ को सृष्टि की उत्पत्ति का मूल बताया और कहा कि "माँ ही जीवन की ऊर्जा और प्रेरणा का स्रोत है।" कार्यक्रम में निगम पार्षद स्मिता कौशिक, ग्लोबल बिहारी के संरक्षक दीपक पर्वतीयार, संस्था की कोषाध्यक्ष निर्मला चहल, संपादक श्रीमती सुमन बाजपेई और पूर्व पार्षद चित्रा अग्रवाल सहित कई प्रमुख लोग उपस्थित रहे। अंत में सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों ने सामूहिक अल्पाहार के साथ संवाद साझा किया और संस्कारों की इस यात्रा को और आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई।

राजस्थान में गैंगवॉर का नया मोर्चा

आनंदपाल-लॉरेंस गैंग आमने-सामने, बंबीहा गैंग का भी गठजोड़ उजागर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान की आपराधिक दुनिया में एक बार फिर बड़ा गैंगवॉर सिर उठाने लगा है। कभी प्रदेश में आतंक का पर्याय रही आनंदपाल गैंग और वर्तमान में सक्रिय लॉरेंस बिश्नोई गैंग के बीच दुश्मनी का नया अध्याय खुल गया है। हाल ही में धौलपुर के राजाखेड़ा क्षेत्र में गिरफ्तार किए गए कुख्यात डकैत जीतेंद्र उर्फ जीतू चंबल से पूछताछ में सामने आया कि लॉरेंस गैंग और आनंदपाल से जुड़ी गैंगों के बीच अब सीधे टकराव की स्थिति है। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स द्वारा 5 जून को की गई कार्रवाई में जीतू चंबल और उसके पिता तेजपाल को गिरफ्तार किया गया। इनके कब्जे से कारतूस और मैगजीन बरामद हुए। जांच में पता चला कि जीतू और उसके दोनों भाई - रामदत्त उर्फ सोनू व शिवदत्त चंबल - पहले आनंदपाल गैंग के लिए काम करते थे। पूछताछ में जीतू ने बताया कि चंबल के बीहड़ों में उसने अपने भाई के साथ मिलकर एक फायरिंग रेंज बना रखी थी, जहां कई राज्यों के गैंगस्टर हथियार चलाने की ट्रेनिंग लेने आते थे। श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेड़ी और गैंगस्टर राजू ठेहट के हत्यारे भी इसी रेंज में प्रैक्टिस कर चुके थे। इन दोनों ही हत्याओं की जिम्मेदारी लॉरेंस गैंग ने ली थी। इस पूरे मामले में एक और चौंकाने वाली बात यह रही कि राजू ठेहट की हत्या के पीछे विदेश में बैठी आनंदपाल की बेटी चीनू उर्फ चरणजीत का भी नाम सामने आया है। बताया जा रहा है कि उसने ही हत्या की साजिश रचकर लॉरेंस गैंग के खिलाफ मोर्चा खोला। पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि जीतू के पास मिली थी, वह जयपुर के कालवाड़ रोड निवासी चूरू के हिस्ट्रीशीटर जीतू जोड़ी से मिली थी, जो गैंगस्टर शिवराज सिंह के माध्यम से उसके पास पहुंची। इस घटनाक्रम से स्पष्ट है कि राजस्थान में गैंगस्टर सिंडिकेट फिर से सक्रिय हो रहे हैं और लॉरेंस तथा आनंदपाल गैंग के बीच चल रही अदृश्य जंग अब सशस्त्र संघर्ष में तब्दील होती जा रही है।

बिचून में केंद्रीय विद्यालय खोलने की मांग, केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने लिखा शिक्षा मंत्री को पत्र

जयपुर टाइम्स

किशनगढ़(निसं.) केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने रविवार को दूदू विधानसभा क्षेत्र की ग्राम पंचायत बिचून में केंद्रीय विद्यालय खोलने की मांग को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को पत्र लिखा। उन्होंने पत्र में बिचून में नवीन केंद्रीय विद्यालय की स्वीकृति शीघ्र देने का आग्रह किया। राज्य मंत्री चौधरी को यह सुझाव हाल ही में उनके किशनगढ़ स्थित आवास पर आयोजित जनसुनवाई के दौरान दूदू क्षेत्र के ग्रामीणों ने दिया था। ग्रामीणों ने बताया कि बिचून सहित आसपास के गांवों में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं केंद्रीय पाठ्यक्रम की शिक्षा लेना चाहते हैं, लेकिन निकटतम केंद्रीय विद्यालय न होने के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। अपने पत्र में मंत्री चौधरी ने उल्लेख किया कि बिचून ग्राम पंचायत, पंचायत समिति मौजमाबाद, जिला जयपुर में स्थित है और यह क्षेत्र उनके अजमेर संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आता है। उन्होंने बताया कि बिचून में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना से सैकड़ों गांवों के विद्यार्थियों को लाभ होगा और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यालय की स्थापना से ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए केंद्रीय शिक्षा पाठ्यक्रम की पहुंच सुलभ होगी और इससे क्षेत्र की शैक्षणिक प्रगति को नई दिशा मिलेगी। अंत में उन्होंने केंद्रीय शिक्षा मंत्री से आग्रह किया कि ग्राम पंचायत बिचून में केंद्रीय विद्यालय खोलने की स्वीकृति शीघ्र प्रदान की जाए।

हाईकोर्ट का एक के बदले 10 पेड़ लगाने का आदेश

कहा- विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण जरूरी, भविष्य की पीढ़ियों के लिए अहम फैसला

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर के सौंदर्यीकरण और सड़कों के विस्तार के लिए काटे जाने वाले पेड़ों की कटाई को लेकर अहम आदेश दिया हैं। अदालत ने कहा कि अगर पेड़ काटना जरूरी है तो सरकार एक पेड़ के बदले दस पेड़ लगाए। अदालत ने कहा कि यह आदेश सार्वजनिक हित में दिया जा रहा है ताकि भविष्य की पीढ़ियों को स्वच्छ और ऑक्सीजन युक्त वातावरण मिल सके। अदालत ने कहा कि पेड़ सालों तक समाज को मौन रूप से लाभ पहुंचाते हैं। इसलिए एक पेड़ के बदले दस पेड़ लाने की शर्त व्यापक जनहित में लगाई गई हैं। जस्टिस अनूप ढंढ की अदालत ने यह आदेश ज्ञानचंद सोनी व अन्य की ओर से दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिया। अदालत ने आदेश में कहा कि अगर सड़क के विस्तार और निर्माण के दौरान पौधों या पेड़ों को हटाने की आवश्यकता होती है, तो कोटपूतली नगर परिषद काटे जाने वाले पेड़ों और पौधों की गिनती करके उनकी सूची तैयार करेगा। हटाए गए प्रत्येक पेड़ या पौधे की जगह आस-पास के सार्वजनिक क्षेत्र में दस छायादार पौधे लगाएंगा। वहीं इस संबंध में न्यायालय में एक रिपोर्ट भी प्रस्तुत करेंगा। अधिवक्ता आशीष शर्मा ने बताया कि कोटपूतली में करीब तीन साल पहले नगर परिषद ने सड़क चौड़ी करने के नाम पर वैध रूप से संपत्ति के कब्जाधारकों को बेदखल कर दिया था। मास्टर प्लान में सड़क की चौड़ाई 60 फीट से कम है, लेकिन नगर परिषद अस्सी फीट से अधिक चौड़ी सड़क बना रहा हैं। याचिकाकर्ताओं के पास भूमि के पंजीकृत विक्रय पत्र है और कुछ परिवारों के पास खेतड़ी रियासत की ओर से जारी पट्टे भी हैं। लेकिन उनकी सुनवाई नहीं हो रही हैं। इस पर फैसला देते हुए अदालत ने मास्टर प्लान को योजनाबद्ध विकास का दस्तावेज बताते हुए कहा कि यह व्यापक जनहित के लिए होता है, इसे प्राधिकरण की मर्जी या किसी व्यक्ति के हित में नहीं बदला जा सकता। अदालत ने सरकार को निर्देश दिया कि इस मामले में 15 दिन में कमेटी गठित की जाए, जो प्रभावितों के स्वामित्व के मामलों पर सुनवाई करे। यदि किसी के पास वैध दस्तावेज हैं और सड़क चौडी करने के लिए जमीन लेना आवश्यक है तो उसे डीएलसी रेट से भुगतान किया जाए या सरकारी योजना के तहत बदले में दूसरी भूमि आवंटित की जा सकती है।

पत्नी से परेशान पति ने किया सुसाइड, प्रेमी को रुपए भेजने के लिए परेशान करती थी

जयपुर टाइम्स

चंचल शर्मा, पत्नी

राकेश सैनी, प्रेमी

जयपुर(कासं.) जयपुर में पति के सुसाइड मामले में पुलिस ने पत्नी और उसके प्रेमी को अरेस्ट किया है। आरोप है कि पत्नी अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति के साथ मारपीट करती थी। रुपए के लिए टॉर्चर करती थी। कालवाड़पुलिस ने गिरफ्तार पत्नी और उसके प्रेमी को आज कोर्ट में पेश कर जेसी भेज दिया है। एसएचओ कविता शर्मा ने बताया- मां वैष्णो देवी कॉलोनी हाथोज निवासी प्रकाश शर्मा ने 13 अगस्त 2024 को जहर खाकर सुसाइड किया था। 6 जून 2025 को युवक की पत्नी चंचल शर्मा निवासी श्रीमाधोपुर सीकर और उसके प्रेमी राकेश सैनी निवासी वैद्यजी का चौराहा करधनी को अरेस्ट किया था। जांच में सामने आया कि साल 2017 में प्रकाश की शादी चंचल शर्मा से हुई थी। शादी के कुछ दिन बाद ही दोनों परिवार से अलग वैद्यजी का चौराहा पर रहने लगे। कुछ ही दिनों में वहां रहने वाले राकेश सैनी से चंचल शर्मा की नजदीकियां बढ़ गई। प्रकाश की गैरमौजूदगी में राकेश घर आने-जाने लगा। महिला को अपने साथ घूमने ले जाने लगा। प्रकाश के विरोध करने पर प्रेमी राकेश के साथ मिलकर पत्नी चंचल मारपीट करती। पति प्रकाश की सैलरी भी प्रेमी राकेश के अकाउंट में ट्रांसफर कर देती थी। 13 अगस्त 2024 को चंचल पति प्रकाश के साथ पीहर आई थी। पति प्रकाश के बैंक अकाउंट से प्रेमी राकेश को 36 हजार ऑनलाइन ट्रांसफर किए थे। इसके साथ ही पति प्रकाश पर 3 लाख रुपए प्रेमी राकेश के अकाउंट में डालने का दबाव बनाने लगी थी। प्रेमी के साथ मिलकर रुपए देने के लिए टॉर्चर कर रही थी। परेशान होकर प्रकाश ने जहर खा लिया। तबीयत खराब होने पर परिजन उसे चिरायु हॉस्पिटल ले गए। हालत गंभीर होने पर उसे मणिपाल हॉस्पिटल रेफर कर दिया। वहां डॉक्टर्स ने प्रकाश को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने कांवटिया हॉस्पिटल में पोस्टमॉर्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। कालवाड़ थाने में मृतक की मां ललिता देवी ने 3 जनवरी 2025 को प्रकाश की पत्नी चंचल और उसके प्रेमी राकेश सैनी के खिलाफ मामला दर्ज करवाया था। पुलिस के मामले की जांच कर बयान दर्ज किए। बयानों में विरोधाभास और ऑनलाइन रुपए प्रेमी के बैंक अकाउंट में ट्रांसफर के सबूत मिले। पुलिस ने खुदकुशी के लिए उकसाने के मामले में दोनों आरोपियों को शुक्रवार (6 जून) को दोपहर अरेस्ट कर लिया। इसके बाद आज कोर्ट में पेश कर जेसी भेज दिया।

वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के तहत प्रभात फेरी एवं जागरुकता रैली का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के तहत रविवार को जयपुर के सांगानेर तहसील की भापुरा की बावड़ी से प्रभात फेरी एवं जन जागरुकता रैली का आयोजन किया गया। रैली में बड़ी तादाद में जन प्रतिनिधियों, स्कूली छात्र-छात्राओं, नेहरू युवा केंद्र के स्वयं सेवकों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं, संगठनों के सदस्यों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम स्थल पर वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के तहत स्वच्छता एवं साफ-सफाई अभियान, पौधारोपण तथा पक्षियों के लिए परिंडा वितरण जैसी गतिविधियां आयोजित की गईं। कार्यक्रम में ग्रामीण जनभागीदारी एवं जनजागरूकता सुनिश्चित करते हुए श्रमदान का कार्यक्रम भी आयोजित करवाया गया। इस अवसर पर विकास अधिकारी ज्योति प्रजापत, सहायक अभियंता हरीश वर्मा (नरेगा), मुकेश देवेन्दा (वाटरशेड) सहित अन्य विभागीय अधिकारी, पंचायत समिति के गणमान्य व्यक्ति एवं कई ग्रामीणों ने भाग लिया।

पुड़िया को बाजार ले जाने की चुनौती

> इनकी वजह से मरीजों में इनसे दिमागी सूजन, पक्षाघात और दूसरी गंभीर बीमारियां तक होने की बात कही गई थी और कनाडा के निवासियों को सतर्क करते हुए जारी निर्देश में कहा गया था कि वे भारतीय कंपनियों द्वारा निर्मित साफी, शिलाजीत, करेला कैप्सूल और महासुदर्शन चूर्ण आदि का हरगिज इस्तेमाल न करें। ऐसा ही एक मामला अमेरिका में हुआ था, जब भारत से वहां भेजी गई आयुर्वेदिक दवाओं की एक खेप उनमें तय मानक से कई गुना ज्यादा भारी धातुओं की उपस्थिति के दावे के साथ लौटा दी गई थी। दस साल पहले एशियाई देश सिंगापुर तक ने भारतीय आयुर्वेदिक दवा कंपनियों द्वारा निर्मित च्यवनप्राश को उनमें मौजूद कीटनाशक तत्त्वों और हैवी मेटल्स के कारण लौटा दिया था। सिंगापुर ने तो यह दावा भी किया था कि भारतीय कंपनियों के च्यवनप्राश में पारा और सीसा (लेड) के अलावा संखिया की भी भारी मात्रा मौजूद थी।

भले ही दुनिया के कई देशों में आयुर्वेदिक दवाओं का आयात भारत से होता हो, लेकिन इनके खिलाफ एक बड़ा भारी मत यह है कि प्राचीन ग्रंथों के उल्लेखों और सिर्फ भरोसे के आधार पर उन दवाओं का कारोबार नहीं चल सकता जिनके बनाने की विधि में एकरूपता न हो और जिनके असर व दुष्प्रभाव को मापने का कोई जरिया न हो। इन स्थितियों के बावजूद हाल में स्विट्जरलैंड की सरकार ने कुछ यूरोपीय और चीन की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ-साथ आयुर्वेद को भी मान्यता प्रदान कर दी है। इस मान्यता का अभिप्राय यह है कि अब न सिर्फ इन चिकित्सा पद्धतियों के तहत इलाज की वहां छूट होगी और बीमा कंपनियों से इलाज के खर्च की क्षतिपूर्ति (रिम्बर्समेंट) मिल सकेगी, बल्कि आयुर्वेद के विस्तार के लिए सरकारी पैसे की मदद भी हासिल हो सकेगी। इस मान्यता में 210 औषधीय जड़ी-बूटियों और 250 पारंपरिक आयुर्वेदिक नुस्खों को भी शामिल किया गया है और चिकित्सकों यानी वैद्यों को अपने बनाए नुस्खे आजमाने व मरीजों को बेचने की छूट हासिल होगी। किसी यूरोपीय मुल्क में आयुर्वेद को स्वीकृति का यह एक बड़ा मामला है और शायद यही वजह है कि इसकी सफलता से उत्साहित भारत सरकार ने अब इटली और जर्मनी जैसे देशों में भी आयुर्वेद को बढ़ावा देने वाले अभियानों में गति लाने की योजना बनाई है। इन देशों में आयुर्वेदिक दवाओं की भारी मांग है, लेकिन मौजूदा कायदे-कानूनों के कारण वहां चिकित्सक इन्हें आजमाने से कतराते हैं और इन दवाओं की निर्माता कंपनियां भी अपने उत्पाद वहां भेजते समय आशंकित रहती हैं कि उनकी दवाओं में मानक संबंधी कोई दोष न निकाल दिया जाए और करोड़ों की खेप सिर्फ संदेह के आधार पर लौटा न दी जाए। ऐसा अनगिनत बार हो चुका है जब भारतीय आयुर्वेदिक कंपनियों की दवाओं की खेप पश्चिमी मुल्कों से यह कह कर लौटाई गईं कि उनमें या तो जरूरत से ज्यादा भारी धातुएं (हैवी मेटल्स) हैं या फिर उनके निर्माण की प्रक्रियाओं में लापरवाही बरती गई है। करीब एक दशक पहले 2005 में कनाडा के एक सरकारी विभाग 'हेल्थ कनाडा' ने यह कह कर लोगों को चौंका दिया था कि उसने कई भारतीय आयुर्वेदिक कंपनियों की दवाओं में सीसा, पारा और आर्सेनिक जैसे खतरनाक तत्त्वों की मौजूदगी दर्ज की है। इनकी वजह से मरीजों में इनसे दिमागी सूजन, पक्षाघात और दूसरी गंभीर बीमारियां तक होने की बात कही गई थी और कनाडा के निवासियों को सतर्क करते हुए जारी निर्देश में कहा गया था कि वे भारतीय कंपनियों द्वारा निर्मित साफी, शिलाजीत, करेला कैप्सूल और महासुदर्शन चूर्ण आदि का हरगिज इस्तेमाल न करें। ऐसा ही एक मामला अमेरिका में हुआ था, जब भारत से वहां भेजी गई आयुर्वेदिक दवाओं की एक खेप उनमें तय मानक से कई गुना ज्यादा भारी धातुओं की उपस्थिति के दावे के साथ लौटा दी गई थी। दस साल पहले एशियाई देश सिंगापुर तक ने भारतीय आयुर्वेदिक दवा कंपनियों द्वारा निर्मित च्यवनप्राश को उनमें मौजूद कीटनाशक तत्त्वों और हैवी मेटल्स के कारण लौटा दिया था। सिंगापुर ने तो यह दावा भी किया था कि भारतीय कंपनियों के च्यवनप्राश में पारा और सीसा

(लेड) के अलावा संखिया की भी भारी मात्रा मौजूद थी। आयुर्वेदिक दवाओं में भारी धातुओं की उपस्थिति अकारण नहीं है। प्राचीन ग्रंथों के संदर्भों के आधार पर उनमें ये तत्त्व और धातुओं की भस्म आदि आवश्यकतानुसार मिलाए ही जाते हैं। जैसे स्वर्ण या रजत भस्म को अच्छे च्यवनप्राश का प्राण माना जाता है। इसी तरह एक विशेष चट्टान से तैयार होने वाले शिलाजीत की अपनी ही उपयोगिता है। इन सारे तत्त्वों को रोग-विशेष की चिकित्सा में जरूरी माना जाता है और इन्हें आयुर्वेद के नजरिये से तर्कसम्मत और अनिवार्य बताया जाता है। पेड़ की छाल से तैयार होने वाले ईसबगोल की अपनी महत्ता है और करेले के चूर्ण की अपनी उपयोगिता है, लेकिन इन चीजों को लेकर पश्चिमी देशों में काफी एतराज किया गया है और हमेशा पश्चिमी मानकों की बात उठाई गई है। इससे यह संदेह अवश्य रहा है कि कहीं ऐसी कार्रवाई पश्चिमी शैली की दवा बनाने वाले उद्योग के इशारे पर तो नहीं की गई। एलोपैथी चिकित्सा चूंकि बेहद महंगी है और उसके कई उत्तर-प्रभाव (साइड इफेक्ट) हैं, इसलिए पूरी दुनिया के लोग सस्ती पारंपरिक चिकित्सा को लेकर जिज्ञासु रहे हैं। यह जिज्ञासा निश्चय ही अमेरिकी-यूरोपीय दवा कंपनियों के दबदबे को नुकसान पहुंचाती रही है, इसलिए इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि पश्चिमी दवा उद्योग के दबाव में आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के खिलाफ एक माहौल जान-बूझ कर बनाया गया। यहां तक कि खुद विश्व स्वास्थ्य संगठन इसके दबाव में रहा और उसने यह व्यवस्था दी कि आयुर्वेद और इस जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों-दवाओं-नुस्खों को मानकीकरण के बिना आजमाया न जाए। यहां तक कि कुछ वर्ष पहले जब विश्व स्वास्थ्य संगठन के तहत पारंपरिक चिकित्सा कार्यक्रम(ट्रेडिशनल मेडिसिन प्रोग्राम) चलाया गया, तब भी यह कहा गया कि पारंपरिक दवाओं व चिकित्सा प्रणालियों के सकारात्मक प्रभाव के बारे में ठोस वैज्ञानिक प्रमाण होने चाहिए तभी उनके इस्तेमाल की इजाजत दी जा सकती है।

पश्चिम की दवा लॉबी की साजिश का तथ्य अपनी जगह मौजूद है, पर इससे इनकार नहीं कि जब बात मानकों, प्रमाणन और एक व्यवस्थित प्रक्रिया की होती है तो इस मामले में होम्योपैथी, चीनी, यूनानी चिकित्सा पद्धतियों की तरह थोड़ा-बहुत अभाव आयुर्वेद में भी रहा है। अभाव इसलिए नहीं था कि दवाओं-नुस्खों को बनाने की प्रक्रिया और मरीज पर पड़ने वाले उनके असर के बारे में प्राचीन भारतीय ग्रंथों में कोई मतभेद था, बल्कि इसलिए था क्योंकि अलग-अलग वैद्य और दवा निर्माता कंपनी बाजार में जगह बनाने के लालच में दवाओं में डाली जाने वाली सामग्री की मापजोख में अंतर करने लगीं। साथ ही, कोई आयुर्वेदिक कंपनी लोगों को इस बारे में सचेत नहीं करती थी कि उसकी दवाओं को यदि सही ढंग से नहीं लिया गया, तो उनके भी साइड इफेक्ट हो सकते हैं। यही नहीं, देश में आयुर्वेदिक दवाओं के मानकीकरण की व्यवस्थित और साझा व्यवस्था भी लंबे समय तक नहीं थी, जबकि ये दवाएं दशकों से देश-विदेश में बेची जा रही थीं।

यही वजह है कि दो साल पहले जब आयुर्वेद को संरक्षण प्रदान करने वाले आयुष विभाग को पहली बार मंत्रालय स्तरीय जगह दी गई तो आयुर्वेद के विस्तार में आ रही बाधाओं पर ज्यादा सोच-विचार होने लगा। इस प्रक्रिया में दिल्ली में छठी विश्व आयुर्वेद कांग्रेस का आयोजन (वर्ष 2014) हुआ तो उसमें इस चिंता को स्वर देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अब आयुर्वेद की दवाओं को पहले की तरह पुड़िया में बांध कर लोगों तक नहीं पहुंचाया जा सकता, बल्कि इसके लिए ठीक वैसे ही इंतजाम करने होंगे जैसे एलोपैथी के संबंध में किए जाते हैं। इसी प्रक्रिया के तहत आयुष विभाग ने आयुर्वेदिक दवाओं के क्लीनिकल ट्रायल की जरूरत पर सोचना शुरू किया, क्योंकि इसके बिना दवाओं की विश्वसनीयता प्रमाणित करना आज के जमाने में लगभग असंभव है। इधर स्विट्जरलैंड ने आयुर्वेद को जो मान्यता प्रदान की है

सम्पादकीय

रेपो रेट में कटौती से बढ़ेगी रफ्तार या बनी रहेगी सुस्ती?

पिछले दिनों अर्थव्यवस्था के लिहाज से सकारात्मक खबरों के बीच अब भारतीय रिजर्व बैंक यानी आरबीआइ की ओर से नीतिगत दरों में कमी से यही संकेत उभरता है कि महंगाई अब नियंत्रण में है और आर्थिक मोर्चे पर खड़ी चुनौतियों से पार पाने में देश आगे की राह पर है। आरबीआइ ने शुक्रवार को प्रमुख नीतिगत दर यानी रेपो दर में 0.5 फीसद की कमी करके उसे 5.5 फीसद कर दिया। इसे उम्मीद से ज्यादा की कमी माना जा रहा है। इसके अलावा, एक चौंकाने वाले फैसले के तहत आरबीआइ ने बैंकों के लिए भी नकद आरक्षित अनुपात यानी सीआरआर में भी एक फीसद की कटौती की घोषणा की। यह लगातार तीसरी बार है, जब केंद्रीय बैंक ने रेपो दर में कटौती की है। इससे पहले आरबीआइ ने इसी वर्ष फरवरी और अप्रैल में पच्चीस आधार अंकों की कटौती की थी। जाहिर है, यह न केवल देश के भीतर आर्थिक उतार-चढ़ाव से निपटने की कोशिश है, बल्कि फिलहाल दुनिया भर में जैसी चुनौतियां खड़ी हो रही हैं, उसमें इन उपायों से अर्थव्यवस्था को संभालने में भी मदद मिलेगी। दरअसल, रेपो दरों में कमी को मुख्य रूप से ऋण के लिहाज से सुविधाजनक माना जाता रहा है। कर्ज सस्ता या महंगा होने का हिसाब इसी पर टिका होता है और इसका सीधा और पहला असर उन उपभोक्ताओं पर पड़ता है, जिन्होंने घर, वाहन, अन्य सामान या फिर शिक्षा जैसी जरूरतों के लिए बैंकों से ऋण लिया होता है या फिर वे लोग, जो इस बात का इंतजार करते हैं कि रिजर्व बैंक की ओर से कब नीतिगत दरों में कमी की जाए और कर्ज सस्ता होने के बाद वे कुछ खरीदने या निवेश करने की योजना बनाएं। गौरतलब है कि रिजर्व बैंक की नीतिगत दरों के अनुरूप ही व्यावसायिक बैंक उपभोक्ताओं को दिए जाने वाले ऋण और अन्य सावधि जमा के मद में ब्याज की दरें निर्धारित करते हैं। इसलिए उम्मीद है कि रेपो दरों में कमी के बाद व्यावसायिक बैंक भी कर्ज की दरें घटाएंगे। इसके बाद स्वाभाविक रूप से कर्ज सस्ता होगा और मासिक किस्तों में कमी की वजह से बैंकों से ऋण लेने वाले उपभोक्ताओं की मांग बढ़ सकती है। साथ ही, पिछले कुछ समय से वाहन बाजार और खासतौर पर जमीन-जायदाद के कारोबार में जिस तरह की मंदी की आशंका जताई जा रही थी, नीतिगत दरों में कटौती के बाद उसमें सुधार आने की उम्मीद की जा सकती है। इस लिहाज से देखें तो रिजर्व बैंक की ओर से नीतिगत दरों में बड़ी कमी की जो घोषणा की है, वह एक तरह से अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने की दिशा में एक अहम कदम है। मगर जरूरत इस बात की है कि इस तरह के फैसले सिर्फ घोषणाओं और अर्थव्यवस्था के जटिल गणित तक ही न सिमटे रहें। इसका असर जब तक जमीन पर नहीं दिखेगा, आम लोगों को इसका सीधा फायदा नहीं मिलेगा, वे अपनी जरूरत के लिए घर या कोई अन्य चीज की खरीदारी को लेकर सहज और निर्द्वंद्व नहीं होंगे, तब तक इस तरह के फैसले अर्थव्यवस्था की चुनौतियों को दूर करने में सहायक साबित नहीं हो सकते। महंगाई से राहत और क्रय शक्ति की सीमा में खरीदारी में सहजता से यह तय होगा कि रेपो दरों में कमी का लाभ आम लोगों तक कितना पहुंच पाता है।

सेहत की सुरक्षा

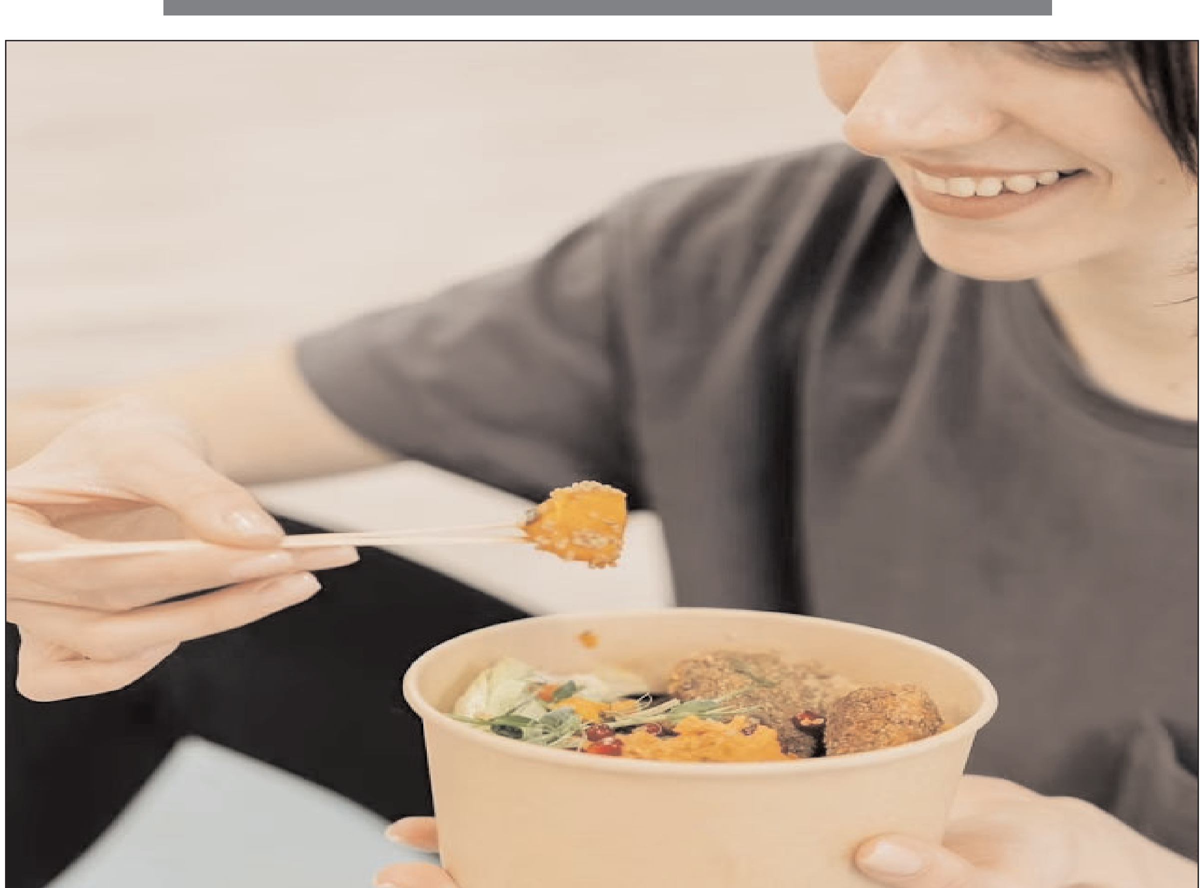

त्योहारों के मौसम में खाद्य पदार्थों में मिलावट का कारोबार, खासतौर पर मिठाइयों में ज्यादा जोर पकड़ता है। इसके लिए आम लोगों को जागरूक होना चाहिए। त्योहारों के मौसम में खाने-पीने की नकली और मिलावटी चीजों को बेचने की भी होड़ लग जाती है। आज समाज में बहुत से ऐसे लोग भी है जो अपने थोड़े-से फायदे के लिए खाने-पीने की चीजों में मिलावट करके दूसरों की जान को भी जोखिम में डाल देते हैं। खाने-पीने की मिलावटी चीजें जहर समान होती हैं। खासतौर पर बच्चों की सेहत पर इनका नकारात्मक असर बहुत ज्यादा पड़ता है। यों भी स्वस्थ भारत के लिए खानपान की चीजों में मिलावट रोकना बहुत जरूरी है। खाद्य पदार्थों में मिलावट नहीं रुक रही, क्योंकि एक तो आमजन सरकार द्वारा बनाए गए उपभोक्ता संरक्षण के कानून के प्रति जागरूक नहीं है, दूसरा सरकार और प्रशासन मिलावट रोकने के लिए गंभीरता नहीं दिखाता। तीसरा सरकारी तंत्र में फैले भ्रष्टाचार के कारण खाद्य पदार्थों की जांच समय-समय पर नहीं होती। सरकार और प्रशासन को आमजन की सेहत की सुरक्षा के लिए गंभीरता दिखानी चाहिए। बाजार में बिकने वाली चीजों की समय-समय पर जांच करनी चाहिए। यह भी कहना उचित होगा कि विज्ञापनों के भ्रम में आकर अपनी सेहत के साथ खिलवाड़ करना गलत है। मीडिया समय-समय पर मिलावटी या बनावटी खाने पीने चीजों से सेहत पर होने वाले नुकसान का खुलासा करता रहता है। इस पर सबको ध्यान देना चाहिए। सरकार लोगों को मिलावटी चीजों, घटिया गुणवत्ता और घटिया चीजों से बचने के लिए जागरूकता के कई अभियान और हेल्पलाइन भी समय-समय पर शुरू करती आई हैं। लेकिन जब तक लोग किसी वस्तु या खाने-पीने की चीजों की गुणवत्ता पर ध्यान नही देंगे और किसी गड़बड़ी की शिकायत उपभोक्ता अदालत में नहीं करते, तब तक सरकार के उपभोक्ताओं को दिए जाने वाले संरक्षण के प्रयास कभी कामयाब नहीं हो सकते हैं।

किसान का दुख

गाय अगर बछिया देती है तो ठीक है, लेकिन बछड़ा देती है तो मुसीबत, क्योंकि अब किसान भी खेतों में बैल से हल नहीं चलाते! किराए पर ट्रैक्टर ले लेते हैं। नतीजतन, इन बछड़ों से भी छुटकारा पाना है। इसलिए किसी तरह उन्हें ट्रक में लाद कर गांव से आठ-दस किलोमीटर दूर छोड़ आते हैं। गोहत्या से संबंधित कानूनों की वजह से इनकी ब्रिकी भी नहीं होती। फिर गौरक्षकों के भय से इन्हें एक जगह से दूसरी जगह नहीं लाया या ले जाया जा सकता। गौशालाएं पर्याप्त नहीं हैं। जो हैं, उनका प्रबंध ठीक नहीं है। वे कभी गंदगी के कारण बीमारी से मरती हैं

उस दिन सड़क पर गाड़ी चलाते हुए ड्राइवर ने अचानक ब्रेक लगाया था और मैं उछल कर आगे की सीट से टकराई थी। मैंने पूछा कि क्या हुआ तो पता चला कि अचानक एक गाय सड़क के किनारे से बीच में आ गई थी। खिड़की से देखा तो आसपास से लेकर बीच सड़क पर और इधर-उधर कई गाय बैठी या घूमती नजर आ रही थीं, जो सड़कों पर यातायात के लिए मुसीबत बनी हुई थी। ड्राइवर बता रहा था कि इनकी वजह से सड़कों पर होने वाले हादसे बढ़ गए हैं। मुख्य मार्गों पर और यहां तक कि बाड़ लगाने के बावजूद एक्सप्रेस-वे पर भी कई बार गायों के झुंड कब सामने आ जाएं, पता ही नहीं होता, जहां गाड़ियां सौ या इससे भी ज्यादा की रफ्तार से जा रही हैं। ऐसे में अचानक ब्रेक लगाने से क्या होगा, अंदाजा लगाया जा सकता है। सवाल है कि इतनी गाय सड़कों पर क्यों दिखने लगी हैं।

दरअसल, आमतौर पर जब गाय दूध देना बंद कर देती है तो उन्हें उनके पालक ऐसे ही इधर-इधर छोड़ देते हैं। ऐसे में उनके खाने का खर्च कौन उठाएगा! ग्रामीण इलाकों में और ज्यादा बुरा हाल है। लावारिस गायों के झुंड खेतों में घुस कर पूरी फसल नष्ट कर देते हैं। किसान क्या करेगा! जिनके खेत छोटे हैं, वे किसी तरह कंटीली बाड़ लगा लेते हैं, लेकिन जिनके पास सौ बीघा या उससे ज्यादा जमीन है, वे क्या करें! किसान घबरा कर इन्हें हांक कर कभी स्कूल में छोड़ आते हैं, कभी अस्पताल में भेज देते हैं। यहां तक कि कई बार कलक्टर के दफ्तर की ओर भी हांक देते हैं।

गाय अगर बछिया देती है तो ठीक है, लेकिन बछड़ा देती है तो मुसीबत, क्योंकि अब किसान भी खेतों में बैल से हल नहीं चलाते! किराए पर ट्रैक्टर ले लेते हैं। नतीजतन, इन बछड़ों से भी छुटकारा पाना है। इसलिए किसी तरह उन्हें ट्रक में लाद कर गांव से आठ-दस किलोमीटर दूर छोड़ आते हैं। गोहत्या से संबंधित कानूनों की वजह से इनकी ब्रिकी भी नहीं होती। फिर गौरक्षकों के भय से इन्हें एक जगह से दूसरी जगह नहीं लाया या ले जाया जा सकता। गौशालाएं पर्याप्त नहीं हैं। जो हैं, उनका प्रबंध ठीक नहीं है। वे कभी गंदगी के कारण बीमारी से मरती हैं, तो कभी पूरा दाना-पानी न मिलने से मर जाती है। इस सबके मद्देनजर गौशाला अभ्यारण्य भी बनाया गया। पर जंगल में उनकी देखभाल कैसे हो। वहां से गायों के गायब होने की भी खबरें आईं। कहां गईं, किसी को पता नहीं चला।

इस मसले पर जिम्मेदारी पुलिस को भी जिम्मेवारी सौंपी गई और जिला कलक्टर को उत्तरदायी बनाया गया। जिस पुलिस को कानून व्यवस्था संभालनी थी, वह गायों के पीछे भागने को मजबूर होती है। हमारा देश कृषि प्रधान रहा है। कृषि मुख्य कारोबार है और हाल तक पशुपालन सहायक कारोबार होता था। गांवों में गाय, बैल, हल, तालाब पूरी खेती का आधार थे। बैल खेतों में हल चलाते थे। अनाज बैलगाड़ियों में मंडी तक ले जाया जाता था। बैलगाड़ी यातायात व्यवस्था का एक जरूरी हिस्सा थी। गाय सिर्फ दूध के लिए ही नहीं, बल्कि उसके गोबर से उपले बना कर ईंधन के रूप में उपयोग होता था। गोबर घर के फर्श की पुताई के काम आता। पता नहीं, आम लोग भैंस और बैल के गोबर के बारे में क्या राय रखते हैं! लेकिन गायों को घर के एक सदस्य के तौर पर देखा जाता रहा है।

मगर अब समय और परिवेश बदल गया है। कल तक जो हमारे लिए महत्त्वपूर्ण था और जिस पर जीवन निर्भर था, आज उसका महत्त्व नहीं रहा। खेत की जुताई के लिए बैलों की जरूरत नहीं रही। इसलिए बछड़े नहीं चाहिए। गाय दूध देना बंद कर दे तो उसे रखने की मुसीबत! उसका खर्च किसान कैसे उठाएं? गौरक्षा कानून और गोरक्षकों के भय से एक वर्ग का धंधा बिल्कुल चौपट हो गया। दूसरी तरफ बेकार पशुओं की संख्या गांवों में बढ़ती जा रही है, जो अब एक आपदा का रूप लेने लगी है। पशुओं के झुंड के झुंड खेतों में घुस कर फसल नष्ट कर देते हैं और किसान हताश होने के सिवा कुछ नहीं कर पाता।

इस समस्या का समाधान क्या हो, यह दूर-दूर तक नजर नहीं आता। गाय के आस्था से जुड़ जाने की वजह से दिनोंदिन समस्या और जटिल होती जा रही है। सड़कों पर घूमते पशुओं के कारण दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। किसानों की फसलें नष्ट हो रही है। प्रकृति में सदैव एक संतुलन रहता है।

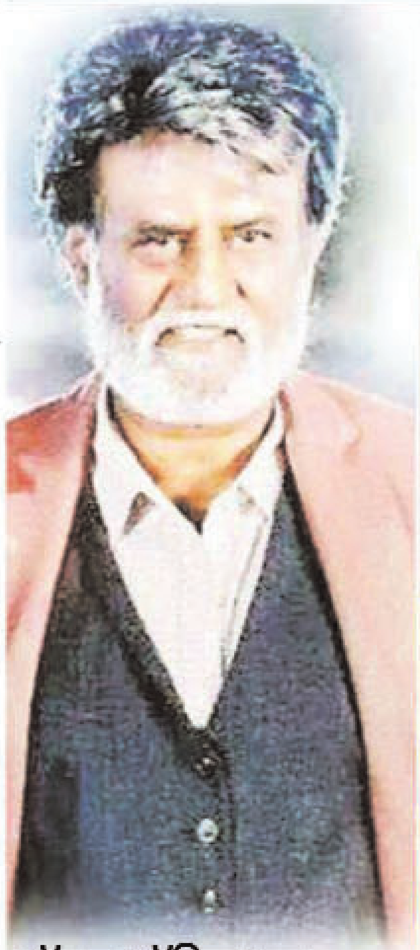

बॉक्स ऑफिस पर नहीं होगी वॉर 2-कुली के बीच टक्कर, ऋतिक की फिल्म को रास्ता देंगे रजनीकांत?

लोकेश कनगराज द्वारा निर्देशित रजनीकांत की आगामी एक्शन फिल्म कुली इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। इस फिल्म के जरिए अभिनय और निर्देशक की जोड़ी पहली बार साथ काम कर रही है और फैंस फिल्म की रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। वहीं, हाल ही में आई खबरों में बताया गया कि इस फिल्म की रिलीज ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर अभिनीत वॉर 2 से बॉक्स ऑफिस पर टकरा सकती है।

बॉक्स ऑफिस पर भिड़ेंगी फिल्में?

दोनों फिल्मों की रिलीज को लेकर सामने आ रहीं खबरों से संकेत मिलता है कि दोनों बड़े बैनर की फिल्में एक ही स्वतंत्रता दिवस सप्ताहांत रिलीज पर नजर गड़ाए हुए हैं। अगर टकराव होता तो इससे दोनों फिल्मों के बॉक्स ऑफिस प्रदर्शन पर काफी असर पड़ सकता था। हालांकि, अब फिल्मों को लेकर ताजा खबर है कि रिलीज की तारीखों के टकराव को टाल दिया गया है।

कब-कब रिलीज होंगी दोनों फिल्में

कई चर्चाओं के बाद दोनों फिल्मों के निर्माता फिल्मों को अलग-अलग सप्ताहांत पर रिलीज करने के लिए सहमत हो गए हैं। आंध्र बॉक्स ऑफिस डॉट कॉम के अनुसार, अगर वॉर 2 अगस्त 2025 में स्वतंत्रता दिवस के सप्ताहांत पर रिलीज होती है तो कुली उस दिन रिलीज नहीं होगी। रिलीज शेड्यूल पर आगे की बातचीत अभी भी जारी है।

फिल्म के कलाकार

इस बीच दावा किया गया है कि रजनीकांत की कुली के निर्माता पूरे भारत में फिल्म की सफल रिलीज के लिए वितरकों की तलाश कर रहे हैं। इसके साथ ही हाल ही में फिल्म की टीम ने निर्देशक लोकेश कनगराज का जन्मदिन सेट पर मनाया। इस जश्न की कई तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए। कुली में नागार्जुन अक्किनेनी, सत्यराज, श्रुति हासन, उपेंद्र, शौबिन शाहिर और अन्य सहित कई कलाकार हैं।

पूजा हेगड़े ने पहली बार तमिल फिल्म के लिए की डबिंग, रेट्रो में डबल धमाका करेंगी अभिनेत्री

पूजा हेगड़े कभी तेलुगु सिनेमा में सबसे ज्यादा पैसे पाने वाली अभिनेत्री थीं और उन्होंने कई बड़े अभिनेताओं के साथ काम किया था। हालांकि, जब से उन्होंने महेश बाबू की गुंटूर कारम छोड़ी है, तब से उन्हें टॉलीवुड में कोई नया प्रस्ताव नहीं मिला है, लेकिन तमिल सिनेमा में ऐसा नहीं है, जहां उन्हें लगातार बड़ी फिल्में मिल रही हैं। अब अभिनेत्री से जुड़ी नई खबर सामने आई है।

फिल्म की शूटिंग जल्द पूरी होगी

पूजा की अगली बड़ी फिल्म रेट्रो है, जिसमें सुपरस्टार सूर्या मुख्य भूमिका में हैं और कार्तिक सुब्बाराज द्वारा निर्देशित है। यह सूर्या के साथ पूजा हेगड़े की पहली फिल्म है और नेटफ्लिक्स ने एक्शन ड्रामा के ओटीटी अधिकार हासिल कर लिए हैं। कुछ महीने पहले रिलीज हुए टीजर में पूजा को पारंपरिक अवतार में दिखाया गया था और सूर्या के साथ उनकी केमिस्ट्री को काफी सराहा गया था। रिपोर्ट्स के अनुसार, रेट्रो में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसकी शूटिंग पूरी होने वाली है।

खुद डबिंग कर रही हैं पूजा

अभिनेत्री को लेकर ताजा अपडेट है कि पूजा हेगड़े ने पहली बार तमिल में रेट्रो में खुद के लिए डबिंग की है। इससे पहले उनकी आवाज को दूसरों द्वारा डब किया गया था। हाल ही में एक इंटरव्यू में पूजा हेगड़े ने इस बात पर हैरानी जताई कि कार्तिक सुब्बाराज ने उन्हें लीड रोल के लिए अप्रोच किया। उन्होंने बताया, जब कार्तिक सर ने मुझे रेट्रो का ऑफर दिया तो मैं चौंक गई। यह रोल मेरी आम इमेज से बिल्कुल अलग है और मुझे इस रोल के लिए चुने जाने पर बहुत गर्व महसूस हुआ। मुझे पता था कि मुझे इसके लिए अपना सब कुछ देना होगा।

इस दिन रिलीज होगी फिल्म

ज्योतिका और सूर्या द्वारा अपने होम बैनर तले निर्मित रेट्रो 1 मई, 2025 को स्क्रीन पर आने के लिए तैयार है। फिल्म को लेकर निर्देशक कार्तिक सुब्बाराज ने खुलासा किया कि सूर्या आखिरी आउटपुट से बहुत खुश थे और पूजा हेगड़े का प्रदर्शन भी उन्हें काफी पसंद आया। वहीं, अभिनेत्री की आने वाली फिल्मों के बारे में बात करें तो पूजा हेगड़े कुली में एक विशेष भूमिका निभाएंगी और कंचना 4 और जन नायकन में मुख्य भूमिका निभाएंगी। इसके अलावा उन्होंने है जवानी तो इश्क होना है नाम की एक बॉलीवुड प्रोजेक्ट भी साइन किया है।

'खूबसूरत' सी कॉमेडी फिल्म बनाना चाहते हैं विवेक रंजन

'द कश्मीर फाइल्स', 'वैक्सीन वॉर' हो या अपकमिंग 'द दिल्ली फाइल्स', निर्माता-निर्देशक विवेक रंजन अग्निहोत्री अक्सर गंभीर विषयों पर आधारित फिल्मों का निर्माण करते आए हैं। हालांकि, उन्होंने न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बातचीत में अपने दिल की बात कही। उन्होंने कॉमेडी फिल्म बनाने की इच्छा जाहिर की। कहा कि वह एक ऐसी कॉमेडी फिल्म बनाना चाहते हैं, जो साफ-सुथरी और फूहड़ता से दूर हो। विवेक रंजन अग्निहोत्री ने बताया कि वह गंभीर विषयों पर फिल्म बनाते रहे हैं लेकिन उन्हें कॉमेडी फिल्में देखना बहुत पसंद है और वह ऐसी फिल्म बनाने की भी इच्छा रखते हैं। उन्होंने कहा, मैं गंभीर फिल्में बनाता हूं। गंभीर इसलिए क्योंकि वे राजनीतिक पृष्ठभूमि की होती हैं लेकिन मैं खुद बहुत ज्यादा कॉमेडी, ड्रामा और थ्रिलर देखता हूं। मुझे कॉमेडी फिल्में पसंद हैं। दरअसल, यह मेरी जिंदगी का एक मिशन था कि मैं भारत की डेमोक्रेसी के तीनों स्तंभ सत्य, न्याय और जिंदगी पर एक फिल्म बनाऊं। 'ताशकंद फाइल्स' - सत्य, 'द कश्मीर फाइल्स' - न्याय पर थी और अब दो भाग में 'द दिल्ली फाइल्स- बंगाल चैप्टर' आ रही है, जिसका संबंध जिंदगी से है और अब यह पूरा भी हो चुका है। अग्निहोत्री ने बताया कि गंभीर विषयों पर फिल्में बनाने के बाद अब वह साफ-सुथरी कॉमेडी फिल्म बनाना चाहते हैं, जिसमें अश्लीलता या फूहड़ता न हो। उन्होंने कहा, आप पुराने समय की फिल्मों को ले लीजिए, मैं वैसी फिल्में बनाना चाहता हूं, मैं 'पड़ोसन', 'चलती का नाम गाड़ी', 'अंगूर' और ऋषिकेश मुखर्जी की फिल्म 'खूबसूरत' जैसी फिल्म बनाने की मंशा रखता हूं। द दिल्ली फाइल्स बनाने का विचार कैसे आया? इस सवाल पर उन्होंने कहा, पूरी दुनिया में हम ही एक ऐसी कम्युनिटी हैं, जो गुलामी की जंजीर में रहे और हमें प्रताड़ित किया गया। हमें हमेशा से सिखाया गया कि अपने गुस्से को कंट्रोल करना चाहिए, उसे प्रकट करने से बचना चाहिए और पूरी दुनिया यही सिखाने में लगी हुई है कि मानवता क्या है? लेकिन आज की पीढ़ी को बंगाल या डायरेक्ट एक्शन डे की सच्चाई से अवगत कराना जरूरी है। फिल्म में बंगाल की आज की स्थिति को भी दिखाया गया है। ये फिल्म सार्थक जरूर होगी क्योंकि देखकर लोगों के मन में ये जरूर आएगा कि बंगाल अलग नहीं, ये हमारे देश का ही एक हिस्सा है। विवेक रंजन अग्निहोत्री ने फिल्मों को लेकर दर्शकों की पसंद पर भी बात की। उन्होंने कहा, दर्शक के पास आज के समय में चॉइस कम है। हम जो फिल्में उन्हें देते हैं, वो उसी में से चयन करते हैं, फिर वो अच्छी हो या खराब। मुझे लगता है कि भारतीय कहानियों या आम लोगों से संबंधित विषय को आप जब अच्छे कलाकारों के साथ बनाएंगे तो वह चलेंगी ही। आप जब अजीब सी कहानियों को केवल बॉलीवुड कलाकारों के बच्चों के साथ ही बनाएंगे तो वह कहानी कैसे चलेगी? आम दर्शकों को अब ऐसी कहानियों का लोभ ही नहीं रह गया है।

वेंकट प्रभु की पैन इंडिया फिल्म में काम करेंगे अक्षय कुमार?

अक्षय कुमार हाल ही में स्काई फोर्स में नजर आए थे, जिसे प्रशंसकों और आलोचकों से मिलीजुली प्रतिक्रिया मिली थी। इस बीच अभिनेता को लेकर नई खबर सामने आई है कि एक नई पैन इंडिया फिल्म उनके हाथ लगी है। खबर है कि अक्षय अपनी अगली फिल्म के लिए निर्देशक वेंकट प्रभु के साथ सहयोग करने पर विचार कर रहे हैं। वेंकट प्रभु ने इससे पहले विजय के साथ द ग्रेटेस्ट ऑफ ऑल टाइम में काम किया था। रिपोर्ट्स के अनुसार, वेंकट ने हाल ही में अभिनेता को एक स्क्रिप्ट सुनाई और कहा जाता है कि वह कहानी से खुश हैं। अगर सब कुछ सही रहा और फिल्म पर बात बन गई तो जल्द ही इसकी शूटिंग भी शुरू हो जाएगी।

तमन्ना भाटिया ने बताया, क्यों खास है फिल्म 'ओडेला 2'

बॉलीवुड एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया ने अपनी अपकमिंग फिल्म 'ओडेला 2' के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि यह फिल्म सुपरनेचुरल बैकड्रॉप और आध्यात्मिक पहलू के साथ बनाई जा रही है। एक्ट्रेस ने यह भी कहा है कि यह फिल्म आज के समाज में आने वाली समस्याओं पर केंद्रित होगी। ओडेला 2 के बारे में बात करते हुए तमन्ना ने बताया, यह एक फैंटेसी मूवी है और इसे थिएटर में देखना अनुभव शानदार है। इसमें सुपरनेचुरल बैकड्रॉप और थोड़ा सा आध्यात्मिक पहलू भी है। इन सभी चीजों ने मुझे बहुत आकर्षित किया। अभिनेत्री ने कहा कि उन्हें ऐसी फिल्में पसंद हैं क्योंकि वे लार्जर दैन लाइफ होती हैं। उन्होंने कहा, मुझे इस तरह का सिनेमा पसंद है, क्योंकि बचपन में मुझे ऐसी फिल्में पसंद थीं, जो लार्जर दैन लाइफ होती हैं और आपको एक अलग दुनिया में ले जाती हैं। मुझे पता चला कि फिल्म का टीजर पहली बार काशी में लॉन्च किया गया था।

उन्होंने आगे बताया कि फिल्म आज के समय की समस्याओं पर केंद्रित है। एक्ट्रेस ने कहा, यह आज हमारे लिए कुछ हद तक प्रासंगिक है, यह उन मुद्दों और समस्याओं से संबंधित है, जिनका हम आज एक समाज के रूप में सामना करते हैं। यह अंत में आपको बहुत बड़ा और सशक्त संदेश देती है। तमन्ना ने कहा, मुझे लगता है कि फिल्मों को ऐसा ही करना चाहिए। उन्हें आपको उम्मीद देनी चाहिए, क्योंकि यही कारण है कि मैंने एक्ट्रेस बनने का निर्णय लिया। मैं एक्ट्रेस इसलिए बनी, क्योंकि इसने मुझे आशावादी बनाया। यह फिल्म भी लोगों को यही एहसास दिलाएगी।

बता दें कि ओडेला 2 अशोक तेजा द्वारा निर्देशित एक थ्रिलर फिल्म है। फिल्म में तमन्ना भाटिया, हेबाह पटेल, वशिष्ठ एन. सिम्हा भी मुख्य भूमिकाओं में हैं। इसके साथ ही नागा महेश, वामसी, गगन विहारी, सुरेंदर रेड्डी, भूपाल और पूजा रेड्डी भी अहम किरदारों में हैं।

ब्रह्मास्त्र 2 पर रणबीर ने दिया अपडेट

अमिताभ बच्चन, रणबीर कपूर और आलिया भट्ट की फिल्म ब्रह्मास्त्र- पार्ट वन- शिवा ने 2022 में बॉक्स ऑफिस पर 257.44 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। फिल्म के आखिर में इसके सीक्वल ब्रह्मास्त्र- पार्ट टू - देव की घोषणा की गई थी, लेकिन इसके बाद कोई खास अपडेट नहीं आया।

हाल ही में आलिया की बर्थडे पार्टी में रणबीर ने मीडिया से बातचीत के दौरान ब्रह्मास्त्र 2 को लेकर बड़ा खुलासा किया।

रणबीर ने कहा, ब्रह्मास्त्र 2 डायरेक्टर अयान मुखर्जी का लंबे समय से सपना रहा है। पूरी कहानी उनके दिमाग में तैयार है। अभी वह वॉर 2 में व्यस्त हैं। जैसे ही यह फिल्म रिलीज होगी, वह ब्रह्मास्त्र 2 की तैयारी शुरू करेंगे। उन्होंने आगे कहा, यह फिल्म जरूर बनेगी। हमने अभी तक इस फिल्म को लेकर ज्यादा कुछ नहीं कहा है, लेकिन जल्द ही इसके बारे में मजेदार घोषणाएं की जाएंगी।

संजय लीला भंसाली की भी जमकर तारीफ की

रणबीर ने अपनी दूसरी फिल्म लव एंड वॉर के बारे में भी बात की। यह संजय लीला भंसाली के साथ उनकी दूसरी फिल्म होगी। उनकी पहली फिल्म सांवरिया थी, जो 17 साल पहले रिलीज हुई थी। भंसाली के साथ काम करने का अनुभव साझा करते हुए रणबीर ने कहा, उनके साथ काम करना खास है। मैंने ऐसा मेहनती इंसान नहीं देखा। वह किरदार, भावनाएं, संगीत और भारतीय संस्कृति को बखूबी समझते हैं। उनके सेट पर काम थकाने वाला और लंबा होता है, लेकिन एक कलाकार के तौर यह संतुष्टि देता है। वह कला को निखारते हैं।

इन फिल्मों में दिखेंगे रणबीर

लव एंड वॉर में रणबीर के साथ विक्की कौशल भी लीड रोल में होंगे। यह फिल्म मार्च 2026 में रिलीज होगी। इसके अलावा रणबीर के पास रामायण और एनिमल 2 जैसे बड़े प्रोजेक्ट्स भी हैं। वहीं, आलिया भट्ट जल्द ही अल्फा में नजर आएंगी, जो इस साल क्रिसमस पर रिलीज होगी।

एक्टर आदर्श गौरव ने किया सामंथा रुथ प्रभु का शुक्रिया

फिल्म खो गए हम कहां में नजर आए एक्टर आदर्श गौरव साउथ इंडस्ट्री में डेब्यू करने के लिए तैयार हैं। वह एक हॉरर फिल्म में नजर आएंगे। हालांकि, फिल्म का नाम अभी तक सामने नहीं आया है। अब एक इंटरव्यू में आदर्श ने सामंथा रुथ प्रभु का शुक्रिया अदा किया है। उन्होंने कहा कि वह हमेशा से तेलुगु फिल्मों में काम करना चाहते थे, लेकिन समझ नहीं पा रहे थे कि कैसे शुरुआत करें। ऐसे में सामंथा ने उन्हें रास्ता दिखाया। आदर्श गौरव ने कहा, तेलुगु मेरी मातृभाषा है। मैं हमेशा से साउथ इंडस्ट्री में काम करना चाहता था, लेकिन समझ नहीं आ रहा था कि शुरुआत कैसे करूं। मुझे कोई सही रास्ता नहीं मिल रहा था। लेकिन जब मैं वेब सीरीज सिटाडेल की आफ्टर पार्टी में गया, तब मुझे वहां सामंथा रुथ प्रभु मिलीं। मैं उनसे कहा कि मुझे तेलुगु फिल्मों में काम करना है। लेकिन समझ नहीं आ रहा कि कैसे शुरू करूं?

आदर्श ने आगे कहा, उन्होंने मुझसे कहा था, तुम वहां जाकर कुछ मीटिंग्स क्यों नहीं करते? मैं तुम्हारी मदद करूंगी। इसके बाद उनके बिजनेस पार्टनर और मैनेजर ने मुझे बहुत सारे लोगों से मिलवाया और फिर मुझे साउथ की मूवी मिली। आदर्श की मानें तो उनकी फिल्म एक मल्टी-जॉनर स्क्रिप्ट है। उनका कहना है कि यह एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर और हॉरर फिल्म है, लेकिन इसके साथ ही यह एक डार्क कॉमेडी भी है।

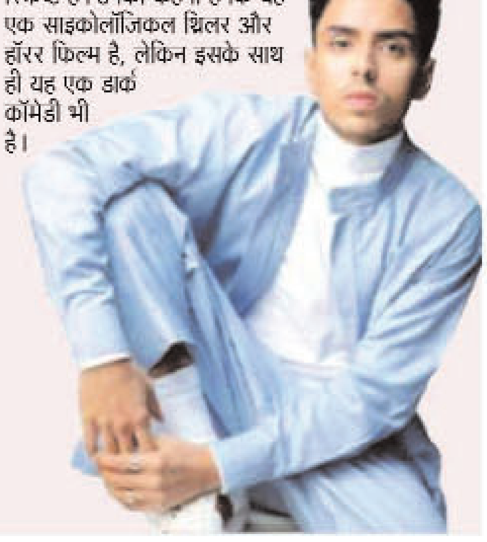

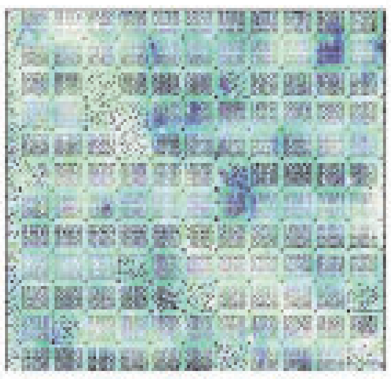

छोटे चिप में समा जाएंगी अब तक लिखी सारी किताबें

नीदरलैंड के वैज्ञानिकों ने दुनिया का सबसे छोटा हार्ड डिस्क बनाने का दावा किया है। सिंगल क्लोरीन एटम पर आधारित डाटा रिकॉर्ड के आकार वाले इस डिस्क में अब तक लिखी गई सारी किताबों को स्टोर किया जा सकता है। मौजूदा समय में हर दिन एक अरब गीगाबाइट से ज्यादा नए आंकड़ों का सृजन हो रहा है। इतनी बड़ी मात्रा में डाटा को स्टोर करने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक बिट जितना संभव हो सके उतना कम स्थान ले। डेल्फ्ट यूनिवर्सिटी के कैवेलाइन विभाग के वैज्ञानिकों ने यह उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। उन्होंने एक किलोबाइट (आठ हजार बिट्स) की मेमोरी बनाने में सफलता अर्जित की है। इसमें प्रत्येक बिट सिंगल क्लोरीन एटम की स्थिति को दर्शाता है। सैंडर ओट के मुताबिक इस स्टोरेज क्षमता से दुनिया भर में अब तक लिखी गई सारी किताबें एक छोटे से हार्ड डिस्क में स्टोर हो जाएंगी। उनके मुताबिक इस हार्ड डिस्क की स्टोरेज डेंसिटी 500 टेराबिट्स (एक लाख करोड़ बिट्स) प्रति वर्ग इंच है। यह मौजूदा हार्ड डिस्क की क्षमता से पांच सौ गुना ज्यादा है। वर्ष 1959 में प्रख्यात भौतिकविद रिचर्ड फिनमैन ने पहली बार इसकी कल्पना की थी। वैज्ञानिकों के दल ने एटम की सतह की जांच के लिए स्कैनिंग टनलिंग माइक्रोस्कोप (एसटीएम) का इस्तेमाल किया। सैंडर ओट ने बताया कि क्लोरीन एटम के छिद्र के ऊपर होने की स्थिति में उनकी संख्या एक मानी जाती है।

व्हाट्सएप पर ऐसे करें नए फॉन्ट का उपयोग

जो लोग व्हाट्सएप का प्रयोग करते हैं वे कई व्हाट्सएप ग्रुप में शामिल होते हैं। ऐसे में अगर वह अपनी चैट पर ग्रुप के अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं तो वह अपनी चैट का फॉन्ट बदल सकते हैं। इसके अलावा 'कोट' फीचर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

ऐसे बदलें अपना टैक्स्ट फॉन्ट : चैट के दौरान अगर फॉन्ट को बदलना चाहते हैं तो इसके लिए पहले अपने व्हाट्सएप पर किसी का चैट बॉक्स खोलें। इसके बाद जिस वाक्य या शब्द को बदलना चाहते हैं, उसके पहले तीन बार (`) टाइप करें और वाक्य या शब्द खत्म होने के बाद फिर इस कैरेक्टर को तीन बार (`) टाइप करें। ध्यान देने वाली बात यह है कि फोन के कीबोर्ड में (`) इस तरह के दो निशान मिलेंगे, अगर पहले वाले का इस्तेमाल करने से टैक्स्ट का फॉन्ट नहीं बदल रहा है तो आप दूसरे वाले (´) चिन्ह का प्रयोग कर सकते हैं। ध्यान रखें कि भेजने से पहले ही यह शब्द अपने आप बदल जाते हैं। यह फीचर उन लोगों को काफी पसंद आ सकता है जो अपने टैक्स्ट फॉन्ट को अन्य लोगों से अलग और रचनात्मक दिखाना चाहते हैं।

व्हाट्सएप में है 'कोट' फीचर : ग्रुप या फिर किसी चैट में आप किसी एक मैसेज पर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं तो 'कोट' फीचर का इस्तेमाल कर सकते हैं। बताते चलें कि व्हाट्सएप ने शुरू में lets users quote messages फीचर लॉन्च किया था। यह फीचर जवाब देने के लिए प्रयोग किया जाता है।

नाइटमेयर डिसऑर्डर: डराके गया सपना...!

कभी-कभार आने वाले डरावने सपने सामान्य बात हैं, मगर यदि यह नियमित सिलसिला बन जाए, तो इसे विकार माना जाता है, जिसका उपचार जरूरी है।

सपने सब देखते हैं, भले ही कुछ लोगों को जागने पर वे याद न रहते हों। नींद की अवस्था में हमारा मस्तिष्क जो वैकल्पिक यथार्थ या काल्पनिक फिल्म रचकर प्रदर्शित कर देता है, उसी को हम सपना कहते हैं। मसाला फिल्मों की ही तरह हमारे सपनों में एक्शन, इमोशन, रोमांस, कॉमेडी आदि सारे तत्व मौजूद रहते हैं- कुछ कम, तो कुछ ज्यादा। कभी-कभी ये सपने हॉरर फिल्म के रूप में भी सामने आते हैं। इन्हें हम डरावना सपना, बुरा सपना, नाइटमेयर या दुःस्वप्न कहते हैं। बच्चों को डरावने सपने आना आम बात है, जिसके कारण वे रोते हुए जाग जाते हैं। मगर ऐसा नहीं है कि वयस्कों को डरावने या बुरे सपने नहीं आते।

यदा कदा ऐसे सपने हर किसी को आते हैं। डर के मारे आपकी नींद टूट जाती है, आप हड़बड़ाकर उठ बैठते हैं, धड़कन व सांस तेज चलती हुई महसूस होती है। फिर, आपको एहसास होता है कि यह तो महज एक सपना था...। तब धीरे-धीरे आप सामान्य होने लगते हैं। मगर जब यह एक नियमित सिलसिला बन जाए, बार-बार डरावने सपने के कारण आपकी नींद टूट जाए, इन सपनों के खौफ के कारण आप सोने से ही कतराने लगें, तो इसे मानसिक विकार माना जाता है, जिसे उपचार की जरूरत होती है। इसे नाइटमेयर डिसऑर्डर या पैरासोम्निया कहते हैं।

पहचान और उपचार

यदि सप्ताह में एक से अधिक बार डरावने सपने आएं, यह सिलसिला लगातार बना रहे और इसके कारण आपकी नींद बार-बार बाधित हो तथा दोबारा नींद आना मुश्किल हो जाए, तो आपको डॉक्टर को दिखाना चाहिए। डॉक्टर पॉलीसोम्नोग्राफी नामक टेस्ट कराने को कह सकते हैं, जिसमें नींद के दौरान हृदय गति, मस्तिष्क तरंगों, ऑक्सीजन के स्तर, सांसों तथा आंखों व टांगों की हरकतों को रेकॉर्ड करने के लिए शरीर के विभिन्न हिस्सों में सेंसर लगाए जाते हैं। इस टेस्ट के परिणाम के आधार पर डॉक्टर उपचार तय कर सकते हैं।

यदि डरावने सपनों का कारण तनाव या डिप्रेशन है, तो उसका उपचार किया जाता है। यदि किसी दवाई के साइड इफेक्ट के कारण ऐसा हो रहा है, तो डॉक्टर वैकल्पिक दवाई बता सकते हैं। नशीले पदार्थ यदि कारण है, तो उनका सेवन बंद करने से दुःस्वप्नों की समस्या भी दूर हो सकती है। कुछ दुर्लभ मामलों में नाइटमेयर डिसऑर्डर को दूर करने के लिए दवाइयां भी दी जा सकती हैं।

नाइटमेयर डिसऑर्डर के कारण

इस डिसऑर्डर के कई कारण हो सकते हैं। एक प्रमुख कारण तो जीवन में हुई कोई आघात घटना हो सकती है। किसी वजह से यदि आप लगातार तनाव या डिप्रेशन में हैं या फिर चिंतित हैं, तो भी आपको नियमित रूप से बुरे सपने आ सकते हैं। शराब या ड्रग्स का सेवन भी दुःस्वप्नों का कारण बन सकता है, वहीं इनकी लत छूटने की प्रक्रिया के दौरान भी ऐसे सपने आ सकते हैं। इसी प्रकार किन्हीं दवाइयों के सेवन से या फिर उनका सेवन अचानक बंद कर देने से भी नाइटमेयर डिसऑर्डर की स्थिति बन सकती है। स्लीप एप्निया (नींद के दौरान सांस लेने में परेशानी से जुड़ी समस्या) से ग्रस्त लोग भी नियमित रूप से डरावने सपनों के शिकार हो सकते हैं। कई बार लगातार पर्याप्त नींद से वंचित रहने वाला व्यक्ति जब सोता है, तो ऐसे सपनों का शिकार हो जाता है। इसके अलावा नियमित रूप से डरावनी फिल्में देखने या डरावनी कहानी पढ़ने वाले लोगों को भी ऐसे सपने आ सकते हैं। सोने से ठीक पहले भारी भोजन करना भी इसका कारण बन सकता है।

सोशल मीडिया के जरूरी कायदे

दफ्तर में काम करने वाले कर्मचारी, कॉलेज जाने वाले युवा और महिलाएं सभी सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। इस प्लेटफॉर्म पर आपकी छवि कैसी बने यह आपके ही हाथ है। कुछ सामान्य बातों का ध्यान रखकर आप अपनी सकारात्मक छवि बना सकते हैं। यह मुश्किल काम नहीं।

अपनी ही अपनी चीजें

कुछ लोग खुद से जुड़ी हर छोटी से छोटी बात सोशल मीडिया पर शेयर करते हैं। यह आपसे जुड़े लोगों के लिए चिढ़ाने वाली होती है। कई बार लोग यह बताते हैं कि हम फलां रेस्टोरेंट गए या अब हवाई जहाज से सफर कर रहे हैं और ऐसी ही फालतू बातें।

प्रतिक्रिया में लेट न हों

अक्सर लोग ई-मेल या सोशल मीडिया पर भेजे गए किसी मैसेज का जवाब कई कई दिनों बाद देते हैं। यह अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ता। 60 मिनट में जवाब देना अच्छा माना जाता है। 30 मिनट में अगर आप जवाब देते हैं तो इससे अच्छा कुछ नहीं। जवाब केवल जरूरी मसलों में ही दें, फिजूल की बातचीत में न उलझें।

हैशटैग का ध्यान

अगर आपकी सभी पोस्ट के साथ हैशटैग का चिह्न रहता है तो यह ठीक बात नहीं। इसलिए अतिमहत्वपूर्ण चीजों या विचार के साथ ही हैशटैग चिह्न का उपयोग करें। कुछ लोग हर छोटी-मोटी बात में हैशटैग का उपयोग करते हैं जो इसका महत्व कम कर देती है।

80 काम, 20 हंसी

आपकी पोस्ट की 80 प्रतिशत चीजें ऐसी हों जो दूसरों के लिए किसी न किसी तरह उपयोगी हों। 20 प्रतिशत चीजें आप सिर्फ आनंद के लिए पोस्ट कर सकते हैं लेकिन ज्यादा बड़ा हिस्सा तो किसी बात पर दूसरों की राय जानने या किसी विषय को उनके साथ साझा करने जैसी चीजों का होना चाहिए।

सीधा संवाद

अपने से जुड़े लोगों के साथ सीधा संवाद रखें। उन्हें सीधे संबोधित करके कोई बात कहें। किसी भी व्यक्ति से बात करते हुए उसे सम्मान के साथ संबोधित करें। बातचीत में संबोधन का बड़ा फर्क होता है और ये संबंधों को मजबूत करते हैं।

ट्वीट में जवाब की जगह

जब भी किसी विषय पर ट्वीट करें तो उसमें सामने वाले से आने वाले जवाब की जगह भी हो। एकतरफा संवाद होकर न रह जाए। इस तरह के खुले सिरे वाली बात में नए लोग भी जुड़ पाएंगे।

बिना अनुमति टैग नहीं

यह सामान्य व्यवहार का हिस्सा तो होना चाहिए लेकिन यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि कई लोग इसी कारण आपकी रिपोर्ट कर देते हैं या आपको अपनी फ्रेंड सूची से हटा देते हैं। वैसे भी बिना अनुमति किसी को टैग करना कहां ठीक है।

स्रोत का उल्लेख

जब कोई पंक्ति या गद्य का कोई टुकड़ा आप पोस्ट करते हैं या उसे ट्वीट करते हैं तो उसके स्रोत का उल्लेख करना चाहिए। कई लोग दूसरों की पंक्तियों को बिना नाम के पोस्ट करते हैं जो कि अच्छा नहीं है। अगर आप संदर्भ का उल्लेख करते हैं तो आपकी छवि बेहतर होगी।

नियमित रहें

कुछ लोग सोशल मीडिया पर लंबे गैप के बाद सक्रिय होते हैं और ऐसे में बीच में क्या हुआ वे इससे चूक जाते हैं। इसलिए तय करें कि आप दिन के किसी एक खास समय सोशल मीडिया पर रहेंगे या फिर हर दो दिन में एक बार अपना अकाउंट चेक करेंगे।

मौसम भले बदले लेकिन खानपान पर हो ध्यान

बचपन के दिन मौज-मस्ती और शैतानी वाले होते हैं। इन्हीं दिनों में शरीर का विकास भी होता है, इसलिए बच्चों के खानपान पर समुचित ध्यान देना बहुत जरूरी हो जाता है। मौसम में जब बदलाव हो रहे हों तब इस संदर्भ में अभिभावकों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

खासकर बारिश में जब खाद्य पदार्थों से संक्रमण के कारण सबसे ज्यादा समस्याएं पैदा होती हैं। कारण है इस मौसम में चटपटा, तला-भुना फास्ट फूड खाने के लिए बच्चों का ज्यादा मन होना। अक्सर बच्चे स्कूल जाने से पहले नाश्ता नहीं करते और स्कूल जाकर कैंटीन में खाना खाते हैं। यह वैसे भी कोई अच्छी बात नहीं है, ऊपर से बारिश की भिन्न-भिन्न ऐसे में तमाम किस्म के इंफेक्शन को सीधा बुलावा देती है।

नाश्ता तो करना ही है

जाइडस हॉस्पिटल्स डॉ. आरती गुप्ता बताते हैं कि मौसम कोई भी हो, बच्चों को सुबह का नाश्ता करने के लिए अवश्य उत्साहित करें। ज्यादातर बच्चे स्कूल जाने से पहले अच्छी तरह नाश्ता नहीं करते। यह सेहत के लिए बुरी बात है। बच्चे को दिन में तीन मुख्य आहार और दो से तीन बार स्नैक्स जरूर देने चाहिए। नेट्स या स्नैक्स आदि फल और ड्राई फ्रूट्स हो सकते हैं जबकि हम बिजी मांएं बच्चों को खुश करने के लिए जंक फूड और फास्ट फूड देकर जिम्मेदारी पूरी कर लेती हैं।

फोन से डाटा शेयरिंग के लिए इस एप का करें इस्तेमाल

फोन से मल्टीमीडिया फाइल्स को साझा करने के लिए 'शेयरइट एप' का प्रयोग किया जाता है मगर कभी-कभी एक ही जगह पर कई लोगों के शेयरइट एप ऑन होते हैं और वे आपके फोन पर भी दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में डर लगता है कि कहीं फाइलें किसी और व्यक्ति के साथ साझा न हो जाएं। ऐसी समस्या से बचने के लिए आप Shoot एप का प्रयोग कर सकते हैं जिसमें फाइलें भेजने के लिए विशेष कोड (क्यूआर कोड) का इस्तेमाल करना होता है और यह कोड हर एक फोन के लिए अलग-अलग होता है। शूट एप्लीकेशन का प्रयोग करने के लिए दोनों फोन में इस एप का होना जरूरी है। साथ ही फोन में इंटरनेट कनेक्शन ऑन होना भी जरूरी है ताकि क्यूआर कोड जेनरेट किया जा सके। इस एप को फोन में इंस्टॉल करने के बाद आपको केवल कुछ चरणों को अपनाना होता है उसके बाद आपका डाटा दूसरे यूजर के साथ साझा हो जाएगा।

फाइल चयन के बाद अपना क्यूआर कोड : शूट एप को डाउनलोड करने के बाद एप में 'सेंड' और 'रिसीव' का विकल्प मिलेगा। शेयरइट की तरह अगर आप फाइल सेंड करना चाहते हैं तो इसके लिए सेंड पर क्लिक करें। उस पर क्लिक करने के बाद फोन की गैलरी ओपन होगी। इसमें से आप जिन भी फाइल, फोटो या वीडियो को दूसरे यूजर के साथ साझा करना चाहते हैं उनका चयन करें। फाइल का चयन करने के बाद क्यूआर कोड का विकल्प दिखने पर आ जाएगा। जैसे ही क्यूआर कोड दूसरे फोन में स्कैन करेंगे वैसे ही चयन की गई फाइलें दूसरे फोन में ट्रांसफर हो जाएंगी।

ऐसे करें फाइल को रिसीव : इसके बाद आप जिस फोन में फाइल और वीडियो प्राप्त करना चाहते हैं तो शूट एप में फिर वहां 'रिसीव' बटन पर क्लिक करें। रिसीव बटन पर क्लिक करते ही क्यूआर कोड स्कैन करने का विकल्प आएगा और उसे स्कैन करने के बाद आपके डिवाइस में फाइल आनी शुरू हो जाएगी।

फलों के रस के साथ ना ले दवाई

दवाओं को अगर पानी के साथ न लेकर जूस के साथ लेने की आदत है, तो इसे सुधार लीजिए, क्योंकि इससे दवाओं का असर कम हो सकता है. अंगूर का रस शरीर में कुछ दवाओं को सोखने की क्षमता कम कर सकता है, वहीं संतरा और सेब के जूस शरीर में दवाओं को सोखने की क्षमता कम कर उनके असर को कम कर सकते हैं.

अंगूर का रस रक्तधारा में जाने वाली दवाओं की मात्रा कम कर देता है. डॉक्टरों ने कोलेस्ट्रॉल, उच्च रक्तचाप और दिल की धड़कन की दवा लेने वाले मरीजों को अंगूरों का रस न पीने की चेतावनी दे रखी है.

शोध में पता चला है कि रस में मौजूद तत्व दवा के सोखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं. कुछ रसायन दवा को ले जाने वाले तत्वों को बाधित कर देते हैं, जिससे दवा के सोखने की क्षमता कम हो जाती है, जबकि कुछ रसायन द्वारा मेटाबॉलिज्म एंजाइम जो आम तौर पर दवा को तोड़ने का काम करते हैं, उन्हें बाधित कर देते हैं. आम तौर पर पानी के साथ दवा लेना सुरक्षित होता है. एक घूंट के बजाय एक गिलास बेहतर होता है, क्योंकि यह दवा को घुलने में मदद करता है. ठंडे पानी की बजाए गर्म पानी ज्यादा बेहतर रहता है.

रेसिपी

फलाहारी कच्चे केले की पकौड़ी

सामग्री

200 ग्राम सिंघाड़े का आटा, 4-5 कच्चे केले, 2 हरी मिर्च, सेंधा नमक (व्रत में खाने वाला), अदरक का टुकड़ा, घी अथवा मूंगफली का तेल (पर्याप्त मात्रा में तलने के लिए)।

विधि

सबसे पहले केले के दो टुकड़े करके छिलके सहित उबाल लीजिए। ध्यान रखें कि केले ज्यादा गलने न पाएं। ठंडे होने पर इनके छिलके उतार कर गोल गोल टुकड़े काट कर रख लें। टुकड़े अब सिंघाड़े आटे का घोल तैयार करें। इसमें अपने स्वादानुसार हरी मिर्च, अदरक काट कर डालें तथा अंदाज से नमक मिला दें। घोल को गाढ़ा ही रहने दें। मोयन के लिए थोड़ा सा घी अथवा तेल घोल में डाल दें। एक कड़ाही में घी/तेल गरम कर लें और केले के टुकड़े को घोल में लपेट कर घी में छोड़ते जाएं। दोनों तरफ से कुरकुरे होने तक सेंक लें। अब इन पकौड़ों को इमली की मीठी और हरी चटनी के साथ पेश करें।

कच्चे केले की लजीज टिकिया

सामग्री

5 कच्चे केले, 250 ग्राम उबले आलू, 30 ग्राम कुट्टू का आटा, अदरक, 2-3 हरी मिर्च, लाल मिर्च पाउडर एक चम्मच, 2 चम्मच भुना जीरा पाउडर, आधा चम्मच अमचूर पाउडर, 100 ग्राम पनीर, घी तलने के लिए, सेंधा नमक या नमक स्वादानुसार, हरा धनिया, पाव कटोरी किशमिश।

विधि

पहले कच्चे केले को उबालें, छीलें और ठंडा होने के लिए रख दें। अब धनिया, हरी मिर्च व अदरक को बारीक काट लें। उबले केले और आलू का मिश्रण तैयार करके अदरक, हरी मिर्च और हरा धनिया मिला लें। इसमें कुट्टू का आटा, सेंधा नमक, मिर्च और जीरा पाउडर मिलाएं और छोटी छोटी गोलियां बनाकर रख लें। अब एक दूसरे बर्तन में पनीर को लेकर किशमिश, नमक, अदरक, मिर्च और धनिया मिलाएं। इस मिश्रण को केले के गोले में भरकर टिक्की की तरह हाथ से दबा लें। अब अपनी सुविधानुसार इसे नॉन स्टिक तवे पर या डीप फ्राई कर गरमागरम टिकिया को हरी और मीठी चटनी के साथ पेश करें।

नोट: आप चाहें तो ऊपर से फलाहारी आलू की सेंव भी बुरका सकती हैं।

सावन में घर लाएं ये चीजें

हर काम में मिलेगी सफलता

हिंदू धर्म में सावन साल का सबसे पवित्र महीना माना जाता है। इन दिनों में भगवान शिव की आराधना का सबसे खास दिन होते हैं। इन दिनों में शिव जी की पूजा करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। साथ ही उनकी कृपा आपके ऊपर हमेशा बनी रहती है।

इसी तरह घर पर शिव जी से संबंधित चीजें रखने से नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है। साथ ही हर काम में आपको सफलता मिलती है और घर में कभी भी धन की कमी नहीं होती है। सावन के इस माह में घर लाएं ये चीजें। जिससे भगवान शिव भी आपके घर में अपनी कृपा बरसाते रहें। जानिए इन चीजों के बारे में। साथ ही जानिए इन चीजों को किस जगह रखने से अधिक लाभ मिलेगा।

त्रिशूल : घर में त्रिशूल रखना बहुत ही शुभ माना जाता है। इसको घर में रखने से नकारात्मक ऊर्जा घर पर प्रवेश नहीं कर पाएगी। इसलिए इसे घर के हॉल में तांबा या फिर चांदी का त्रिशूल बनवा कर स्थापित करें।

भस्म : भगवान शिव का इसे श्रृंगार माना जाता है। इसके बिना भगवान की पूजा पूर्ण नहीं होती है। इसलिए इसे भगवान शिव की मूर्ति के साथ जरूर रखें।

तांबे के लोटे में पानी भरकर रखें : अगर आप चाहते हैं कि आपके घर में सुख-शांति सभी प्यार से रहें, तो घर के उस स्थान पर लोटे में जल भरकर रखें। जहां पर घर के सभी सदस्य अधिक समय बिताते हों।

रुद्राक्ष : कहा जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। जिसे घर में रखना बहुत ही शुभ माना है। इसे अपने घर के सबसे बड़े सदस्य या फिर मुखिया के कमरे में रखें।

डमरू

अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा हर काम में सफलता प्राप्त करे। साथ ही उसके ऊपर में किसी भी तरह की नकारात्मक ऊर्जा न आए, तो इसके लिए बच्चों के कमरे में डमरू रखें।

निजी अस्पताल में मरीजों बड़ी संख्या में भीड़ स्टाफ का टोटा भटकते मरीज

अस्पताल में स्टाफ की दादागिरी गुंडागिरी, मरीज को कहा बाहर भगाओ*कैसे हुई हिम्मत

न सुरक्षा के इंतजाम न सुविधाएं, ड्रिफ और इजेंकश लगाने को साढ़े तीन घंटे इधर उधर भटकते रहे, परेशान हो रहे मरीज

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। शहर में निजी अस्पतालों की बात करें तो सैकड़ों की संख्या में संचालित हो रहे हैं, रोड गलियों में भरमार लगी हुई है। कौन सही कौन गलत है इस पर कारवाही करने तथा नकेल कसने वाला विभाग सुस्त है,साथ कारवाही का तंत्र भी फैल हो गया है। अगर इनकी सही तरीके एवं बिना दबाव से जांच की जाए तो कई सारे सुराग और फर्जीवाड़ा हाथ लगाने की संभावना है। कई अस्पताल में स्टाफ की कमी तो कई पर डॉक्टरों का टोटा है,वही कई स्थानों प्रेक्टिस करने वाला भी क्लिनिक चला रहा, यह सब विभाग और सरकार की देहन तथा मेहरबानी है। बीती रात शनिवार को एक ऐसा मामला सामने आया है कि पढ़कर आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। मामला सुमेरपुर निजी अस्पताल देवल पटेल का है जहां स्टाफ की कमी का टोटा है। इसके चलते मरीजों को परेशानी ही नहीं,बल्कि उनको कई प्रकार की यातनाएं,दादागिरी, गुंडागर्दी का दंश झेलना पड़ा। शनिवार के दिन सुबह करीब 10.00 बजे मरीज पुखराज कुमावत अपने परिजनों का शहर के जाने माने निजी देवल पटेल अस्पताल अपने सिर का इलाज करवाने गए थे, उनके सिर दो दिन से ज्यादा पैन हो रहा था।मरीज कुमावत ने अस्पताल के सारे सिस्टम को फॉलो किया,सबसे पहले डॉ आशीष मोदी की ओपीडी ली,उनका19वाँ नंबर था,फिर भी दूसरे एप्रोज वाले लोग बीच में घुस रहे थे। नंबर आते ही डॉक्टर मोदी ने जांच की मेरी पुरानी फाइल को देखा, दवाई,और ड्रिफ,इंजेक्शन लिखे। अब अस्पताल का नजारा कुछ और ही था कि भीड़ रेलमरेल स्टाफ की कमी से मरीजों को खूब परेशानी हुई। जब कुमावत के इलाज की बात आई तो वो ऊपर नीचे चक्कर काट कर पूरी तरह थक गए। ड्रीप और इंजेक्शन लगाने के लिए करीब 3.30 घंटे तक भटकते रहे। स्टाफ ने भी उनको ऊपर नीचे नचाने में कई कमी नहीं रखी। अंत में तंग आकर जोर से चिल्लाते हुए दवाई को रिटन किया, तब वहां खड़े दूसरे स्टाफ ने कहा कि रुको आप बीमार हो में करवाता हूं, उन्होंने मरीज को जीरो के ड्रेसिंग रूम में लेटाया,कुछ ही देर में दूसरे स्टाफ ने वहां से उठने का मना किया तो स्टाफ प्रवीण कुमार ने तूतडाके से बततमीजी करते हुए बाहर भगाने के लिए कहा,यह मरीजों के साथ में कैसा व्यवहार है। डबल इंजन की सरकार में रोड पर नहीं अब अस्पतालों में भी गुंडा राज पनप गया है,और विभाग भी इनके नतमस्तक होकर बैठ गया है। गरीबों एवं दिहाड़ी मजदूरी करने वाले लोगों पर रोज कारवाही होती है। मगर इन कमाऊपूतों पर किसी भी प्रकार की कारवाही नहीं हो रही है।प्रदेश सरकार नींद में सोई हुई है। अस्पतालों में मरीजों की चिंता नहीं है, उनको पैसों की चिंता है,मरीज भले ही मरे या भटकते रहे,उन्हें कोई लेना-देना नहीं है।

लापरवाही की हदः स्टाफ का टोटा, भटकते हैं मरीज

मामला इस प्रकार है कि बीते दिन शनिवार को पुखराज कुमावत के सिर में ज्यादा दर्द होने के कारण वे लगभग 10.00 बजे वे और उनकी पत्नी,पुत्र के साथ निजी अस्पताल देवल पटेल सुमेरपुर पहुंचे उन्होंने अपनी ओपीडी ली जब नंबर आया तब वे डॉक्टर के पास गए, उन्होंने बीमारी के हिसाब से ड्रिफ और एजेंकश लिखा। लगाने के लिए नर्सिंग स्टाफ से मिले उन्होंने बोला खाट खाली नहीं है तो दूसरे माले पर भेजा वहां भी खाट खाली नहीं। फिर उन्होंने तीसरे माला का बोला वहां गए वहां पर एक वार्ड में एक ही स्टाफ था। उसने बोला आधा घंटा लगेगा, फिर आधा घंटे का और कहा। बाद में खाने खाने गया,अंतिम में दो घंटे के बाद ऊपर हाथ किए कि स्टाफ नहीं मैनेजर से मिलो। वहां से बीमार आदमी हताश होकर नीचे आया स्टाफ की कमी बताई। फिर बीमार व्यक्ति ने इलाज नहीं कराने का निर्णय लिया, और थोड़ी बेस बजी हुई। तब वहां मौजूद स्टाफ ने वापस दवाई मंगवाई और इलाज के लिए वार्ड में ले गए खाट खाली नहीं होने के कारण मरीज पुखराज को ड्रेसिंग रूम सुलाया और कहा कि इसको कोई नहीं उठाए,तब थोड़ी देर बाद में प्रवीण नाम का स्टाफ आया उन्होंने वहां से हटने का बोला तो परेशान मरीज जिद पर अड़ गए कि में नहीं हटूंगा में एक मरीज हु में साढ़े तीन घंटे से इलाज के लिए भटक रहा हूं। तब स्टाफ ने आवेश में आकर दादागिरी गुंडागिरी से दूसरे स्टाफ को कहां की इनको यहां किसने लेटाया है, उसको बाहर भगाओ। मतलब उनको स्टाफ कमी का भूत लगा हुआ था जो मरीज पर उतारा। बात यह है कि एक पत्र के साथ ऐसा घिनौना व्यवहार किया गया है, तो आम जनता के साथ में क्या बितती होगी । नियम और सेवाओं की सारी हदें पार ली। हॉस्पिटल का नाम भले ही बड़ा हो, लेकिन वहां की व्यवस्थाएं लाचार हैं।

सरकार एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग कार्यवाही करे

सुमेरपुर शहर के ओने कोने में छोटे बड़े अस्पताल और क्लिनिक संचालित हैं,कोई रोड पर तो गलियों में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की मिलीभगत से धड़ल्ले से चल रहे हैं, तो कोई राजनयिक दबदबा से बेखौफ चांदी कूट रहे हैं। कोई नियमों से तो कोई बिना नियमों के विपरीत चालू है। किस अस्पताल में कितने डॉ हैं, कितना नर्सिंग स्टाफ है, कितने कंपाउंडर हैं, चपरासी कितने है, शहर में निजी अस्पताल कितने विभाग के पास कोई जानकारी नहीं है। आपको बता दें कि कई अस्पतालों में चपरासी इलाज कर रहे हैं। मतलब डॉ एक भगवान का रूप होता है,अब वह रूप खत्म हो गया और राक्षक का रूप ले लिया है। सुमेरपुर में आज दिन तक किसी भी निजी अस्पताल में विभाग ने कोई कारवाही नहीं की है, इस पर सरकार एवं विभाग ने मौन धारण कर लिया है। कई अस्पतालों में सुविधा नहीं है तो स्टाफ की कमी है। मरीजों की हमेशा भीड़ लगी रहती है। सरकार एवं विभाग से मेरी अपील है कि 10दिन के अंदर कारवाही अम्ल में लाए,वरना अस्पताल के बाहर अनशन कर धरना दिया जाएगा, जिसकी तमाम जिम्मेदार विभाग और प्रशासन की होगी।

छोटा नहीं बड़ा मामला

आपको बता दें कि यह मामला हॉस्पिटल के मालिक और डॉक्टर व स्टाफ के लिए भले छोटा होगा,लेकिन बीते कल 7 जून शनिवार को जो मरीज के साथ घटना क्रम हुआ है बहुत बड़ा एवं चिंताजनक और निंदनीय है। इस प्रकार स्टाफ द्वारा हॉस्पिटल में लापरवाही बरतना मरीज के चेहत को खतरा है। अंत में मरीज को भटकते भटकते चार घंटे बीत चुके और स्टाफ से बात करते करते अचानक शक्कर आ गई वे नीचे गिर पड़ा तब दौड़ दौड़ कर डॉक्टर व स्टाफ आया तथा आनन फानन में इलाज शुरू किया। अब यहां सोचने वाली बात है कि खाट कैसे और कहा से खाली हुआ। अस्पताल प्रशाशन पर कई सवाल उठ रहे हैं। पत्रकार पुखराज के साथ शनिवार को जो घटना हुई उसने सबको हिलाकर कर रख दिया। मामला इस प्रकार से था कि निजी अस्पताल देवेंद्र पटेल सुमेरपुर में सर दर्द का इलाज करवाने गया था जो डॉ आशीष मोदी ने जांच कर ड्रिप और इंजेक्शन के साथ दवाई लिखी। तीन से चार घंटे इलाज कराने के लिए भटकना पड़ा। कभी एक तो तीन कभी पांच तो जीरो फ्लोर ऊपर नीचे जाकर परेशान हो गया। नर्सिंग स्टाफ से बात करने पर कोई बोलता है ऊपर जाओ कोई कहता है नीचे जाओ ऊपर नीचे जाकर तंग आ गया है,और वक्त पर स्टाफ ने बोला हमारे पास खाट खाली है और ना स्टाफ है। बाद में धीरे-धीरे कर मामला तुल पकड़ता गया,और मामला गर्म हो गया। अस्पताल में कई घंटों तक बैठने एवं भटकने से आहत होकर और हॉस्पिटल की नकारा व्यवस्था को देखते हुए मैंने दवाई को रिटर्न की। तब जाकर एक दूसरा स्टाफ आया उन्होंने कहा रुको मैं इलाज करवाता हूं, उन्होंने मुझे ड्रेसिंग रूम में सुलाया, तब एक एक प्रवीण नाम का दूसरा स्टाफ आया। उसने बोला इसको भगाओ। अब मजे की बात तो यह है कि एक स्टाफ मरीज को इज्जत से बेड पर सुलाता है, दूसरा भगाता है। यह कहने पर मामला खूब गर्मा गया।

कुचामन पुलिस की अवैध शरण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

डीडवाना(निसं.)। कुचामन पुलिस द्वारा अवैध शराब के विसरुद्ध प्रभावी कार्यवाही शराब बनाने हेतु करीब 500 लीटर अवैध स्प्रीट जब्त। अवैध शराब के कुल पव्वे 816 पब्बे जब्त। शराब के परिवहन हेतु उपयोग के लिए खड़ी गाड़ीयां पीकअप गाड़ी बोलेरा, मोटरसाईकिल को किया जब्त। कुचामन सिटी बाड़ा मालिक चेनाराम को किया गिरफ्तार। घटना में समिलित शख्स मनोहर बावरी को डिटेन कर अनुसंधान किया जा रहा है। डीएसटी टीम व थाना कुचामन पुलिस टीम की रही कारवाई नेमीचन्द खारिया (आर पी. एस) अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कुचामन व अरविन्द विश्नोईवृताधिकारी वृत कुचामनसिटी के निकटतम सुपरविजन में सतपाल सिंह नि.पु, थानाधिकारी कुचामन के नेतृत्व में अवैध शराब के विरूद्ध कार्यवाही करते हुये कुचामन के पास गांव रसाल में स्रीट से शराब बनाने वालो के विरूद्ध की गई प्रभावी कार्यवाही।

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम सचिन से बदलकर सचिन जाट रख लिया है। अतः भविष्य में मुझे सचिन जाट के नाम से ही जाना, पुकारा व पहचाना जावे। सचिन जाट पुत्र गिरधारी लाल, वार्ड न. 11, तालाब की ढ़ाणी, मंगलूणा, तहसील सीकर, (सीकर) राज. 332318

आम सुचना

यह कि मेरे व्यवहारी Aditya Birla Capital Ltd. जिला चुरू से श्री साजीद पिता श्री अहमद हुसैन निवासी वार्ड न. 08, चमन बास जिला चुरू यह कि उक्त सम्पत्ति जो कि वार्ड न. 16, रेलवे स्टेशन से सुभाष चोक रोड तहसील एंवम जिला चुरू स्थित है जिसके सम्पत्ति का कुल कुलिया क्षेत्रफल 29.73 वर्गमीटर मयनिर्मित मकान को Aditya Birla Capital Ltd. मे बंधक रखकर ऋण सुविधा प्राप्त करना चाहते है । यह कि उक्त सम्पत्ति श्री रघुनाथ के नाम पर पटटा विलेख संख्या-29 दिनांक 14.03.1935 को राजस्व कमिश्नर राजश्री बीकानेर द्वारा जारी किया गया तत्पश्चात श्री रघुनाथ का स्वर्गवास को हो गया तत्पश्चात श्री रघुनाथ के स्वर्गवास होने के पश्चात श्री रघुनाथ जी के वारिस श्री बालाराम, श्री किशनलाल, श्री बिरजलाल, श्री रंगलाल, श्री रेखाराम जी बने तत्पश्चात श्री बालाराम का स्वर्गवास होने के पश्चात श्री बालाराम जी के वारिस श्री भगवानदास एंवम श्री मुरारी जी को उक्त सम्पत्ति के 1 / 5 हक व हिस्सा प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री भगवानदास एंवम श्री मुरारी ने उक्त सम्पत्ति 1 / 5 हक व हिस्सा का बंटवारा कर उक्त सम्पत्ति के 1/2 के हक व हिस्सा श्री मुरारी एंवम 1 / 2 हक व हिस्सा के श्री भगवानदास को प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री मुरारी का स्वर्गवास दिनांक 03.03.2010 को हो गया तत्पश्चात श्री मुरारी के वारिस श्री गिरधारी पिता स्व. श्री मुरारी, श्री विनोद कुमार पिता स्व. श्री मुरारी, श्री शंकरलाल पिता स्व. श्री मुरारी, एंवम श्री दिलिप शर्मा पिता स्व. श्री मुरारी, एंवम श्री रवि प्रकाश पिता स्व. श्री मुरारी उक्त सम्पत्ति 1 / 2 हक व हिस्सा प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री रवि प्रकाश पिता स्व. श्री मुरारी का स्वर्गवास हो गया तत्पश्चात श्री रवि प्रकाश पिता स्व. श्री मुरारी के वारिस श्री पंकज शर्मा पिता स्व. श्री रवि प्रकाश एंवम श्री तनुज कुमार पिता स्व. श्री रवि प्रकाश श्रीमति विजयलक्ष्मी पत्नी स्व. श्री रवि प्रकाश एंवम मेघा शर्मा पिता स्व. श्री रवि प्रकाश को उक्त सम्पत्ति 1/2 हिस्से में से 1 / 5 हक व हिस्सा प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री गिरधारी पिता स्व. श्री मुरारी श्री विनोद कुमार पिता स्व. श्री मुरारी, श्री शंकरलाल पिता स्व. श्री मुरारी, एंवम श्री दिलिप शर्मा पिता स्व. श्री मुरारी, श्री पंकज शर्मा पिता स्व. श्री रवि प्रकाश एंवम श्री तनुज कुमार पिता स्व. श्री रवि प्रकाश, श्रीमति विजयलक्ष्मी पत्नी स्व. श्री रवि प्रकाश एंवम मेघा शर्मा पिता स्व. श्री रवि प्रकाश ने उक्त सम्पत्ति 1 / 10 हिस्से हक व हिस्सा को रजि. विक्रय पत्र द्वारा दिनांक 12.07.2023 को श्री साजीद पिता श्री अहमद हुसैन को विक्रय कर दिया यदि किसी भी शक्स, नाते रिश्तेदार बैक, सरकारी, गैर सरकारी संस्था, वित्तीय संस्थान को इस सम्पत्ति के टाईटल, स्वामित्व सम्बन्ध में किसी प्रकार की आपत्ति हो तो इस आम सुचना के प्रकाशन के 07 दिन के भीतर मय दस्तावेज मुझसे सम्पर्क करे अन्यथा वाद गुजरने मयाद किसी भी शक्स की आपत्ति आयी तो वह मेरे व्यवहारी के मुकाबले बेजां बेअसर व शुन्य समझी जावेगी
दिनांक- 03.06.2025
मो. न. - 7737556500

वास्ते - गिरिराज सोनी एण्ड एसोसिएटस
गिरिराज सोनी एडवोकेट
ऑफिस नम्बर - 21, प्रथम मंजिल,
गोविन्द मार्केट, सिल्वर जुबली रोड, सीकर (राज.)

आम सुचना

यह कि मेरे व्यवहारी Aditya Birla Capital Ltd. जिला चुरू से श्री साजीद पिता श्री अहमद हुसैन निवासी वार्ड न. 08, चमन बास जिला चुरू यह कि उक्त सम्पत्ति जो कि वार्ड न. 16, रेलवे स्टेशन से सुभाष चोक रोड तहसील एंवम जिला चुरू स्थित है जिसके सम्पत्ति का कुल कुलिया क्षेत्रफल 29.73 वर्गमीटर मयनिर्मित मकान को Aditya Birla Capital Ltd. मे बंधक रखकर ऋण सुविधा प्राप्त करना चाहते है । यह कि उक्त सम्पत्ति श्री रघुनाथ के नाम पर पटटा विलेख संख्या - 29 दिनांक 14.03.1935 को राजस्व कमिश्नर राजश्री बीकानेर द्वारा जारी किया गया तत्पश्चात श्री रघुनाथ का स्वर्गवास को हो गया तत्पश्चात श्री रघुनाथ के स्वर्गवास होने के पश्चात श्री रघुनाथ जी के वारिस श्री बालाराम, श्री किशनलाल, श्री बिरजलाल, श्री रंगलाल, श्री रेखाराम जी बने तत्पश्चात श्री बालाराम का स्वर्गवास होने के पश्चात श्री बालाराम जी के वारिस श्री भगवानदास एंवम श्री मुरारी जी को उक्त सम्पत्ति के 1 / 5 हक व हिस्सा प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री भगवानदास एंवम श्री मुरारी ने उक्त सम्पत्ति 1 / 5 हक व हिस्सा का बंटवारा कर उक्त सम्पत्ति के 1/2 के हक व हिस्सा श्री मुरारी एंवम 1 / 2 हक व हिस्सा के श्री भगवानदास को प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री भगवानदास का स्वर्गवास दिनांक 24.07.2000 को हो गया तत्पश्चात श्री भगवानदास के वारिस श्री प्रकाश चन्द्रशर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास श्री कैलाश शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास, श्री हरिश शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास, एंवम श्री राजेश शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास, एंवम श्री श्यामलाल शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास उक्त सम्पत्ति 1 / 2 हक व हिस्सा प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री श्यामलाल शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास का स्वर्गवास हो गया तत्पश्चात श्री श्यामलाल शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास के वारिस श्री उमेश शर्मा पिता स्व. श्री श्यामलाल शर्मा एंवम श्रीमति कमलेश शर्मा पत्नी स्व. श्री श्यामलाल शर्मा एंवम पूनम शर्मा पिता स्व. श्री श्यामलाल शर्मा को उक्त सम्पत्ति 1/2 हिस्से मे से 1 / 5 हक व हिस्सा प्राप्त हुआ तत्पश्चात श्री प्रकाश चन्द्रशर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास, श्री कैलाश शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास, श्री हरिश शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास, एंवम श्री राजेश शर्मा पिता स्व. श्री भगवानदास, श्री उमेश शर्मा पिता स्व. श्री श्यामलाल शर्मा एवम श्रीमति कमलेश शर्मा पत्नी स्व. श्री श्यामलाल शर्मा एंवम पूनम शर्मा पिता स्व. श्री श्यामलाल शर्मा ने उक्त सम्पत्ति 1 / 10 हिस्से हक व हिस्सा को रजि. विक्रय पत्र द्वारा दिनांक 02.06.2023 को श्री साजीद पिता श्री अहमद हुसैन को विक्रय कर दिया यदि किसी भी शक्स, नाते रिश्तेदार बैक, सरकारी, गैर सरकारी संस्था, वित्तीय संस्थान को इस सम्पत्ति के टाईटल, स्वामित्व सम्बन्ध में किसी प्रकार की आपत्ति हो तो इस आम सुचना के प्रकाशन के 07 दिन के भीतर मय दस्तावेज मुझसे सम्पर्क करे अन्यथा वाद गुजरने मयाद किसी भी शक्स की आपत्ति आयी तो वह मेरे व्यवहारी के मुकाबले बेजां बेअसर व शुन्य समझी जावेगी ।
दिनांक- 03.06.2025
मो. न. - 7737556500

वास्ते - गिरिराज सोनी एण्ड एसोसिएटस
गिरिराज सोनी एडवोकेट
ऑफिस नम्बर - 21, प्रथम मंजिल,
गोविन्द मार्केट, सिल्वर जुबली रोड, सीकर (राज.)

विराटनगर विधानसभा में "संकल्प से सिद्धि" कार्यशाला आयोजित,

विधायक कुलदीप धनखड़ ने मोदी सरकार की उपलब्धियों को बताया ऐतिहासिक

जयपुर टाइम्स

विराटनगर(निसं.)। विधानसभा क्षेत्र में शनिवार को "संकल्प से सिद्धि तक" अभियान के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन निजी होटल महरोज में किया गया। यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 11 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। कार्यशाला में बतौर मुख्य वक्ता भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता व विराटनगर विधायक कुलदीप धनखड़ ने केंद्र सरकार की जनहितकारी योजनाओं और ऐतिहासिक निर्णयों को विस्तारपूर्वक रखा। उन्होंने कहा कि - प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने विगत 11 वर्षों में अथक परिश्रम और दूरदृष्टिपूर्ण योजनाओं से भारत को विश्व मंच पर गौरवशाली स्थान दिलाया है। आज भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। 2011-12 में देश की गरीबी दर 27.1% थी, जो अब घटकर 2022-23 में केवल 5.3% रह गई है। विधायक धनखड़ ने कांग्रेस शासन काल के भ्रष्टाचार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि – 2008 स्पेक्ट्रम घोटाला, 2012 कोयला घोटाला और हेलीकॉप्टर सौदों में हुए भ्रष्टाचार जैसे सैकड़ों मामलों ने देश की छवि को धूमिल किया। आज उसी का परिणाम है कि कांग्रेस अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है।उन्होंने कहा कि "ऑपरेशन सिंदूर" जैसे सैन्य अभियानों से प्रधानमंत्री ने शत्रु देशों को करारा जवाब दिया है। "लखपति दीदी" योजना और महिला आरक्षण जैसे निर्णयों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त कर समाज के प्रत्येक वर्ग तक विकास की रोशनी पहुंचाई गई है। कार्यक्रम में जयपुर उत्तर भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश बादलीवाल, वंदे गंगा जल अभियान के जिला संयोजक मुकेश गोयल, विराटनगर विधानसभा प्रभारी सुरेन्द्र चौधरी, जिला किसान मोर्चा अध्यक्ष सरदार जी यादव सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। विधायक धनखड़ ने आह्वान किया कि सभी कार्यकर्ता संकल्प से सिद्धि तक के लक्ष्य को बूथ स्तर तक पहुंचाएं ताकि विकसित भारत 2047 का सपना साकार हो सके।

रुमा देवी ने सामाजिक कार्यक्रम में भाग लिया

जयपुर टाइम्स

रावतसर(निसं.) अंतरराष्ट्रीय फैशन डिजाइनर एवं नारी शक्ति पुरस्कार विजेता डॉ रूमा देवी ने रविवार को ग्राम पंचायत रावतसर में सामाजिक कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर डॉ रूमा देवी ने गांव के बड़े बुजुर्गो एवं महिलाओं से मुलाकात की और उन्होंने ग्रामीणों से बच्चों को ज्यादा से ज्यादा शिक्षित करने का आह्वान किया और शिक्षा पर जोर देने की बात कही। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नशे से सभी दूर रहें और नशामुक्ति पर जोर दे। उन्होंने कहा कि नशामुक्ति हेतु जो भी संभव होगा हमारा फाउंडेशन हर समय तैयार है। इस मौके पर उन्होंने सभी से पुरानी संस्कृति जीवित रखने का आह्वान किया और युवाओं से बुजुर्गों के बताएं मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

मातृ शक्ति की देश व समाज में महत्वपूर्ण भूमिका- कसाना

निशुल्क सिलाई, ब्यूटी पार्लर व मेहंदी प्रशिक्षण शिविर का किया शुभारम्भ

कोटपूतली(निसं.) कस्बे के आदर्श नगर ढ़ाणी दीपावली स्थित शिव मंदिर में रविवार 08 जून को सैनी विकास संगठन संस्था (रजि.) के तत्वाधान में माता सावित्री बाई फूले सर्वसमाज महिला उत्थान समिति द्वारा निशुल्क सिलाई, ब्यूटी पार्लर व मेहंदी प्रशिक्षण शिविर का पूर्व संसदीय सचिव रामस्वरूप कसाना के मुख्य आतिथ्य में उद्घाटन किया गया। इस मौके पर कसाना ने कहा कि मातृ शक्ति की देश व समाज में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिये यह प्रशिक्षण बेहद उपयोगी सिद्ध होगा, जो महिला स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता में मील का पत्थर साबित होगा। महिलायें प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी आय का साधन बनाने एवं अन्य महिलाओं को प्रशिक्षित कर सकेंगी। शिक्षाविद् देवीसहाय सैनी ने कहा कि महिलाओं को सिलाई, ब्यूटी पार्लर जैसे अनेक हुनर सीखने चाहिये। जिससे आर्थिक स्थिति तो मजबूत होती ही है, साथ ही अपनी दिनचर्या को भी व्यस्त रखा जा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष बबलू बबेरवाल ने की। इससे पूर्व अतिथियों ने माता सावित्री बाई फूले की प्रतिमा के समक्ष द्वीप प्रज्जवलन एवं पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस मौके पर अतिथियों का माला व साफा पहनाकर एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर स्वागत अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में सीमा सैनी विराटनगर व गिरिराज प्रसाद गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किये। संचालन वरिष्ठ अध्यापक सुभाष चन्द सैनी ने किया। इस दौरान महिला जिलाध्यक्ष सुनीता सैनी, संतोष सैनी, नीलम सैनी, सुशीला सैनी, प्रशिक्षिका चंद्रकला सैनी, सुरेश सैनी, रामचंद्र सैनी, रामसिंह सैनी, संतोष सैनी, ख्यालीराम सैनी, सीताराम पार्षद, कैलाश चंद सैनी, महेश पत्रकार, आनंद सैनी, संजय दहिया, रामरतन सैनी समेत अन्य मौजूद रहे। सैनी विकास संगठन संस्था (रजि.) के तत्वाधान में माता सावित्री बाई फूले सर्वसमाज महिला उत्थान समिति द्वारा महिलाओं के लिये निशुल्क सिलाई एवं ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण शिविर को लेकर शनिवार को विभिन्न जगह प्रचार-प्रसार किया गया।

श्री नारायण गौशाला में किया श्रमदान

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। कस्बे के सांभर-फुलेरा रोड़ स्थित श्री नारायण गौशाला में गौशाला अध्यक्ष पवन कुमावत सहित अन्य लोगों ने श्रमदान कर साफ सफाई की। इस दौरान गौशाला परिसर में पक्षियों के लिए जलपात्र (परिंडे) भी लगाये गये।

प्ररूप- 10.
नियम 6 (7) देखिए

प्राधिकृत अधिकारी कार्यालय, नगरपालिका मण्डल, सांभर लेक

क्रमांकः नपासा/2025 / 603 दिनांक 6./06/25

लोकसूचना

श्री दिनेश कुमावत पुत्र श्री नारायण लाल कुमावत निवासी- पाँच बत्ती चौराहा, फुलेरा ने इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का गैर कृषिक प्रयोजनों के लिये भू उपयोग परिवर्तन हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया हैं, अर्थात्

कं.सं.	जिले का नाम	ग्राम का नाम	खसरा नम्बर	रकबा	चाहा गया उपयोग
1	जयपुर	लालपुरा	2203, 2204/1, 3232/2202, 3234/2204	कुल किता 04 रकबा 0.6260 हैक्टेयर	कुल किता 04 रकबा 0.6260 हैक्टेयर भूमि को आवासीय में रूपान्तरण हेतु ।

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोगार्थ (आवासीय भू-रुपान्तरण) हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है, तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा।

उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जायेगा।
यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 6/6/25 को जारी की गयी।

प्राधिकृत अधिकारी
नगरपालिका मण्डल सांभर लेक

24 कर्मचारी सस्पेंड होने के बाद रोडवेज-डिपो में चरमराई व्यवस्था

4 रूट पर एक-एक बस का संचालन ठप, छुट्टियां रद्द

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं रोडवेज डिपो इन दिनों एक बड़े प्रशासनिक संकट से जूझ रहा है। फर्जी हाजिरी लगाकर वेतन लेने के गंभीर मामले में गुरुवार 5 मई को डिपो के मुख्य प्रबंधक सहित 24 अधिकारियों और कर्मचारियों को निलंबित कर दिया गया है। राजस्थान परिवहन निगम की चेयरमैन शुभ्रा सिंह के निर्देश पर की गई इस कार्रवाई के बाद पूरे डिपो का संचालन चरमरा गया है। चीफ मैनेजर स्तर तक की गई इस बड़ी कार्रवाई ने डिपो में अफरा-तफरी का माहौल है। झुंझुनूं डिपो से प्रतिदिन लगभग 77 बसें 33 हजार किलोमीटर की दूरी तय करती हैं, लेकिन वर्तमान में चार महत्वपूर्ण रूट पूरी तरह से बंद कर दिए गए हैं। अन्य रूटों पर भी संचालन किसी तरह से चालू है, जिससे यात्रियों को भारी असुविधा हो रही है। सभी बुकिंग खिड़कियां बंद कर दी गई हैं, बुकिंग स्टाफ से ही बस संचालन से जुड़े कार्य करवाए जा रहे हैं। निलंबन के बाद झुंझुनूं डिपो में केवल एक नई नियुक्ति की गई है। गिरिराज स्वामी को मुख्य आगार प्रबंधक के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई है, लेकिन उन्होंने अभी तक कार्यभार ग्रहण नहीं किया है। इस कारण डिपो की रोजमर्रा की गतिविधियां और निर्णय प्रक्रिया ठप पड़ी हुई है। झुंझुनूं डिपो पर प्रशासनिक गतिविधियां प्रभावित हुई हैं। इसका असर आम यात्रियों पर पड़ रहा है।

कर्मचारियों में डर का माहौल, जिम्मेदारों की तलाश जारी

इस कार्रवाई के बाद रोडवेज कर्मचारियों में हड़कंप मचा हुआ है। सभी कर्मचारी अब समय पर उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं और रिकॉर्ड को अपडेट रखने पर जोर दे रहे हैं। डिपो प्रशासन भी बाकी शाखाओं के रिकॉर्ड खंगालने में जुटा है ताकि भविष्य में इस तरह की स्थिति दोबारा न बने।

रोडवेज चेयरमैन शुभ्रा सिंह ने पांच साल का हिसाब मांगा

इस बड़े घोटाले के खुलासे के बाद राजस्थान परिवहन निगम की चेयरमैन शुभ्रा सिंह ने 2020 से अब तक झुंझुनूं डिपो में कार्यरत सभी प्रबंधकों की सूची तलब की है। इनमें से 16 अधिकारियों को सीसीए नियमों के तहत चार्जशीट देने का निर्णय लिया गया है। शुभ्रा सिंह ने स्पष्ट किया कि इन अधिकारियों की लापरवाही से ही यह घोटाला संभव हुआ है, इन पर सख्त कार्रवाई होगी।

नए स्टाफ की तत्काल आवश्यकता

कार्यवाहक चीफ मैनेजर बद्री प्रसाद के अनुसार- बचे हुए स्टाफ को डबल ड्यूटी में लगाकर संचालन किया जा रहा है। यह स्थिति ज्यादा दिन तक बनाए रखना संभव नहीं है। यदि जल्द ही बाकी रिक्त पदों पर नई नियुक्तियां नहीं हुईं, तो पूरे डिपो का संचालन ठप हो सकता है।

आपातकालीन छुट्टियां रद्द, कर्मचारियों पर दोहरा बोझ

डिपो प्रशासन ने सभी कर्मचारियों की आपातकालीन छुट्टियां रद्द कर दी हैं। अतिरिक्त कार्यभार देकर कुछ कर्मचारियों से दोहरी जिम्मेदारी निभवाई जा रही है। कई ऐसे कर्मचारी जो पहले केवल कार्यालयीन काम करते थे, अब उन्हें फील्ड में भी उतारा गया है।

आम यात्रियों को हो रही भारी परेशानी

इस पूरे घटनाक्रम का सीधा और गंभीर असर आम यात्रियों पर पड़ा है। डिपो के चार रूट बंद होने से रोजाना सैकड़ों यात्रियों को ऑप्शनल साधन खोजने पड़ रहे हैं। निजी वाहनों का किराया अधिक होने के कारण आमजन को आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ रहा है।

मेघवाल समाज संघ की कार्य समिति गठित

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मेघवाल समाज संघ झुन्झनू की विधानसभा कार्यकारिणी के गठन के लिए रविवार को मण्डावा स्थित होटल दहलीज़ रिसोर्ट में मुकेश झाझडिया, सरपंच, मोज़ास की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सर्वसम्मति से मुकेश झाझडिया को संघ का मण्डावा विधानसभाध्यक्ष बनाया गया। उपाध्यक्ष मनोज घोटड, मांगेराम दहिया, राधेश्याम भूकल, संरक्षक बनवारी लाल पहाडसरिया, सुभाष चंद्र सेवदा, जगदीश प्रसाद महरिया, कार्यकारिणी सदस्य ओमप्रकाश भूकल, राधेश्याम कावलिया, सरदार सिंह कुहाडू को बनाया गया। इस मीटिंग में संरक्षक बलवीर सिंह काला जिलाध्यक्ष सुभाष मेघवाल, संगठन महासचिव डॉ. विकास काला, अजय काला, डा. अशोक गर्वा, अजय काला कोषाध्यक्ष डॉक्टर अशोक गर्वा अनिल बाडेटिया उपस्थित रहे। मंच का संचालन डॉक्टर विकास काला ने किया। मीटिंग में ओम प्रकाश चंदगीराम, सुदर्शन महरिया, सुल्तान सिंह, सरदार सिंह , राजेंद्र प्रसाद आर्य, विकास चंद्र, अमरचंद भूकल विकास सेवदा उपस्थित रहे। विधानसभा अध्यक्ष को कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया।

जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए प्रभात फेरी निकाली

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। राज्य सरकार की ओर से चलाए जा रहे वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत रविवार सुबह नगर परिषद झुंझुनूं की ओर से प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य आमजन में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। प्रभात फेरी की शुरुआत नगर परिषद कार्यालय से हुई, जो जेपी जानू राजकीय विद्यालय परिसर तक निकाली गई। इस अवसर पर विधायक राजेन्द्र भांबू, अभियान के जिला संयोजक विशंभर पूनिया, एसडीएम हवाई सिंह यादव व प्रमोद जानू उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत में जन समूह को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई । विधायक राजेन्द्र भांबू ने हरी झंडी दिखाकर प्रभात फेरी को रवाना किया गया। प्रभात फेरी में नगर परिषद के अधिकारी, कर्मचारी, स्वयं सहायता समूह की महिलाएं, मुख्यमंत्री शहरी रोजगार योजना के अंतर्गत कार्यरत महिला एवं पुरुष श्रमिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

विवाहिता ने ससुराल पक्ष पर लगाए जमीन बेचने के आरोप

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। मलसीसर थाना क्षेत्र के नाथपुरा गांव में एक महिला ने अपने ससुराल पक्ष पर गंभीर आरोप लगाए हैं। रविवार को अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ मलसीसर थाने पहुंची पीड़िता सुभीता पत्नी कैलाश सिंह ने पुलिस को अपनी व्यथा सुनाई। महिला का आरोप है कि उसकी पैतृक संपत्ति को, जिस पर न्यायालय का स्थगन आदेश (स्टे) भी है, उसके ससुर हुकमसिंह और परिवार के अन्य सदस्यों ने बेच दिया है। जब उसने इसका विरोध किया, तो उसके साथ मारपीट की गई और उसे घर से निकाल दिया गया। पीड़िता ने पुलिस प्रशासन पर कार्रवाई में लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए कहा, "मेरे पास कोर्ट का स्टे ऑर्डर है, फिर भी मेरी जमीन बेच दी गई। जब मैंने विरोध किया तो मेरे साथ मारपीट की गई और मुझे बच्चों सहित घर से निकाल दिया गया। थानाधिकारी के अनुसार महिला की शिकायत पर कार्रवाई की जा रही है। पुलिस टीम को मौके पर भेजकर स्थिति का जायजा लिया जाएगा, इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

खाटू श्याम बाबा का कीर्तन कर किया गुणगान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। नगर पालिका के निकट महाजन पंचायत भवन में पूनम - सोनम केजड़ीवाल की ओर से श्री श्याम कीर्तन व अनेक धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन धर्मानुरागी आचार्या उमा हेमाणी के सानिध्य में आयोजित किया गया। स्थानीय महिला कलाकारों ने बाबा के भजन कीर्तन सुना कर श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया। हारे का सहारा महिला मण्डल की सदस्यों की ओर से ज्योति जागृत की गई। तथा खाटू श्याम बाबा के भजन सुना कर गुणगान किया। उन्होंने मेरे सिर पर रख दो बाबा, तीन बाण धारी लाख दातार, मोर छड़ी वाले के भजनों पर बाबा भक्त झूमते नजर आए। इस मौके पर कलाकारों ने श्री राधाकृष्ण भाव नृत्य की मनोहारी प्रस्तुत की। इसके बाद प्रसाद वितरित किया गया। इस दौरान प्रमुख उमा हेमानी, सरोज मोदी, संगीता टेलर, मन्जू सैनी, सन्जू सैनी, माया कालोया, कोमल शाह, दिव्या अग्रवाल सहित अनेक महिला श्रद्धालु मौजूद रहे।

सड़क निर्माण की मांग को लेकर ग्रामीणों ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। सिरियासर कलां के ग्रामीणों ने विधार्थी भवन झुंझुनूं जाकर मण्डावा विधायक रीटा चौधरी से मुलाकात कर डामरीकरण सड़क बनवाने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने ज्ञापन सौंपा। कांग्रेस मण्डल अध्यक्ष समसाद खान सिरियासर ने बताया कि ठाकुर जी मंदिर से ढिगाल की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर जो गांव को स्टेट हाईवे से सीधा जोड़ता है। वहीं इस रास्ते पर बसे काश्तकारों को आगमन करते वक्त ग्रेवल सड़क के गहरे खड्डों के रूप में काफी परेशानियों से गुजरना पड़ता हैं। गांव के साथ साथ आसपास के गावों से भी लोगों का इसी रास्ते से आनाजाना बना रहता हैं। इसी संदर्भ में रविवार को गांव के गणमान्यजन ने सैकड़ों ग्रामीणों के हस्ताक्षर किए आवेदन को मण्डावा विधायक को सौपा।जिसको विधायक ने स्वीकार करते हुए जल्द ही ग्रामीणों के साथ साथ राहगीरों को इस रास्ते रुपी समस्या का समाधान डामर सड़क बना कर किया जाएगा। इस दौरान अनील कुमास लोयला, वार्ड पंच सुभाष, इकरार खान, मनीष कुमार, अरमान खान, लेफ्टिनेंट जावेद खान, अरमान खान, संदीप, दीपक, प्यारेलाल तेतरवाल, विशंभर पुनिया व मण्डल अध्यक्ष समसाद खान सिरियासर कलां मौजूद रहे।

पंचायत समिति वार्ड 14 का उपचुनाव, 60.77 प्रतिशत मतदान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। पंचायत समिति मंडावा वार्ड 14 के उपचुनाव का मतदान रविवार को शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। वही उपचुनाव ईवीएम के विपरीत वैलेट पेपर से करवाया गया। शाम को 5 बजे मतदान समाप्ति तक 60.77 प्रतिशत मतदान हुआ और 5 हजार 617 मतदाताओं में से 3 हजार 414 मतदाताओं ने अपने मत का प्रयोग किया। चुनाव रिटर्निंग अधिकारी व एसडीएम मुनेश कुमारी ने बताया कि पंचायत समिति वार्ड 14 उपचुनाव का मतदान रविवार को हुआ और सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक मतदाताओं ने वोट डाले। मतदान को लेकर कुल 8 मतदान केंद्र बनाए थे। हेतमसर में तीन, भारू में तीन व कुमास में दो मतदान केंद्र बनाए गए थे। सुबह 10 बजे तक 15.70 प्रतिशत मतदान हुआ और 882 मतदाता अपने मत का प्रयोग कर चुके थे। दोपहर 12 बजे तक 32 प्रतिशत मतदान हुआ जिसमें 1795 मतदाताओ ने अपने वोट डाले थे तथा दोपहर बाद 3 बजे तक 2709 मतदाताओं ने अपने मत का प्रयोग किया और 48 प्रतिशत वोटिंग हो चुकी थी। शाम 5 बजे मतदान समाप्ति तक 60.77 प्रतिशत मतदान हुआ। पंचायत समिति सदस्य उपचुनाव को लेकर वार्ड 14 में कुल 5 हजार 617 मतदाता थे जिसमें 2 हजार 903 पुरुष व 2 हजार 714 महिला मतदाता शामिल थे। उपचुनाव की मतगणना सोमवार को सुबह 9 बजे से पंचायत समिति मंडावा सभागार में शुरू होगी। पंचायत समिति सदस्य के लिए भाजपा से राहुल कुमार कुमावत व कांग्रेस से सुशील कुमार बुडानिया चुनाव मैदान में अपना भाग्य आजमा रहे हैं।

तीसरे दिन की कथा के बाद नानी बाई के मायरे का समापन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। गौशाला संचालक महंत योगीदास महाराज ने बताया कि ब्रह्मचारी गणेश चैतन्य महाराज की ओर से गणेश सर्वदर्शन अखाड़ा मंडल समिति के सभी संतो की तरफ से संत योगीदास महाराज का चादर ओढ़ाकर सम्मान किया। महंत स्मृति नाथ महाराज, महंत ओम नाथ महाराज, महेशनाथ महाराज, रामानुजाचार्य पीठ लोहार्गल धाम अवधेशाचार्य महाराज, अश्विनी आचार्य महाराज, महंत देवनाथ, कृष्ण नाथ महाराज, अनिल नाथ महाराज, विद्या नाथ महाराज, हेमंत दास महाराज, गोपाल दास महाराज, विशंभर दास महाराज के पावन सानिध्य में, कृष्णा किशोरी व्यास की ओर से नानी बाई का मायरा तीसरा दिन की कथा जिसमें नरसी जी ने भगवान से प्रार्थना कर केदार का राग गाया तो भगवान सांवरा सेठ नानी बाई को कुएं में कूदने से बचाने आए और मायरा भरने की कहीं तब नानी बाई प्रसन्न होकर अपने घर गई। भगवान रुक्मणी जी सहित 56 करोड़ का मायरा लेकर और बड़े धूमधाम से संतो के साथ नरसी जी के पोते ने चुनरी औढाई। आए हुए सभी अतिथि संतों का सम्मान किया गौ रक्षा दल के सभी सदस्यों का सम्मान किया गया। हजारों की संख्या में माता बहनों ने कथा का रसपान किया। नानी बाई का मायरा कार्यक्रम के मुख्य यजमान महेश भार्गव, मानसिंह शेखावत की धर्मपत्नी सज्जन कंवर चिराना, अजीत सिंह, रणजीत सिंह की ओर से मुख्य यजमान के रूप में पूजा की गई।

मृत बताकर केस बंद करवाया, ड्रग्स तस्करी में पकड़ा तो सामने आई सच्चाई

अजमेर (निसं.)पुलिस ने पैरोल लेकर फरार हुए कैदी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी इकबाल सिंह फरारी के दौरान मादक पदार्थों की तस्करी में पकड़ा गया और वर्तमान में मोगा (पंजाब) जेल में बंद था। पुलिस जांच के दौरान रिश्तेदारों ने आरोपी का फर्जी डेथ सर्टिफिकेट पेश कर दिया था। सिविल लाइन थाने के एएसआई हरिराम यादव ने बताया कि 6 अक्टूबर 2022 को जेल प्रहरी रामकुमार की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया था। आरोपी इकबाल सिंह ने पैरोल प्राप्त की थी। पंद्रह दिन की पैरोल अवधि समाप्त होने के बाद वह जेल नहीं लौटा। इसके बाद पुलिस ने जांच की तो परिजन ने उसका डेथ सर्टिफिकेट पेश कर दिया। इसके बाद पुलिस ने मामला बंद कर दिया।

डॉक्टर बनने का सपना लेकर 15 दिन पहले कोटा आया था अभिजीत, सीढ़ियों से फिसलकर हुई मौत

जयपुर टाइम्स

(निसं.)।कोटा को इंजीनियरिंग और मेडिकल परीक्षाओं का हब माना जाता है. दूर-दूर से छात्र यहां अपने सपने पूरे करने आते हैं. लेकिन पिछले कुछ समय से शैक्षणिक नगरी में छात्रों की आत्महत्या के बढ़ते मामले चिंता का विषय बन गए हैं. इसी क्रम में आज यानी रविवार को एक छात्र की अचानक मौत की खबर ने पूरे इलाके में हड़कंप मचा दिया है. मामला जिले के विज्ञान नगर में नीट की कोचिंग ले रहे छात्र का है. जिसकी अचानक सीढ़ियों से गिरने से मौत हो गई. घटना की सूचना मिलने पर विज्ञान नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची. और बताया कि छात्र सीढ़ियों से गिर गया था और उसे उपचार के लिए निजी अस्पताल लाया गया था, लेकिन इलाज के दौरान डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. पुलिस ने फिलहाल छात्र के मौत की सूचना उसके परिजनों को दे दी है. साथ ही परिजनों के कोटा आने के बाद मृतक छात्र के शव का पोस्टमार्टम करवाया जाएगा. पुलिस ने बताया कि छात्र की पहचान मध्य प्रदेश के विदिशा निवासी अभिजीत रघुवंशी (17) के रूप में हुई है. छात्र डॉक्टर बनने का सपना लेकर 15 दिन पहले कोटा आया था. वह विज्ञान नगर इलाके में रेजीडेंसी हॉस्टल में रह रहा था और निजी कोचिंग के जरिए नीट की तैयारी कर रहा था. सीढ़ियों से गिरने के तुरंत बाद हॉस्टल स्टाफ ने छात्र को देखा और तुरंत निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई. हॉस्टल स्टाफ ने बताया कि छात्र नहाकर अपने बाथरूम से बाहर निकला था और उसका पैर फिसल गया और वह दूसरी मंजिल की सीढ़ियों से नीचे गिर गया. जिससे उसके सिर में गंभीर चोट आई और ब्रेन डेथ हो गई। इलाज के दौरान डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने छात्र के परिजनों को सूचना दी. छात्र का शव मध्य प्रदेश से कोटा पहुंचने के बाद उसका अंतिम संस्कार किया जाएगा.।

फार्च्यूनर की डिमांड पूरी नही करने पर बारात लेकर भाग गया दूल्हा

देखते रह गए ससुराल पक्ष के लोग

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। शादी में फेरों से पहले स्टेज कार्यक्रम के बाद दूल्हे ने दुल्हन के पिता के सामने फॉर्च्यूनर कार की डिमांड रख दी। बोला कि कार नहीं मिली तो शादी नहीं करूंगा। पिता ने तुरंत प्रबंध करने में अक्षमता जाहिर की तो दूल्हा आधी बारात लेकर वहां से भाग गया। दुल्हन के पिता ने रविवार सुबह रोते हुए बताया कि गाड़ी के पैसे नहीं थे, इसलिए शादी कैंसिल कर दी। मामला झुंझुनूं जिले के गुढ़ागौड़जी थाना इलाके के एक गांव का है। यहां शनिवार रात एक शादी समारोह था। दुल्हन पक्ष की तरफ से अच्छी व्यवस्थाएं की गई थी। स्टेज पर जयमाला का कार्यक्रम चल रहा था। काफी संख्या में मेहमान आए हुए थे। यहां तक सब ठीक था लेकिन जयमाला के तुरंत बाद अचानक गहमा-गहमी हो गई। स्टेज पर जयमाला के कार्यक्रम के बाद दूल्हे नीतीश ने कार की डिमांड की और शादी कैंसिल कर भाग गया। पता चला कि दुल्हे नीतीश ने दहेज की डिमांड कर दी है। उसने शर्त रखी कि फॉर्च्युनर कार मिलेगी तब फेरे करेगा। पहले तो लगा कि नीतीश मजाक कर रहा है। लेकिन वह कार्यक्रम छोड़कर कमरे में जा बैठा। लोगों ने उसे समझाने की कोशिश की लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। अपनी जिद पर अड़ा रहा। दुल्हन के पिता ने बताया कि 3 महीने पहले पाटन (नीमकाथाना) निवासी रमेश के बेटे नीतीश के साथ बेटी की सगाई की थी। शादी की बात पक्की थी। सभी तरह का लेन-देन और खर्च हुआ था। शनिवार को दूल्हा पक्ष बारात लेकर यहां आ गए। सब कुछ ठीक था। स्टेज का कार्यक्रम चल रहा था। दुल्हन के पिता दहेज की बात बताकर रोने लगे। जयमाला हो जाने के बाद अचानक नीतीश ने कहा कि मुझे कार चाहिए। मेरे पास कार के पैसे नहीं थे। इसलिए दूल्हे ने शादी कैंसिल की और बारात के कुछ लोगों को लेकर चला गया। वह फिर वापस नहीं लौटा। मैं कपड़े सिलकर अपने परिवार का गुजारा चलाता हूं। मेरी बेटी (दुल्हन) प्राइवेट स्कूल में टीचर है और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रही है। दूल्हा नीतीश इंश्योरेंस कंपनी में प्राइवेट जॉब करता है। उसके पिता विदेश में मजदूर हैं। हालांकि आधी बारात रविवार सुबह तक गांव में ही डटी रही और दूल्हे को समझाने की कोशिशें की जाती रही। लेकिन दूल्हा नहीं लौटा। इस घटना ने विवाह समारोह को दुखद और तनावपूर्ण बना दिया। घटना के बाद वधु पक्ष गहरे सदमे में है। स्थानीय लोगों की मानें तो यह मामला दहेज प्रथा की क्रूरता को उजागर करता है, जिसमें एक सुंदर और शिक्षित लड़की का घर बसने से पहले ही उजड़ गया। ग्रामीणों और रिश्तेदारों ने इस पूरे प्रकरण की कड़ी निंदा की है। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि इस मामले में सख्त कार्रवाई हो और ऐसे लालची लोगों को सबक सिखाया जाए। गुढ़ागौड़जी थाना इंचार्ज राम मनोहर ठोलिया ने बताया कि अभी तक कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। शिकायत मिलेगी तो मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
9 जून, 2025

राजगढ-बूंगी डैम परियोजना पर किया जल-पूजन

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के पूर्व विधानसभा प्रत्याशी व भाजपा नेता राकेश जांगिड़ ने वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत तारानगर के राजगढ-बूंगी डैम पूजन पर जल पूजन किया। कार्यक्रम के दौरान विभाग के अधिकारियों, कार्मिकों ने वर्षा जल संग्रहण व संरक्षण का संकल्प लिया। भाजपा नेता जांगिड़ ने पौधारोपण करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दिलाया। इस दौरान जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिशाषी अभियंता विभाग राजेश जांगिड़, परियोजना सहायक अभियंता-रितू श्योराण, देवेंद्रसिंह, नहर विभाग अधिशासी अभियंता प्रभू सिंह, वन विभाग रेंजर सुरेंद्र सिंह राठौड़, एईएन वी नारायण, सुरेंद्र सहित विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

अणुव्रत समिति के चुनाव संपन्न, भंसाली अध्यक्ष व राठौड़ बने मंत्री

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के तेरापंथ भवन में आयोजित अणुव्रत समिति की साधारण सभा की बैठक में अध्यक्ष व मंत्री का चुनाव सर्वसम्मति से किया गया। समिति के संरक्षक सिद्दार्थ चिण्डालिया की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में चुनाव अधिकारी प्रदीप विद्यार्थी की देखरेख में सर्वसम्मति से सुमन भंसाली को अध्यक्ष व उम्मेद सिंह राठौड़ को मंत्री चुना गया। बैठक को संबोधित करते हुए चिण्डालिया ने सभी सदस्यों को अणुव्रत समिति के नियमों व अवधारणा के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अणुव्रतों का पालन संपूर्ण विश्व में शांति व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। साध्वी सरोज कुमारी ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि धर्म किसी मठ मंदिर आश्रम या मस्जिदों में नहीं होता है। धर्म उसके मानने वालों के हृदय में होता है और प्रत्येक धर्म मानव मात्र के कल्याण व उत्थान की भावना रखता है। बैठक में पृथ्वीसिंह बिदावत, भरत गौड़, मनोज जोशी, डॉ पवन महर्षि, बजरंग लाल शर्मा, शांतिलाल नाहटा, राकेश प्रजापत, अनिल श्यामसुखा, कन्हैयालाल सुराणा, पूजा पींचा, काजल नाहटा, बिंदु छाजेड़, मीनाक्षी सेठिया आदि सदस्य उपस्थित रहे। निवर्तमान अध्यक्ष पृथ्वी सिंह बिदावत ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए अणुव्रतों के प्रचार प्रसार का आह्वान किया।

सांसद के आवास पर पहुंचे कार्यकर्ता

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। कस्बे के निकटवर्ती जयपुर पिछले लम्बे समय से स्ह्व भर्ती निरस्त करने सहित तमाम मांगो को लेकर राजधानी जयपुर में धरना चल रहा हैं। बीच में युवा हुंकार रैली का बड़ा आयोजन किया गया था, तब से **राजस्थान पत्रिका** सुप्रीमो नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल जयपुर मे डेरा डाले हुए थे और नागौर स्थित आवास पर सिर्फ क्षेत्र के आमजन के लिए जनसुनवाई का कार्यक्रम रखा था। इस दौरान बड़ी संख्या में क्षेत्र व प्रदेश से युवा सांसद आवास पर पहुंचे। हालांकि प्रदेश व अन्य क्षेत्र के कार्यकर्ताओ को आने से खुद बेनीवाल ने सोशल मीडिया के माध्यम से मना किया था, उनके बावजूद आरएलपी कार्यकता, तेजा सेना, अन्य शुभचिंतक खरनाल श्री तेजाजी मंदिर दर्शन बाद नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल के आवास पर पहुँचे और नारेबाजी की। इस दौरान लोकेन्द्र मुडेल, चैनाराम बडियार, बबलू सियाग, मदन लाल सियाग, महेंद्र मुडेल, चैनाराम कस्वा, गुदाराम बडियार, टीकुराम ढाका,नरेंद्र गुलेरिया सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

हाइपरटेंशन द साइलेंट किलर विषय पर वेबीनार आयोजित

जयपुर टाइम्स

सूरतगढ(निस)।। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के एनसीडी क्लीनिक में उच्च रक्तचाप जागरुकता कैंपेन के अंतर्गत 8 जून को हाइपरटेंशन द साइलेंट किलर विषय पर वेबीनार का आयोजन किया गया। इसमें श्रीगंगानगर जिले के अलावा अनेक जिलों से लोग जुड़े और उच्च रक्तचाप के बारे में जानकारी प्राप्त की। वेबीनार में एनसीडी प्रभारी वरिष्ठ विशेषज्ञ मेडिसिन डॉक्टर शैलेंद्र सिंह ने उच्च रक्तचाप के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि हाइपरटेंशन एक साइलेंट किलर है इसके बारे में अधिकतर लोगों को पता ही नहीं होता क्योंकि इसके लक्षण बहुत बार सामने नहीं आते। इसलिए हाइपरटेंशन से अनेक बीमारियां होने की संभावना बढ़ जाती है। हमें समय रहते इलाज जरूर करवाना चाहिए और अपनी दिनचर्या में योग, व्यायाम को शामिल करते हुए ज्यादा घी, तेल, नमक का उपभोग नहीं करना चाहिए। वेबीनार में जुड़े लोगों की ओर से उच्च रक्तचाप को लेकर पूछे गए अनेक सवाल का जवाब एनसीडी प्रभारी व वरिष्ठ विशेषज्ञ मेडिसिन डॉक्टर शैलेंद्र सिंह की ओर से दिया गया। वेबीनार में अर्बन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से डाक्टर पुलकित छाबड़ा जुड़े हुए थे उन्होंने उच्च रक्तचाप के बारे में बताया कि जागरूकता के अभाव में यह दिनों दिन बढ़ रहा है हमें समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण करवाना चाहिए। डॉ छाबड़ा की ओर से भी वेबीनार में जुड़े लोगों की ओर से पूछे गए सवालों का जवाब दिया गया। हाइपरटेंशन द साइलेंट किलर वेबीनार में श्रीगंगानगर एनसीडी सेल से जिला कार्यक्रम समन्वयक अर्श इंद्रपाल सिंह बराड़ भी जुड़े इन्होंने एनसीडी सैल और एनसीडी क्लिनिक के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि एनसीडी क्लीनिक पर 30 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की हाइपरटेंशन, शुगर की जांच की जाती है और कामन कैंसर, लकवा, हृदय रोग कि स्क्रीनिंग होती है। उल्लेखनीय है कि 17 में विश्व उच्च रक्तचाप दिवस पर एमसीडी क्लिनिक सूरतगढ़ की ओर से जागरुकता कैंपेन की शुरुआत की गई जिसमें जन जागरूकता की अनेक गतिविधियां आयोजित की जा रही है। यह 16 जून तक निरंतर चलती रहेगी।

जोधपुर के कपिल पंवार व शुभम पंवार भारतीय टीम के पूर्व प्रशिक्षण शिविर में शामिल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। वर्ल्ड स्केट एशिया के तत्वावधान में तथा कोरिया रोलर स्पोर्ट्स की मेजबानी में 20वीं एशियन रोलर स्केटिंग चौंपियनशिप का आयोजन 20 से 30 जुलाई तक कोरिया में किया जा रहा है। भारतीय रोलर स्केटिंग महासंघ की ओर से प्रतियोगिता में भाग लेने वाली भारतीय टीमों के पूर्व प्रशिक्षण शिविर अलग-अलग स्थान पर उनके डिसिप्लिन के अनुसार आयोजित किया जा रहे हैं। राजस्थान स्केट एसोसिएशन के सचिव योगेंद्र खत्री ने बताया कि इसी क्रम में भारतीय इनलाइन हॉकी टीमों का तृतीय पूर्व प्रशिक्षण शिविर संगरूर (पंजाब) में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें सभी खिलाड़ियों को गहन प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस प्रशिक्षण शिविर में राजस्थान (जोधपुर) के दो खिलाड़ी कपिल पंवार व शुभम पंवार भी भाग ले रहे हैं। भारतीय टीम को प्रशिक्षण देने के लिए इटली से विशेषज्ञ विदेशी कोच निकोला डी स्टीफेनो को प्रशिक्षण देने के लिए कोच नियुक्त किया गया है। निकोला को पूर्व में भी भारतीय टीम को कोचिंग प्रदान कर चुके है। इस अवसर पर राजस्थान स्केट एसोसिएशन के अध्यक्ष कुंवर दीपक सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए भारतीय रोलर स्केटिंग महासंघ की कार्य प्रणाली को लेकर सचिवालय को विशेष धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि भारतीय रोलर स्केटिंग महासंघ की ओर से पिछले कुछ वर्षों में जो खेल एवं खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के अभूतपूर्व कार्य और डेवलपमेंट प्रोग्राम लगातार चलाए जा रहे हैं जिसके अंतर्गत देश में उपलब्ध विभिन्न श्रेष्ठ अनुभवों की सेवाएं लेना विदेश से एक्सपर्ट कोचों को बुलाकर अलग-अलग स्थान पर कोचिंग कैंप लगाना और लागतार प्रतियोगिओं में भाग लेकर सभी खिलाड़ी अपने खेल कौशल को निखार रहे है। इसी के परिणाम स्वरुप भारत के हर एक राज्यों से नए-नए खिलाड़ी उभर कर सामने आ रहे हैं। हम भारतीय रोलर स्केटिंग महासंघ की इसी पहल का अनुसरण करते हुए राजस्थान में रोलर स्केटिंग खेल को राजस्थान सरकार के साथ मिलकर यथासंभव हर तरीके से आगे बढ़ाने के लिए कृत संकल्पित है।

कृषि आदान विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों पर कृषि विभाग की कार्यवाही

खाद-बीज का सघन निरीक्षण, 543.50 क्विंटल मूंगफली, मूंग व ग्वार बीज किया सीज

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा के निर्देश पर कृषि आदान गुण नियंत्रण अभियान के तहत शनिवार को बीकानेर में कृषि उपज मंडी सहित बाजार में खाद-बीज की दुकानों पर जांच की सघन कार्यवाही की गई। कृषि विभाग कृषि आदान निरीक्षकों की टीमों ने जांच के दौरान नकली प्रतीत होने पर 543.50 क्विंटल मूंगफली, मूंग व ग्वार के बीज जब्त किए। साथ ही बीज व उर्वरक 29 नमूने लेकर जांच के लिए भेजे। अतिरिक्त निदेशक त्रिलोक कुमार जोशी के नेतृत्व में टीमें गठित कर कार्रवाई के लिए भेजा गया। कृषि आदान निरीक्षकों की टीम में संयुक्त निदेशक कृषि कैलाश चौधरी, संयुक्त निदेशक मदन लाल, उपनिदेशक कृषि जयदीप दोगने व प्रेमाराम, सहायक निदेशक सुभाष चंद्र, मीनाक्षी शर्मा, रामकिशोर मेहरा, सहायक निदेशक उद्यान मुकेश गहलोत, रघुवर दयाल, सहायक निदेशक सुरेंद्र मारू व राजूराम, कृषि अधिकारी गिरिराज, कविता गुप्ता, मीनाक्षी पंवार, ममता, सोमेश तंवर, मामराज, रमना व मेघराज शामिल रहे। अतिरिक्त निदेशक त्रिलोक कुमार जोशी ने बताया कि बीकानेर जिले में कार्यरत निरीक्षकों ने आठ खाद-बीज और उर्वरक निर्माताओं और रिटेल विक्रेताओं के यहां जांच की। टीमों ने नेशनल क्रॉप साइंस खारा, किशन लाल श्याम सुंदर करनी इंडस्ट्रियल एरिया, जयदयाल एग्रो अनाज मंडी बीकानेर, श्रीराम एग्रो एजेंसी बीकानेर, लक्ष्मी एग्री एजेंसी बीकानेर, श्रीचारभुजा एग्रो इंडस्ट्रीज बीछवाल एवं हुसनसर व केशरीचंद उदयचंद अनाज मंडी बीकानेर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अनियमितता मिलने 89.60 क्विंटल बीज मूंगफली, मूंग ग्वार के बीज सेल स्टॉप किया गया व बिक्री पर रोक लगाई गई। 18 क्विंटल उर्वरक सीज किया गया। कृषि आदान विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों पर ताबड़तोड़ कार्यवाही के बाद अतिरिक्त निदेशक कृषि विस्तार त्रिलोक कुमार जोशी ने ली कृषि आदान निरीक्षकों की बैठक ली व आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जोशी ने निर्देश दिए कि कृषि आदान निरीक्षक सजग रहकर निरन्तर अपने क्षेत्र में प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करें। सहायक निदेशक कृषि अपने क्षेत्राधिकारी में प्रभावी निरीक्षण करते हुए कृषि आदान गुणवत्ता सुनिश्चित करवाने के क्रम में प्रभावी कार्यवाही करें।

मनुष्य का अहंकार ही उसके पतन का कारण- राधारमण

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के जम्मड़ा कुआं के पास रामगढ़िया परिवार की ओर से आयोजित सप्त दिवसीय श्री मद्भागवत कथा में व्यास पीठ पर विराजित कथावाचक राधारमण महाराज ने कहा कि मनुष्य में ज्ञान, बुद्धि, शक्ति, पद, प्रतिष्ठा, आर्थिक समृद्धि का जब भी अभिमान हो जाता है तो वहीं से उसके पतन का कारण बन जाता है। राजा बली को भी अपनी शक्ति, साम्राज्य विशालता का घमंड हो गया था तो स्वयं नारायण वामन स्वरूप में आए व तीन कदमों में पूरी धरती नाप कर उसके घमंड को चूर किया तत्पश्चात उसका का वध भी किया। कथा में निरंतर श्रोताओं की संख्या बढ़ती जा रही है। रामगढ़िया परिवार के चम्पालाल, सम्पत मल, सुशील कुमार, कमल कुमार, गोपीराम, अशोक कुमार, हरिप्रसाद आदि ने समस्त आगंतुकों का स्वागत किया। इस अवसर पर नंदलाल जोशी, मुखराम नाथोलिया, गजानंद जांगिड़, मांगीलाल नाथोलिया, गौरीशंकर कंदोई, किशनलाल जाड़ीवाल, बेगराज जांगिड़, बनवारी लाल जांगिड़, लालचंद दर्जी, सुभाष जांगिड़, संतोष कुमार जांगिड़, बींझराज नाई, सज्जन लाल जांगिड़, जेठाराम सुथार, मुखराम नाथोलिया, विष्णुदत्त जाड़ीवाल, अशोक कुमार चोटिया, नंदलाल देरासरी, मांगतमल सारस्वत, सुशील कुमार जांगिड़, गजानंद जांगिड़, लाभूराम जाट, गणेशनाथ सिद्ध, बनवारीलाल नाई, सम्पत राम जांगिड़ सहित बड़ी संख्या में श्रोता उपस्थित रहे।

ईंट भट्ठों पर श्रमिकों को किया उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूक

जयपुर टाइम्स

सूरतगढ़(निस)।। मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी के निर्देशानुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के एनसीडी क्लिनिक की ओर से चलाए जा रहे उच्च रक्तचाप जागरुकता कैंपेन के तहत गांव भगवानसर में कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें ईट भट्ठों पर काम करने वाले लोगों को उच्च रक्तचाप के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यशाला में एनसीडी काउंसलर दीपक शर्मा ने कहा कि समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण करवाना चाहिए और अगर किसी को उच्च रक्तचाप होता है तो अपनी दिनचर्या और खान-पान में बदलाव करके इसे नियंत्रित किया जा सकता है। इस अवसर पर एनसीडी डाटा एंट्री ऑपरेटर सूरज सेतिया ने कहा कि हाइपरटेंशन के कारण अनेक बीमारियां हो सकती है। इसमें प्रमुख है लकवा ब्रेन हेमरेज किडनी खराब होना हृदय रोग नजर का कमजोर होना इसलिए हमें हाइपरटेंशन को हल्के में नहीं लेना चाहिए। ईट भट्टे पर काम करने वाली लेबर को जानकारी देते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी मुकेश वर्मा ने कहा कि घी तेल और नमक का सेवन कम से काम करना चाहिए इसके अलावा तनाव नहीं लेना चाहिए तनाव के कारण उच्च रक्तचाप बढ़ जाता है इसलिए हमें तनाव मुक्त जीवन जीना चाहिए। उल्लेखनीय है कि कार्यशाला से पहले गांव भगवानसर में बीपी जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसके साथ-साथ उच्च रक्तचाप जागरुकता कैंपेन के अंतर्गत ढाबा झालर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और बीरमाना के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भी बीपी जांच शिविर लगा कर गग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

11 बछड़ों का किया बधियाकरण

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। एनएच 58 पर स्थित बजरंगी गौ चिकित्सालय की ओर से गोवंश के नस्ल सुधार अभियान के तहत जसवंतगढ़ के श्री कृष्ण गोपाल गौशाला में 11 बछड़ों का बधियाकरण किया गया। बजरंगी गो चिकित्सालय के बबलू बजरंगी ने बताया कि जसवंतगढ़ के तापड़िया परिवार के भामाशाह श्रीराम तापड़िया के गोवंश नस्ल सुधार के संकल्प की सिद्धि अभियान की तहत 1 घंटे में 11 बछड़ों का विशेषज्ञ डॉक्टर व कंपाउंडर की टीम के साथ बधियाकरण किया गया। डॉक्टर ने बताया कि इस प्रकार के अभियान में बिना किसी चिरा फाड़ा के कम उम्र के बछड़ों का बधियाकरण किया जा सकता है। ऐसे बधियाकरण से उस बछड़े को भी फायदा होता है और जो आवारा सांड सड़क पर उत्तेजना से आपस में लड़ते जिससे आए दिन दुर्घटनाएं होती है, उसमें भी रोकथाम होगी। जितेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि इस प्रकार के अभियान आने वाले समय में लगातार जारी रखा जाएगा। इस अवसर पर किशोर दास स्वामी, छोटू राम सुथार, संदीप जांगिड़, भरत राठौड़, किशन सैन, पवन भाटीवाड़ा, विनोद गुर्जर, मुकेश स्वामी, अमित अनेक लोग मौजूद रहे।

शहर के अन्दरूनी क्षेत्रों में आंशिक बाधित रहेगी जलापूर्ति

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निस)। । गर्मी के मद्देनजर सुचारू पेयजल आपूर्ति के लिए शोभासर फिल्टर प्लांट स्थित रॉ-वाटर पंपिंग स्टेशन व स्वच्छ जल पंपिंग स्टेशन पर स्थापित मोटर पंप की सामयिक मरम्मत व अनुरक्षण का कार्य सोमवार को किया जाना प्रस्तावित है। इसके मद्देनजर सोमवार को सुबह 10 से सायं 6 बजे तक बीकानेर शहर के शोभासर जलाशय से लाभान्वित क्षेत्र नयाशहर जोन, नत्थूसर जोन, लक्ष्मीनाथ मंदिर जोन, मुक्ता प्रसाद नगर जोन में जलापूर्ति आंशिक रूप से बाधित रहेगी।

सुजानगढ़ के योगाचार्यों ने पटियाला शिविर में भाग लिया

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। पंजाब के पटियाला में 5वें राष्ट्रीय योगासन जज प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन हुआ। नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान योगासन भारत के महासचिव योगाचार्य डॉ. जयदीप आर्य के मार्गदर्शन में योग प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें 26 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के कुल 180 प्रशिक्षु निर्णायकों ने भाग लिया। जिसमें पूरे राजस्थान से 18 और चूरू जिले से 5 और सुजानगढ़ से कुलदीप सैन ओर सुमित्रा जोगी ने प्रशिक्षण पूर्ण किया है। जिससे कुलदीप ओर सुमित्रा योगासन की होने वाली राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका निभाएंगे। पूरे भारत से दस विशेषज्ञ संसाधन व्यक्ति प्रशिक्षण सत्रों के दौरान अपने बहुमूल्य ज्ञान और विशेषज्ञता का योगदान दे रहे हैं। इसी प्रकार राजस्थान से अंकित महला, कविता, मनोज, ऋषिका व्यास, अविनाश गजराज, रामकुमारी, रामेश्वरलाल, कंवरीलाल, जितेंद्र गहलोत, प्रियंका, अश्विनीसिंह, प्रिया, प्रियंका कुलहरी ने भी भाग लिया।

जय सुजला मार्च 11 को, सौंपेगे 12 सूत्रीय मांग पत्र

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सुजला महा सत्याग्रह की ओर से 11 जून को सुबह 10 बजे लाडनूं बस स्टैंड पर इकट्ठा होकर जय सुजला मार्च करते हुए एडीएम, एसडीएम को मुख्यमंत्री के नाम सुजला जिला सहित सुविकसित सुजला बनाने के लिए 12 सूत्री ज्ञापन सौंपा जाएगा। सुजला महा सत्याग्रह के संयोजक श्रीराम भामा ने युवा गोपाल मोयल को जय सुजला मार्च का प्रभारी व समीर खान खोखर को सह प्रभारी नियुक्त किया। सुजला जिला बनाओ संघर्ष समिति के राजू सिंह भाटी ने कहा कि जिले के हक की आवाज उठाने के साथ साथ अन्य जन समस्याओं के समाधान में भी सक्रिय योगदान देने की जरूरत है। पुराने बस स्टैंड के व्यापारियों की सुनवाई संवेदनशीलता से हो, जगह जगह फ्री पार्किंग पॉइंट बनें, शहर के सभी तरफ आने जाने के लिए नए टेंपो रूट बनें आदि मुद्दों के लिए हस्ताक्षर अभियान भी शुरू किया जाएगा। लाडनूं बस स्टैंड विश्रामालय के पास हुई मीटिंग में रामसिंह भाटी, इलियास खान, गणेश माली, विजय पाल श्योराण, अशोक कुमार टाक आदि शामिल हुए।

घंटाघर के चारों ओर लगेंगे फव्वारे

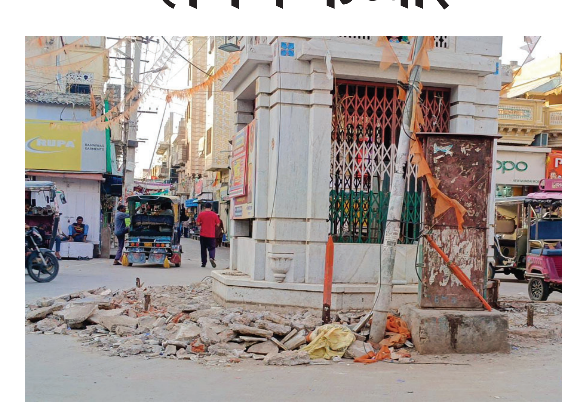

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। नगरपरिषद की ओर से घंटाघर का सौंदर्यीकरण करवाया जाएगा। इसके लिए घंटाघर के चारों और लगी हुई रैलिंग हटा दी गई है। सभापति निलोफर गौरी ने बताया कि शहर के मुख्य बाजारों में स्थित घंटाघर के सौंदर्यीकरण के लिए इसके चारों और 12-14 फव्वारे लगाए जायेंगे और लाईटिंग की व्यवस्था की जाएगी। ताकि सुजानगढ़ की नाक कहा जाने वाले घंटाघर और ज्यादा खूबसूरत लग सके।

मोतियाबिंद जांच व लैंस प्रत्यारोपण शिविर में 270 मरीजों की जांच, 80 मरीजों का ऑपरेशन के लिए चयन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के लायंस क्लब सरदारशहर डायमंड व अंधता निवारण समिति जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में रविवार को निशुल्क मोतियाबिंद जांच व लैंस प्रत्यारोपण शिविर कुसुम बोथरा पत्नी महेन्द्र बोथरा की प्रथम पुण्य तिथि पर बोथरा परिवार दिल्ली, कोलकाता, इंदौर प्रवासी के स्थानीय सौजन्य से अर्जुन क्लब राजकीय चिकित्सालय में लगाया गया। शिविर का शुभारंभ महेन्द्र बोथरा, अंकित बोथरा, प्रीति बोथरा, प्रकाश कुण्डलिया ने फीता काटकर किया। शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर के नेत्ररोग विशेषज्ञ डॉ शांभवी ने 270 मरीजों की जांचकर 80 मरीजों को ऑपरेशन के लिए चयन किया। मीडिया प्रभारी अंजना भोजक ने बताया कि सभी ऑपरेशन के लिए चयन मरीजों को बस से जयपुर ले जाया गया। मई माह कैंप के ऑपरेशन किये 83 मरीजों को चश्मे भेंट किये गये। शिविर को सफल बनाने में लायन सुशील भोजक, लायन अनिल गोयल, आसकरण सोनी, मुबारक तुगलक, डॉ पूनमचंद भाटी, घनश्याम बोचीवाल, महेंद्र निर्वाण, किशोर भारद्वाज, राशिद बेहलीम, देवचंद सोनी, राजकुमार कंदोई, सुभाष जांगिड, कैलाश भाटी, विपिन गोयल, फूसदास स्वामी, सुमन कंवर, गंगाराम सुथार, गणेशदास स्वामी, अयूब आगीवान आदि ने सहयोग किया।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
9 जून, 2025

सांसद हनुमान बेनीवाल की जनसुनवाई में उमड़ा हजारों का सैलाब

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के सुप्रीमों व नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल ने रविवार को अपने नागौर स्थित जन - सुनवाई आवास पर जन सुनवाई की। सांसद ने कहा कि जन समस्याओं का निस्तारण करवाना उनकी पहली प्राथमिकता है। लोगो की समस्याओं को सुनने से पहले बेनीवाल ने उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि वो जयपुर के शहीद स्मारक पर लगातार धरने पर बैठे हैं और उनका मकसद राजस्थान के युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करना है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी पर जहां आरोप लगाए वहीं कांग्रेस को भी जमकर आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि आज राजस्थान असुरक्षित है। बजरी माफिया सड़को पर तांडव मचा रहे हैं और जघन्य अपराध कारित हो रहे हैं। सांसद ने कहा कि पेपर लीक के खिलाफ चल रहा है आंदोलन इस बात को इंगित कर रहा है कि जिस तरह पंजाब के किसानों ने किसान आंदोलन का नेतृत्व किया उसी तरह देश के बेरोजगार युवाओं का आंदोलन राजस्थान का युवा करेगा। सांसद हनुमान बेनीवाल ने नागौर व डीडवाना -कुचामन जिले के नागरिकों की समस्याओं को विस्तार से सुना,जहां विभिन्न समस्याओं के निस्तारण के लिए सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दूरभाष पर निर्देश दिए वहीं राज्य स्तरीय व केंद्र से जुड़ी समस्याओं का सक्षम स्तर पर वार्ता करके निस्तारण करवाने का भरोसा दिलाया।

बिगड़ती कानून व्यवस्था पर प्रहार

सांसद हनुमान बेनीवाल ने नागौर जिले की बिगड़ती कानून व्यवस्था को लेकर पुलिस पर तंज कसा और कहा जिले के कप्तान कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने व अपराध रोकने में नाकाम नजर आ रहे है। सांसद बेनीवाल की जन सुनवाई में विद्युत व पेयजल के अलावा सड़क की मरम्मत, नई सड़को के निर्माण व अन्य कई सार्वजनिक समस्या आई। जोधपुर, सीकर, झुंझुनूं, फलोदी, बाड़मेर व बीकानेर साहिर कई जिलों के लोग भी समस्याएं लेकर पहुंचे। इस दौरान वीर तेजा सेवा के प्रदेश अध्यक्ष श्रीराम बिजारणिया सुरेंद्र गोदारा टिकुराम ढाका नरेंद्र गुलरिया लोकेंद्र मुंडेल चेनाराम बडियार बबलू सियाग मदनलाल सियाग महेंद्र मुडेल चेनाराम कसवा गुदराम बडियार सहित हजारों लोग उपस्थित रहे।

पेयजल समस्या का निस्तारण करे अधिकारी

सांसद हनुमान बेनीवाल ने कहा कि भीषण गर्मी का दौर है ऐसे में उन्होंने पीएचईडी व नहरी विभाग के अभियंताओं को फील्ड में रहकर संसदीय क्षेत्र में पेयजल समस्या का निस्तारण करने के निर्देश दिए। सांसद हनुमान बेनीवाल ने डीडवाना व नागौर के अधीक्षण अभियंताओं को बिजली की मेंटिनेश का कार्य गुणवत्ता के साथ करने के निर्देश दिए वहीं केंद्र की मदद से चल रहे विद्युतीकरण के कार्य को तेजी से करने के निर्देश दिए,उन्होंने आंधी -तूफान में पोल गिरने व विद्युत आपूर्ति प्रभावित होने से जुड़ी शिकायतों का भी समयबद्ध निस्तारण करने के निर्देश दिए। सांसद हनुमान बेनीवाल ने नागौर व डीडवाना - कुचामन जिले के कलेक्टरों को दूरभाष पर किसानों को बुवाई के समय डीएपी की कमी नहीं आए और वितरण सिस्टम सही हो इसकी सुनिश्चिता की जाए ।

उप चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न, परिणाम आज

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। लक्ष्मणगढ़ शहर के वार्ड नंबर 9 के पार्षद उपचुनाव में रविवार को शांतिपूर्ण रूप से सम्पन्न हुआ। मतदान केंद्र एन के जाजोदिया विद्यालय में 3 बूथों पर सुबह 7 बजे से मतदान प्रारंभ हुआ जो कि शाम को 5 बजे तक चला और 5 बजे ई वी एम मशीन को बंद कर दिया गया। तेज गर्मी और धूप के चलते मतदाताओं की भीड़ सुबह के समय मतदान केंद्र पर ज्यादा नजर आई जो कि दोपहर होते होते कम होती गई वही शाम को धूप ढलने के बाद फिर से मतदाताओं में मतदान के लिए जोश दिखाई दिया जिसका असर मतदान प्रतिशत पर भी नजर आया। वार्ड नंबर 9 के पार्षद उपचुनाव तीन प्रत्याशियों ने अपना भाग्य आजमाया है जिनमें सरिता शर्मा भाजपा से वंदना शर्मा कांग्रेस से और पूनम वर्मा निर्दलीय के रूप में मैदान में है।जानकारी के अनुसार वार्ड संख्या 9 में कुल मतों की संख्या 1467 है जिनमें से कुल मतदान हुआ। जानकारी के अनुसार कुल 1467 मतों में 982 मतदान हुआ। मतदान के दौरान प्रशाशन की व्यवस्थाएं भी सराहनीय रही जिसके चलते कोई अप्रिय घटना देखने को नहीं मिली। मतदान के पश्चात भाजपा और कांग्रेस दोनों पार्टियों ने अपनी -अपनी जीत के दावे किए है। चुनावों का परिणाम सोमवार को मतों की गिनती के पश्चात घोषित किया जाएगा।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा जाँच शिविर आयोजित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजस्थान पेंशनर समाज और सीकर के टीबड़ा आई हॉस्पिटल एवं रेटिना रिसर्च सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में पेंशनर फूलचंद किरोड़िया के सौजन्य से जिला पेंशनर कल्याण केन्द्र में रविवार को नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में नेत्र चिकित्सा विषेषज्ञ डॉ. नन्द किशोर टीबड़ा, महेन्द्र जाखड़, सुरेन्द्र रेवाड़, विकास चौधरी सहित उनकी टीम के सदस्यों ने रोगियों की आधुनिक मशीनों से जाँच कर उचित परामर्श देकर आवश्यक दवाईयों का नि:शुल्क वितरण किया गया। पेंशनर समाज के जिलाध्यक्ष बिरजू सिंह राठौड़ ने बताया कि शिविर में 74 रोगी लाभान्वित हुए। इस अवसर पर नेत्र चिकित्सक डॉ. अनिल चावला, नगर परिषद के पूर्व सभापति गोविन्द महनसरिया, पूर्व एटीईओ रामस्वरूप शर्मा, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश तंवर, उपाध्यक्ष हरिसिंह, जिला सचिव पूर्णमल सोनी, संयुक्त सचिव शेर सिंह चौहान, फूलचंद किरोड़िया व बाबूलाल शर्मा ने मार्ल्यापण कर व साफा पहनाकर चिकित्सकों का स्वागत किया। इस अवसर पर पेंशनर लक्ष्मण सिंह बीका, ओमप्रकाश, स्वामी, घनश्याम शर्मा, जगमालसिंह टकणेत, महावीर प्रसाद लखेरा, सत्येन्द्र कुमार शर्मा व अलायन्स क्लब के भँवरलाल जांगिड़ व शंकरलाल सैनी ने शिविर में सहयोगी भूमिका निभाई। इस अवसर पर डॉ. नन्द किशोर टीबड़ा व पूर्व सभापति गोविन्द महनसरिया ने पेंशनर समाज को दो ए.सी. देने की घोषणा की।

नव चयनित आईएएस डॉ ज्योति का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। बहादुरवास गांव में शनिवार को बालाजी मंदिर पर दादरवाल परिवार की ओर से कमालसर निवासी डॉ ज्योति, नव चयनित आईएएस का स्वागत सम्मान समारोह आयोजित किया। हरिराम दादरवाल ने बताया कि समाज में खुशी की लहर है, डॉ ज्योति ने झुंझुनूं जिले को गौरवान्वित किया है, समस्त रिश्तेदारों के बच्चे भी प्रेरित हो रहे हैं। डॉ ज्योति को शॉल, साफा पहनाकर माल्यार्पण किया गया और मिठाई खिला कर बधाई दी। इस अवसर पर डॉ ज्योति के पिता रामकरण वरिष्ठ अध्यापक और माता कौशल्या को भी माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। दादरवाल परिवार की समस्त महिलाओं ने अपनी प्रसन्नता जाहिर करते हुए डॉ ज्योति को माल्यार्पण कर स्वागत सम्मान किया। इस अवसर पर सांवरमल, दयानंद, महिपाल सिंह, वीरेंद्र सिंह, घनश्याम आर्य, सरपंच सुरेशजी सूंडा समेत लोग शामिल रहे। डॉ ज्योति ने उपस्थित समस्त वरिष्ठ जनों का आभार व्यक्त किया और विद्यार्थियों को अपने अध्ययन में मन लगाकर कठोर परिश्रम करने और मोबाइल से दूर रहते हुए अपने कैरियर निर्माण की कोशिश करने की प्रेरणा दी। हरिराम दादरवाल ने सभी को धन्यवाद दिया।

निशुल्क चिकित्सा शिविर में 170 मरीजों की जांच

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के प्रजापति भवन में प्रजापति नवयुवक मंडल की ओर से निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मरीजों के श्वष्टत्र, बल्ड टेस्ट, बीपी और शुगर की जांच की गई। शिविर का शुभारंभ मां श्रीयादे और महाराज प्रजापति दक्ष के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। शिविर संयोजक योगेश्वर किरोड़ीवाल ने बताया कि शहर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों ने स्वास्थ्य जांच करवाई। जीवन रेखा हॉस्पिटल चूरू के वरिष्ठ फिजिशियन डॉ मनोहर भाटिया के नेतृत्व में विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने सेवाएं दीं। इनमें हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ आनिंदय मंडल, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ राधेश्याम यादव, मूत्र रोग विशेषज्ञ डॉ रवि गौड़ और फिजियोथैरेपिस्ट डॉ श्रीराम बुंदेला शामिल रहे। कार्यक्रम में समाज के संरक्षक हुकमाराम भाटीवाल, बुद्धाराम मारोठिया, जगदीश प्रसाद सिरस्वा सहित कई लोग उपस्थित रहे। शिविर में कुल 170 लोगों ने नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श प्राप्त किया। समापन पर प्रजापति समाज के सदस्यों ने सभी चिकित्सकों को प्रतीक चिन्ह और माला पहनाकर सम्मानित किया।

बाईपास रोड़ को जनहित में बंद नहीं करने देंगे : विधायक मेघवाल

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ(नि.सं.)। रेलवे स्टेशन के सामने की रेलवे की जमीन पर बनी सड़क पर रेलवे की ओर से दीवार बनाया जाना प्रस्तावित है, अगर ऐसा होता है, तो सुजानगढ़ की जनता के लिए काफी बड़ी समस्या हो जाएगी। जय निवास पर प्रेस वार्ता में बोलते हुए विधायक मनोज मेघवाल ने कहा कि रेलवे से जब सरकार मुकदमा हार चुकी और उसके बाद सरकार को जनहित में दुबारा अपील करनी चाहिए थी। क्योंकि जनहित के मुद्दों पर सरकार को जनता के साथ खड़ा होकर जनता का साथ देना चाहिए। विधायक ने कहा कि इस मामले में सरकार रेलवे को खुद आमंत्रित करती नजर आ रही है कि आओ और हमारी सड़क बंद कर दो। विधायक मनोज मेघवाल ने कहा कि अगर ऐसा हो गया, तो सुजानगढ़ शहर में प्रवेश बंद हो जाएगा, इसलिए सरकार को जल्द से जल्द सम्बंधित न्यायालय में अपील करे। मेघवाल ने कहा कि अधिकारियों से मिलकर इस मामले से अवगत करवाते हुए जनहित में इस रास्ते को सुचारू रूप से संचालित रखने की मांग की जाएगी, ताकि शहर का स्वरूप नहीं बिगड़े। मेघवाल ने कहा कि सरकार को भी अवगत करवाकर जनहित में आगे अपील करने के लिए कहा जाएगी, क्योंकि विभागों की लड़ाई में जनता पिस रही है और जनता को परेशान नहीं होने दिया जा सकता। इस अवसर पर ब्लॉक अध्यक्ष प्रदीप तोदी, रामावतार शर्मा, इदरीश गौरी भी मौजूद रहे।

रेलवे को जमीन की जरूरत नजर नहीं आती

इस मामले को लेकर सभापति निलोफर गौरी ने कहा है कि राज्य सरकार हो या सरकारी विभाग सभी जनता के लिए काम करते हैं, इसलिए जनहित में समाधान सरकार को निकालना चाहिए। गौरी ने कहा कि नया बस स्टैंड चालू रहना चाहिये। लेकिन राज्य सरकार की कोई तो अदृश्य शक्ति है, जो जनहित की भावना को आहत कर रही है और पिछले दो महीनों से लाडनू बस स्टैंड की बसों को बाईपास से चालू करके पुराने बस स्टैंड को पूरा बंद कर दिया गया। जनहित को देखते हुए प्रशासन और राजस्थान सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता है कि जनता को और ज्यादा परेशान करने की बजाय समस्या का समुचित समाधान निकाले। जहां तक रेलवे का मुद्दा है, तो पिछले कई दशकों से रेलवे स्टेशन आराम से संचालित हो रहा है। ऐसे में रेलवे को कोई अतिरिक्त जमीन की आवश्यकता हो, ऐसी जरूरत दूर-दूर तक नजर नहीं आती।

सड़क हादसे में युवक की मौत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। गत रात्रि करीब 8 बजे छापर रोड़ स्थित पुराने डीटीओ ऑफिस के पास मोटरसाइकिल ऊंटगाड़े से टकरा जाने से एक 16 वर्षीय किशोर की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार सुजानगढ़ के डेंटिस्ट डॉ शशिकांत सोनी छापर की ओर से सुजानगढ़ आ रहे थे, कि सड़क किनारे एक युवक गंभीर घायल अवस्था में पड़ा था। उन्होंने तुरंत अपनी निजी गाड़ी से सुजानगढ़ अस्पताल रवाना हुए और टीम हारे का सहारा संयोजक श्याम स्वर्णकार को सूचित किया। इमरजेंसी मे भर्ती कराने पर चिकित्सक ने किशोर को मृत घोषित कर दिया। जिसकी पहचान विराट (16) पुत्र बाबूलाल माली, निवासी बाई पास रोड़, सुजानगढ़ के रूप में हुई। सूचना पर कोतवाली थाना सुजानगढ़ के एएसआई तेजाराम अस्पताल और मौके पर पहुंचे और मामले की जानकारी ली। रविवार दिन में परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया।

चूरू में पल्स ऑक्सी लैब का भव्य शुभारम्भ

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय रोडवेज बस स्टैण्ड के पास रविवार को पल्स ऑक्सी लैब का भव्य शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि एसीएमएचओ डॉ. अहसान गौरी व सेवानिवृत सहायक उप निदेशक महावीर पुनिया ने फीता काटकर किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रेसा वीपी के प्रदेशाध्यक्ष भँवरलाल गुर्जर, रेसा वीपी के जिलाध्यक्ष विजय पाल धुंवा, शिक्षक संघ शेखावत के प्रदेश उपाध्यक्ष भँवरलाल कस्वां, शिक्षक संघ राष्ट्रीय के प्रदेश उपाध्यक्ष कृष्ण कुमार सैनी व महासंघ के जिलाध्यक्ष रिछपाल सिंह चारण रहे। इस दौरान आरिफ खान, फुलेसिंह बुरड़क, महेश सोनी, प्रिंसिपल राजवीर सिंह राठौड़, रमेश कुमार जांगिड़, डॉ. मंजीत बैंसला, संजय जांगिड़, आवेश खान, पवन सिंह भाटी, मुस्ताक खान, फुलाराम गुर्जर, भारती गुर्जर, सुशीला, श्रीचंद कस्वां, राजेश कस्वां, शीशराम सहारण, रघुवीर सहारण, श्रवण गुर्जर, लक्ष्मण दान चारण, ज्ञानाराम, रामप्रसाद, राजकुमार खीचड़ सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। पल्स ऑक्सी लैब के संचालक पंकज गुर्जर व सुनील जांगिड़ ने बताया कि लैब में उचित दर पर सभी प्रकार की जाँच की जाएगी।

चूरू में रोजाना तीन शो में फूले फिल्म का प्रदर्शन, युवाओं व महिलाओं में दिखा उत्साह

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय टाउन हॉल में जिला ओबीसी वेलफेयर सोसायटी चूरू व राजस्थान शिक्षक संघ अंबेडकर तहसील इकाई चूरू के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को फूले फिल्म का प्रदर्शन किया गया। सोसायटी के पदाधिकारियों ने बताया कि इस फिल्म का प्रदर्शन 8 जून से 10 जून तक रोजाना तीन शो में किया जायेगा। उन्होंने बताया कि प्रथम शो प्रातः 10 से 12, दूसरा दोपहर 01 से 03 और तीसरा शो शाम 5 से 07 बजे तक दिखाया जाएगा। फिल्म का उद्घाटन सर्व समाज के गणमान्य जनों ने फीता काटकर व कंप्यूटर का बटन दबाकर किया। फिल्म देखने के प्रति लोगों में जबरदस्त उत्साह था। चूरू में लोगों में ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले से समाज में किए गए सुधारों के प्रति लोगों के चेहरे पर आश्चर्य का भाव नजर आया। प्रथम शो में महिलाओं और युवाओं में काफी उत्साह देखने को मिला। पदाधिकारियों ने बताया कि यह फिल्म सोसायटी की ओर से निशुल्क दिखाई जा रही है। इस अवसर पर सोसाइटी के मुख्य संरक्षक गिरधारी लाल तंवर, अध्यक्ष रामेश्वर प्रजापति, भाजपा जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा, एडवोकेट आसाराम सैनी, एडवोकेट आनंद, महासचिव चंद्रमोहन सैनी, शिक्षकसंघ अंबेडकर के प्रदेश उपाध्यक्ष शीशराम माहिच, कर्मचारी महासंघ के जिलाध्यक्ष रिछपाल सिंह चारण, भाजपा जिला उपाध्यक्ष नरेंद्र कंवल, पूर्व उप जिला प्रमुख सोहनलाल मेघवाल, पूर्व भाजपा नगर अध्यक्ष राधेश्याम सैनी, पूर्व कांग्रेस नगर अध्यक्ष लालचंद सैनी, विद्याधर मेघवाल, दीनदयाल सैनी, राधेश्याम स्वामी, भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष अजीत मेघवाल, बार अध्यक्ष नरेंद्र सैनी, ओबीसी वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. अशोक जांगिड़, अंबेडकर संघ के मोहनलाल अर्जुन, ओंकारमल सैनी, चानणमल सैनी, ताराचंद खेड़ीवाल, श्रीकृष्ण सैनी, बृजलाल मीणा, हंसराज साहवा, बैजूलाल जांगिड़, हरिकिशन जांगिड़, भंवरलाल सैनी, गणेश गहनोलिया, राजकुमार चिड़दिया, कन्हैयालाल प्रजापत, सैनी समाज कर्मचारी व अधिकारी सेवा संस्थान के जिलाध्यक्ष विनोद सैनी, भागीरथ सैनी, मुन्नीराम शीला, सांवत राम बरोड, चंद्रप्रकाश सैनी, जुगल सैनी, बजरंगलाल, धर्मेंद्र सैनी, महेंद्र सेवलिया, प्रभु दयाल सिंगोदिया, ताराचंद सैनी, गुलजारीलाल सैनी, गणेशाराम सैनी, ओम प्रकाश सैनी, ताराचंद सैनी, एडवोकेट राजेंद्र खंडवा, सांवरमल सैनी, डीके सैनी, महेंद्र सैनी सहित बड़ी संख्या में शिक्षक संघ अंबेडकर के पदाधिकारी और सर्वसमाज के लोग उपस्थित रहे।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।